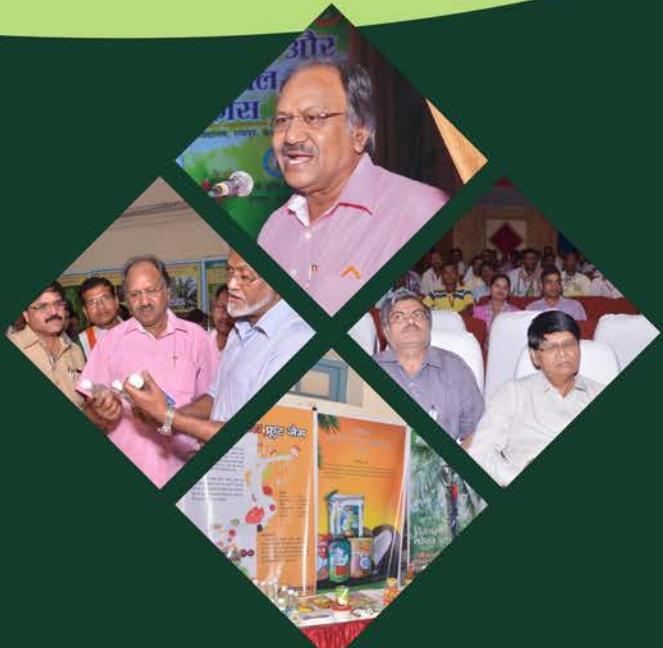


भारतीय नारियल पत्रिका



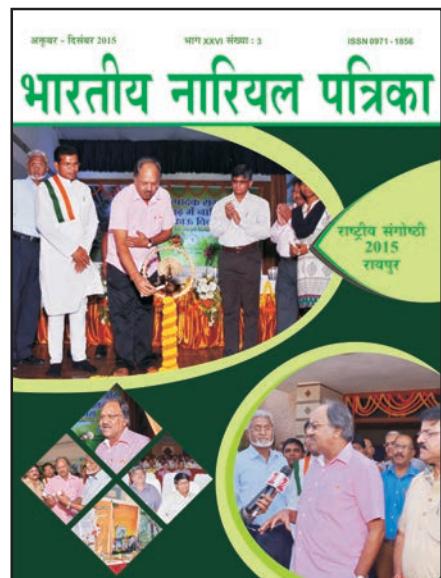
राष्ट्रीय संगोष्ठी
2015
रायपुर





इस अंक में

अध्यक्ष की कलम से	2
फ्लेवर्ड नारियल दूध-सर्वोत्कृष्ट नवोत्पाद.....	4
गीतु ए एस, ज्योति के नायर	
नारियल ज्यूस आज़माने के लिए तैयार पेय	7
आनी ईप्पन, अनीटा जोय	
बेहतर आमदनी के लिए नारियल चिप्स	10
ज्योति के नायर, अश्विनी अब्रहाम	
खुम्बी, नारियल की सर्वोत्तम मित्र फसल	13
एस.सी.साहू, के.बी.महापत्रा और एच.पी.महेश्वरप्पा	
चीन के हाइनान द्वीप से नारियल का नज़ारा	17
प्रमोद पी.कुरियन, डी.एस.रश्मि व अरुण पॉल	
एफओसीटी प्रशिक्षण प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ी में-एक झलक	21
बिलीच दान बाड़ी	
गेंडा भृंग कीट का प्रबंधन	23
जोसफ राजकुमार ए., चंद्रिका मोहन और कृष्णकुमार वी.	



नारियल ज्यूस-बाज़ार में उच्च संभावनाओं के साथ उभरता नया सितारा

प्रिय नारियल किसानों,

हमारे देश की दीर्घकालीन फसलों में खेतीगत क्षेत्र के हिसाब से नारियल दूसरे स्थान पर है। भारत में 21.4 लाख हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती होती है। उत्पादन की दृष्टि से भी आम के बाद दूसरे स्थान पर नारियल है। भारत नारियल के उत्पादन और उत्पादकता में विश्व का अगुआ देश है। अन्य फलदार फसलों की तुड़ाई साल में मात्र एक बार होने के कारण प्रसंस्करण उद्योग का काफी अधिक विकास हो गया है। ज्यूस, स्कॉर्पियन, जैम, जेली, मेवा आदि के रूप में फल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में किया जाता है और बाज़ार में ये पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध भी होते हैं। भारत की अन्य फलदार फसलों के लिए भी प्रसंस्कृत उद्योग का विकास होता जा रहा है। नारियल की तुड़ाई मार्सिक तौर पर की जाती है और साल भर नारियल उपलब्ध भी होते हैं, फिर भी नारियल उत्पादन में अग्रणी देश होने के बावजूद भी हमने नारियल ज्यूस का उत्पादन और विपणन अभी तक शुरू नहीं किया है। डाब पानी प्रसंस्कृत और ताज़ा रूप में भारतीय बाज़ारों में उपलब्ध है किंतु इसे नारियल ज्यूस नहीं कहा जा सकता। किसी फल की गरी के तरल गूदे का ज्यूस कहा जाता है। इसप्रकार से नारियल गरी के तरल गूदे को नारियल ज्यूस कहना चाहिए। कई सदियों से नारियल दूध हमारे पाक व्यंजनों का हिस्सा है। किंतु हमने नारियल ज्यूस के रूप में नारियल दूध के उपयोग के बारे में कभी नहीं सोचा है। खाद्य व्यंजनों, मिष्ठानों और स्नैक्सों का स्वाद बढ़ाने वाली चीज़ के रूप में ही हम इसका उपयोग करते हैं। दूसरे कई देश जो नारियल के खेतीगत क्षेत्र और उत्पादन में भारत से कोसों दूर पीछे हैं, वसा की विविध सांद्रता के साथ विविध रूपों में नारियल दूध का उत्पादन और विपणन कर रहे हैं। चीन का नारियल ज्यूस इसका अच्छा दृष्टांत है। चीन में नारियल के अधीन मात्र 28,000 हेक्टर क्षेत्र उपलब्ध है। वे बड़ी मात्रा में नारियल ज्यूस का उत्पादन कर रहे हैं और भारत में इसका आयात किया जाता है। हमारे देश में नारियल की खेती 20 जिलों में 25,000 हेक्टर से अधिक क्षेत्र में और 40 जिलों में 10,000 हेक्टर से अधिक क्षेत्र में हो रही है। किंतु हमने नारियल ज्यूस का उत्पादन करने और नारियल किसानों की आय में वृद्धि लाने की इसकी क्षमताओं के बारे में कभी सोचा भी नहीं है।

यूएसए के मशहूर पोषण विशेषज्ञ डॉ.आक्स ने हाल में नारियल दूध और माँ के दूध के पौष्टिक पहलुओं पर तुलनात्मक अध्ययन प्रकाशित किया। उन्होंने ऐसी परिस्थितियों में जब बच्चे को माँ का दूध न मिलता हो या माँ के दूध के साथ कूछ और भी आहार देना हो तो माँ के दूध के बाद नारियल दूध को सिफारिश की है। श्रीलंका, मलेशिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, वियतनाम और फिलिप्पाइन्स में गाय के दूध की जगह नारियल दूध का व्यापक उपयोग होता है। नारियल दूध पाउडर का उपयोग डेरी वाइटनर के रूप में किया जाता है और यह थाई व्यंजनों की अनिवार्य सामग्री है। थाईलैंड में मात्र 1.89 लाख हेक्टर क्षेत्र में ही नारियल की खेती होती है, पर यह देश नारियल ज्यूस

उत्पादन और विपणन में अव्वल स्थान पर है। नारियल ज्यूस परिपक्व नारियल पानी या डाब पानी से नहीं बनाया जाता बल्कि नारियल की गरी से बनाया जाता है।

वर्जिन नारियल तेल और नीरा जैसे नूतन और संभावी नारियल उत्पादों के विकास हेतु प्रयास उठाने के साथ साथ नाविबो प्रौद्योगिकी संस्थान ने अगस्त 2015 में फ्लेवर्ड नारियल दूध बनाने की कोशिश की थी। इस नई चीज़ का जायका लिए सभी ने इसको सराहा और कई उपभोक्ताओं ने बड़ी मात्रा में नियमित रूप से इसे उपलब्ध कराने की गुजारिश भी की। एक दर्जन से भी अधिक राज्यों से आए मेहमानों ने इसका आनंद लिया और सभी ने राय दिया कि इस उत्पाद का भविष्य उज्ज्वल है। शुरूआती तौर पर नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था ने दो हफ्ते तक सुरक्षित स्वास्थ्यदायक और स्वादिष्ट नारियल ज्यूस विविध फ्लेवरों में उत्पादित करने की प्रौद्योगिकी विकसित की है। फिलहाल वे छह महीने तक सुरक्षित नारियल ज्यूस विकसित करने की प्रक्रियाओं में जुटे हैं। यह उम्मीद है कि नारियल उत्पादक कंपनियों और अन्य उद्यमियों द्वारा उत्पादित फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस छह महीनों में ही बाज़ार में उपलब्ध होंगे। नाविबो के नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के ज़रिए ऐसे उद्यमों के लिए सहायता दे सकती है। भारत में खाद्य प्रयोजनों के लिए नारियल का उपयोग केरल के 14 जिलों और तमिलनाडु एवं कर्नाटक के 6 जिलों में किया जाता है। परंतु भारत के सभी देशों में विविध प्रकार के खाद्य व्यंजनों की तैयारी में नारियल दूध का व्यापक उपयोग हो रहा है। भारतीय शहरों के बाज़ारों में चीन, थाईलैंड, श्रीलंका, फिलिप्पाइन्स, इंडोनेशिया, मलेशिया और वियतनाम से आयातित नारियल दूध की काफी बड़ी मांग है। आजकल भारतीय बाज़ारों में नारियल दूध से बनते विविध प्रकार के मूल्यवर्धित उत्पाद भी उपलब्ध होते हैं।

नारियल के नूतन उत्पादों के बड़े पैमाने पर उत्पादन और विपणन के लिए नारियल क्षेत्र के कृषक उत्पादक संगठनों और उद्यमियों को आगे आना चाहिए। विपणन एक पेशेवर प्रबंधन कार्य है, इसलिए अपने उत्पादों के प्रभावी और सफल विपणन हेतु कृषक उत्पादक संगठनों को अच्छे प्रबंधन पेशेवरों की विशेषज्ञता का सहारा लेना चाहिए। भारत के मेट्रो शहरों, बड़े शहरों और अन्य छोटे शहरों एवं कस्बों में ऐसे कई आउटलेट हैं जो नियमित रूप से नारियल दूध की आपूर्ति करते हैं और उनके स्थायी ग्राहक भी हैं। इसकी संभावनाओं को जानकर ही कैरोएन पोकफंड(सीपी) ग्रूप, जो थाईलैंड का सबसे बड़ा प्रसंस्करण ग्रूप है, ने हाल में केरल और तमिलनाडु के प्रमुख नारियल उत्पादक क्षेत्रों का दौरा किया था। उन्होंने हैरानी प्रकट की कि नारियल उत्पादन में विश्व का अगुआ देश होने के बावजूद भी भारत नारियल से ज्यादा मूल्यवर्धित उत्पाद नहीं बना रहा है। उन्होंने नारियल के मूल्यवर्धन हेतु भारतीय उद्यमियों और कृषक उत्पादक संगठनों के साथ सहयोग स्थापित करने के लिए रजामंडी प्रकट की। वैसे ही, निर्यात हेतु नारियल ज्यूस का उत्पादन करने वाली चीन की कंपनियां कच्ची सामग्रियाँ उपलब्ध कराने और

सहयोगात्मक उद्यम शुरू करने के लिए भारत से संपर्क कर रही हैं। इटली, इंगलैण्ड और दक्षिण अफ्रीका के उद्यमियों से भी समान तरह की पूछताछ मिल रही हैं।

यह परिस्थिति नारियल क्षेत्र के प्रति हमारा जो नज़रिया और रखैया है, बदलने की मांग करता है। रोजाना हम अपनी जिंदगी में तरह तरह के नारियल उत्पादों का इस्तेमाल करते हैं, किंतु नारियल के मूल्यवर्धन की संभावनाओं का भरपूर फायदा उठाने के बारे में हमने अभी तक नहीं सोचा है। यहाँ तक कि नारियल उत्पादक कंपनियाँ भी नारियल की असली संभावनाओं का भरपूर फायदा नहीं उठा पाई हैं। बाज़ार में जब कभी विदेश से आयातित नारियल उत्पाद देखें और इसका इस्तेमाल करें, हमें सचेत होकर नारियल की संभावनाओं का भरपूर फायदा उठाने के बारे में भी सोचना चाहिए। हमारा लक्ष्य बड़े पैमाने पर नारियल ज्यूस का उत्पादन होना चाहिए ताकि देश के नारियल किसानों के उज्ज्वल भविष्य के लिए यह बहुत बड़ा योगदान दे सके। नीरा की तुलना में, इसका उत्पादन आसान है और नारियल ज्यूस के मामले में कोई कानूनी अड़चनें भी नहीं हैं। नारियल ज्यूस का बड़े पैमाने पर उत्पादन समय की मांग है। भारत में नारियल दूध का घरेलू बाज़ार पहले से ही काफी मज़बूत है। नारियल विकास बोर्ड विविध मेलों और प्रदर्शनियों के ज़रिए इस उत्पाद का परिचय करा रहा है और विविध नारियल उत्पादों का परिचय कराने के लिए इस वर्ष 10 बिजनस टु बिजनस सम्मेलन आयोजित करने की योजना बना रहा है। इस उत्पाद के बारे में अधिकतम जानकारी देने के लिए बोर्ड प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के ज़रिए व्यापक प्रचार प्रसार भी करेगा। बोर्ड के प्रचार और विपणन प्रभाग से गुजारिश है कि नारियल ज्यूस के संवर्धन हेतु अधिकतम विस्तार गतिविधियाँ चलाने के लिए एकजुट होकर कार्य करें। इस उत्पाद से अधिकतम लाभ जुटाने के लिए नारियल उत्पादक कंपनियों को शीघ्र ही गंभीर प्रयास करनी चाहिए ताकि नारियल किसानों को इससे पूरा का पूरा फायदा मिल सके और स्वास्थ्य के प्रति सचेत उपभोक्ताओं को कुदरती, पौष्टिक और विष रहित ज्यूस उपलब्ध हो सके।

नारियल ज्यूस को कुदरती पौष्टिक स्वास्थ्य पेय का दर्जा देने का ज़रूरत है। नारियल ज्यूस की उत्पादन प्रक्रिया और लागत संबंधी विवरण सहित परियोजना प्रोफाइल प्रकाशित किया गया है। यह एक स्वास्थ्यदायी वेगन खाद्यात्मक है जो डेरी उत्पाद के बदले इस्तेमाल करने योग्य है। विविध स्तरों पर नारियल ज्यूस का वसा संघटक तैयार किया जा सकता है, इसलिए नारियल ज्यूस से 1 प्रतिशत या इससे भी कम वसा संघटक वाले स्वास्थ्यदायक पेय तक तैयार किया जा सकता है। नारियल ज्यूस से विकसित अन्य उत्पादें क्या क्या हैं? दही, योगर्ट, मक्क्वेन, चीस और आईसक्रीम जैसे उत्पाद भी नारियल ज्यूस से तैयार किए जा सकते हैं। हमें नारियल ज्यूस पर और अधिक अनुसंधानों की पहल करनी चाहिए ताकि इसका उपयोग डेरी विकल्प, क्रीमर और खाद्य उत्पादों, मिष्टाइयों की आवश्यक सामग्री के रूप में भी किया जा सके। नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था ने प्रोबायोटिक और प्रिबायोटिक नारियल ज्यूस की संभावनाओं पर अनुसंधान शुरू किया है। खाद्य प्रसंस्करण पर स्नातक और स्नातकोंतर पाठ्यक्रम चलाने वाली शैक्षणिक संस्थाओं

और खाद्य प्रौद्योगिकी पर बीटेक कार्यक्रम चलाने वाली संस्थाओं को इस उत्पाद पर आगे अनुसंधान चलाने के लिए आमंत्रित किया जाता है। नारियल ज्यूस के बाज़ार संवर्धन और आगे की प्रगति के लिए सतत अनुसंधान एवं विकास कार्य चलाना और उन्नत प्रौद्योगिकीयों बनाते रहना अनिवार्य है। नारियल उत्पादक कंपनियों और शैक्षणिक संस्थाओं के समन्वित प्रयास से प्रौद्योगिकी विकसित करने और इस क्षेत्र में आगे प्रयोगात्मक अनुसंधान चलाने में काफी योगदान मिल सकता है।

केरल में नीरा ने सारी कानूनी अड़चनें सफलतापूर्वक पार कर ली हैं। तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्यों के नारियल किसानों और उनकी उत्पादक कंपनियों की मदद करने के लिए नीरा पोलिसी बनाने और आबकारी नियमों का संशोधन करने के लिए नाविबो द्वारा भरपूर प्रयास किया जा रहा है, ताकि वहाँ पर नीरा उत्पादन संभव हो सके। हमें उम्मीद है कि अधिक विलंब के बिना ही सभी नारियल उत्पादक राज्यों में यह संभव हो जाएगा।

नारियल उत्पादक कंपनियों के निरंतर और नियमित अनुवीक्षण के आधार पर नारियल उत्पादक कंपनियों के निष्पादन और आउटपुट के अनुसार उनकी ग्रेडिंग करने का समय आ गया है। प्रथमिक नमूने के तौर पर केरल की 27 नारियल उत्पादक कंपनियों को चार श्रेणियों में ग्रेड दिया गया है। इसके अनुसार 10 नारियल उत्पादक कंपनियों को अपने कार्य निष्पादन के लिए ए ग्रेड प्राप्त हुआ। सात नारियल उत्पादक कंपनियों को बी ग्रेड और सात कंपनियों को सी ग्रेड प्राप्त हुआ। दो भार्ग्यवश शेष तीन कंपनियों को ढी ग्रेड दिया गया है। कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की कंपनियों को भी संबंधित क्षेत्रीय कार्यालयों और राज्य केन्द्रों द्वारा इसी प्रकार ग्रेडिंग देने की ज़रूरत है। ग्रेडिंग देने का उद्देश्य नारियल उत्पादक कंपनियों का प्रभावी अनुवीक्षण करना और सुव्यवस्थित टीम वर्क, प्रौद्योगिकी अभिग्रहण एवं बेहतर मूल्यवर्धन सुनिश्चित करने हेतु अकादमिक और अनुसंधान संस्थानों के साथ नेटवर्किंग करके अपनी क्षमताओं का शतप्रतिशत लाभ उठाने में इनकी मदद करना है। नारियल क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं का सामना करने और सारी अड़चनों को पार करके हमारे देश को मूल्यवर्धन और नियांत में अग्रणी बनाकर नारियल किसानों को उच्च लाभांश वापस करने में नारियल उत्पादक कंपनियों को समर्थन और तालीम देना बोर्ड का लक्ष्य है।

मेरी इच्छा है कि नीरा और वर्जिन नारियल तेल के साथ नारियल ज्यूस भी देशी और विदेशी बाज़ार में नारियल के प्रोडक्ट बास्केट का आशाजनक उत्पाद बनें। नारियल के इन सभी उत्पादों से नारियल पेड़ से प्राप्त आय में वृद्धि होगी और नारियल के लिए उचित, किफायतमंद स्थायी भाव सुनिश्चित होगी। ग्रामीण क्षेत्र के किसानों और कामगारों के हाथों में अधिक संपत्ति आने से हमारे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि लाने में सहायता मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित,

टी.के.जोस

अध्यक्ष

फ्लेवर्ड नारियल दूध-सर्वोत्कृष्ट नवोत्पाद

गीतु ए एस, ज्योति के नायर

फुड प्रोसेसिंग इंजीनियर, नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, वाष्णकुलम, आलुवा, कोची

दुग्ध पेयों के बदले उपयोग किए जाने वाले समूचे पेयों में सोय को छोड़कर अनाज और नट्स सहित पौधा आधारित डेरी विकल्प के प्रति लोगों की रुचि और मांग बढ़ती जा रही है।

इस श्रेणी में डेरी रहित रेडि टु ड्रिंक पेय के रूप में उभरता नया उत्पाद है फ्लेवर्ड नारियल दूध। नारियल दूध में लैक्टोस निहित नहीं है और डेरी दूध की अपेक्षा इसमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा भी कम है। इसलिए लैक्टोस असहिष्णु लोग और डेरी दूध का स्वाद पसंद नहीं करने वाले लोग नारियल दूध का उपयोग कर सकते हैं। नारियल दूध के कई पौष्टिक लाभ भी हैं और यह कई अनिवार्य पौष्टिक तत्वों का उत्तम स्रोत भी है।

प्रक्रिया

नौ से दस महीने आयु के ताजा नारियल का भागिक यांत्रिक विधि से या हस्तचालित उपस्करों से छिलका और खोपड़ी निकाले जाते हैं। खोपड़ी निकाली गई नारियल गरी गोले के रूप में प्राप्त होती है जिसके बाहर का आवरण खुरचनी से छीलकर निकाला जाता है। छीली गई गोल गरी को फोड़कर पानी निकाला जाता है और फिर स्वच्छ पानी में अच्छी तरह धोया जाता है। सफेद नारियल गुदे को गरम पानी/सीधे भाप में ब्लैंच किया जाता है ताकि इसमें मौजूद सूक्ष्मजीवाणुओं



की संख्या कम की जा सके। गरी को डिसिंट्रेटर में अच्छी तरह पीसा जाता है और दूध निष्कर्षक की सहायता से दूध निकाला जाता है। इसप्रकार निकाले गए दूध में नारियल पानी मिलाया जाता

डेसिकेटेड नारियल और नारियल छीलन जैसे उपोत्पादों के लिए भी बाजार में अच्छी कीमत प्राप्त होती है।



है और शुद्ध पेय जल मिलाकर इसे पतला बनाया जाता है ताकि यह फ्लेवर्ड नारियल दूध उत्पादन के लिए उपयुक्त स्तर का बन जाए। इसमें फिर शर्करा और स्वीकृत खाद्य संयोज्य मिलाया जाता है। इसके बाद वांछित तापमान में फ्लेवर्ड नारियल दूध का ताप उपचार करके पैक किया जाता है। खोपड़ी, निर्वसीकृत

पास्च्युरीकरण एवं काँच के बोतलों/पीपी (पोली प्रोपलीन) बोतलों में भरना और अत्यंत उच्च तापमान में (अल्ट्रा हाई टेंपरेचर) उपचार फ्लेवर्ड नारियल दूध उत्पादन के लिए अपनाई गई प्रसंस्करण विधियाँ हैं।

दोनों प्रक्रियाओं में छिलका निकालना, खोपड़ी निकालना, बाह्यावरण हटाना, ब्लैंचिंग, प्रि-कटिंग और दूध निष्कर्षण जैसी पूर्व प्रसंस्करण गतिविधियाँ समान होती हैं।

पास्च्युरीकरण (काँच के बोतल/पीपी बोतल)

दो परत वाली टंकी में तापन प्रक्रिया की जाती है और 10 मिनट के लिए तापमान 80°C से तक बढ़ाया जाता है। तापन और शीतलन प्रक्रिया स्प्रेयिंग से

पास्च्युरीकरण प्रक्रिया



या टंकी के बाह्य और अंदर की परत के बीच से गरम/ठंडे पानी की धारा बहाकर किया जाता है। एक समान तापन/शीतलन सुनिश्चित करने के लिए यांत्रिक विधि से दूध को हल्की कंपित स्थिति में रखा जाता है। नारियल दूध में निहित विकासक्षम सूक्ष्मजीवियों को मारने लायक स्तर पर तापमान बनाया रखा जाता है। यह लगभग सभी प्रकार के खामीरों, फफूँदों और सामान्य नुकसानदायक बैक्टीरियाओं को मारने और सामान्य रोगजनक तापरोधी जीवों का संपूर्ण नाश करना सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त माना गया है।

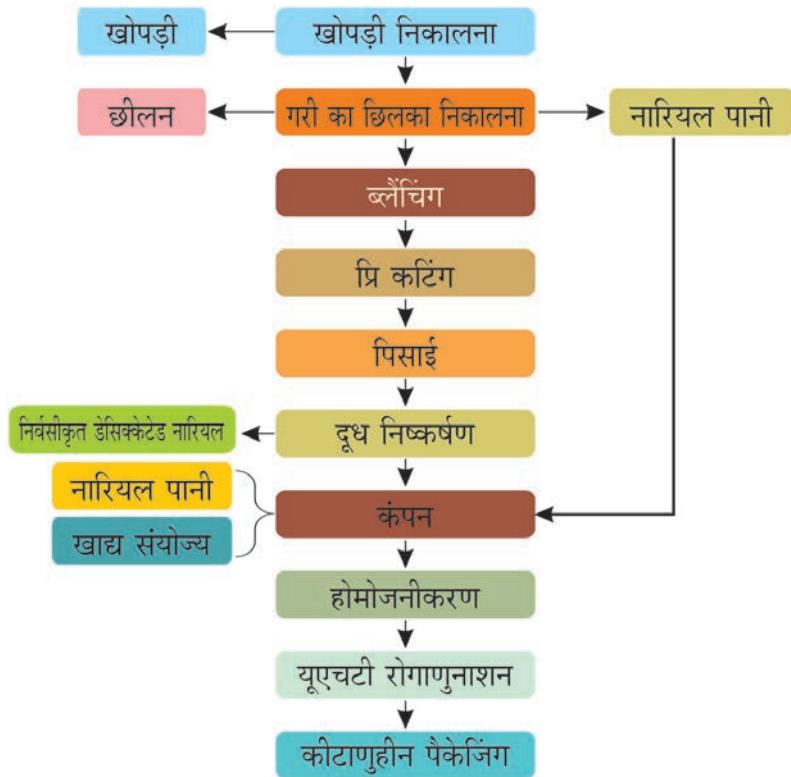
यूएचटी रोगाणुनाशन

अल्ट्रा हाई टेंपरेचर (यू.एच.टी) उत्पाद में उत्पाद को $138^{\circ}\text{ सें-}140^{\circ}\text{ सें}$. पर 15 सेकंड के लिए गरम किया जाता है और तुरंत सामान्य तापमान तक ठंडा किया जाता है। इसके फलस्वरूप सभी सूक्ष्म जीवियों का नाश होने के साथ साथ उत्पाद का पौष्टिक मूल्य बरकरार रहता है और यह सुरक्षित भी बना रहता है। यूएचटी उपचार की मुख्य खासियत यह है कि सामान्य तापमान पर भी उत्पाद का भंडारण किया जा सकता है। यूएचटी जैसी आधुनिक प्रौद्योगिकी अपनाने से श्रम लागत और उत्पादन में होने वाला नुकसान कम होता है।

यूएचटी क्यों?

पास्च्युरीकरण प्रक्रिया में नारियल दूध 80° सें . तापमान पर 10 मिनट तक गरम करके फिर ठंडा किया जाता है। सही शीतलन और ठंडक प्रदान करने से पास्च्युरीकृत दूध पाँच से पन्द्रह दिनों तक सुरक्षित रहता है। यूएचटी उपचार में दूध को $138\text{-}140^{\circ}\text{ सें}$. के बीच के तापमान में 15 सेकंड के लिए उच्च ताप दिया जाता है। यूएचटी उपचार एक सतत प्रक्रिया है जो हवा में उत्पन्न सूक्ष्मजीवों से उत्पाद संदूषित होने से बचाने के लिए अवरुद्ध तंत्र में चलाया जाता है। यूएचटी नारियल दूध तापन और शीतलन के तेज़ अनुक्रमिक चरणों से गुज़रता है और शीघ्र ही इसे रोगाणुनाशी

यूएचटी का प्रयोग करके फ्लेवर्ड नारियल दूध का प्रसंस्करण



परियोजना लागत

फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस के उत्पादन हेतु प्रति शिफ्ट 4000 लीटर की क्षमता वाली यूएचटी प्लैट स्थापित करने की लागत संबंधी विस्तृत विवरण नीचे दी गई है। परियोजना लागत में भूमि और मकान, संयंत्र एवं मशीनरी, पूर्व प्रचालन व्यय और कार्यगत पूँजी शामिल है। संयंत्र के लिए अनुमानित परियोजना लागत 2.01 करोड़ रुपए है। परियोजना लागत संबंधी मदवार विस्तृत विवरण नीचे दिया गया है:

ब्यौरे	राशि (रु.लाखों में)
भूमि (50 सेंट)	--
4000 वर्ग फुट का मकान (प्रति वर्ग फुट 1000 रु की दर पर)	40.00
अन्य सिविल कार्य	8.00
संयंत्र और मशीनरी	111.00
इलेक्ट्रिफिकेशन	3.00
अपशिष्ट पानी उपचार संयंत्र	10.00
आर.ओ.संयंत्र	5.00
पूर्व प्रचालन व्यय	5.86
कार्यगत पूँजी(मार्जिन)	18.40
कुल	201.26

ब्यौरे	वर्ग फुट
प्रसंस्करण क्षेत्र	1200
कच्ची सामग्रियों का भंडार	500
आंतिम उत्पाद का भंडार	600
कार्यालय कक्ष	600
प्रयोगशाला	500
कामगारों का कक्ष	400
स्वागत कक्ष	200
कुल	4000

संयंत्र और मशीनरी

मद	मात्रा	यूनिट	यूनिट लागत	राशि
डिशेल्लर	3	सं.	1.5	4.50
पेरिंग इकाई	3	सं.	1.75	5.25
वांशिंग	1	सं.	3	3.00
प्रिकटर	1	सं.	2	2.00
डिस्ट्रिब्यूटर	1	सं.	3	3.00
स्क्रू प्रेस	1	सं.	3	3.00
अक्वैटिक टंकी	1	सं.	1.50	1.50
फिल्टर	1	सं.	3	3.00
होमोजनाइज़र	1	सं.	5	5.00
यूएचटी	1	सं.	50	50.00
पैकेजिंग इकाई	1	सं.	8	8.00
पाइपलाइन	1	लॉट	2	2.00
डीजल जनरेटर	1	सं.	5	5.00
सीआईपी यूनिट	1	सं.	5	5.00
प्रयोगशाला उपस्कर	1	लॉट	1	1.00
संयंत्र आईटी तंत्र और नेटवर्किंग	1	लॉट	3	3.00
इन्स्टलेशन प्रभार और श्रम	1	लॉट	5	5.00
विविध	1	लॉट		1.75
कुल			111.00	

पैकिंग सामग्रियों (कीटाणुहीन पैकेजिंग) में पैक किया जाता है। इस प्रक्रिया में पुनःसंक्रमण नहीं होता है। अंतिम उत्पाद रेफ्रिजरेशन या परिरक्षियों के बिना छह महीने तक सुरक्षित रहता है।

किसी भी गुणवत्तापूर्ण उत्पाद के लिए अच्छा बाजार मिल जाता है और किफायती दाम पर बिकने से इसका बाजार बढ़ता जा रहा है। डेरी रहित उद्योग में नवोत्पादों के विकास में वैश्विक तौर पर 29 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी रिकार्ड की गई है जबकि डेरी दूध की जगह डेरी रहित दूध की खरीद में भी 48 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस भविष्य में नारियल किसानों को मुनाफा कमाने का ज़रिया बन जाएगा।



नारियल ज्यूस आज़माने के लिए तैयार पेय

आनी ईप्पन, अनीटा जोय

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, वाष्णवकुलम, आलुवा, केरल



नारियल की ताज़ा गरी कहुकस करके निचोड़ने से प्राप्त तेल-प्रोटीन-पानी मिश्रित रस को नारियल ज्यूस कहा जाता है। बारीक कटी हुई नारियल गरी में पानी डालकर यांत्रिक या हस्तचालित रूप से निचोड़कर भी ज्यूस तैयार किया जाता है।

नारियल ज्यूस वेगन लोगों का लोकप्रिय पसंद है और यह स्मृथियों और मिल्कशेकों की मूल सामग्री के रूप में उपयोग करने के लिए उत्तम है। बेकिंग प्रक्रिया में डेरी उत्पाद के बदले में भी इसका उपयोग किया जा सकता है। नारियल दूध तेल-प्रोटीन-पानी मिश्रित रस है जो कहुकस की गई नारियल गरी को निचोड़कर तैयार किया जाता है। बारीकी से कटी हुई नारियल गरी को पानी के साथ यांत्रिक या हस्तचालित

रूप से निचोड़कर भी ज्यूस तैयार किया जाता है। नारियल दूध का संघटन दूध निकालने के लिए उपयोग किए गए पानी की मात्रा पर निर्भर है। ताज़ा निकाले गए नारियल दूध का पीएच मान 6 होता है।

उपभोक्ताओं की स्वीकार्यता के अनुसार विविध जायकों में पौष्टिक स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में नारियल दूध का प्रसंस्करण किया जा सकता है। गाय के दूध से भिन्न नारियल दूध

फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस के पौष्टिक मूल्य

पैरामीटर	फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस
ऊर्जा मूल्य (प्रति 100 मि.ली.)	75 कैलोरी
कुल वसा	1-3%
कोलेस्ट्रॉल	शून्य
कुल कार्बोहाइड्रेट्स	15-16%
कुल खनिज	0.39-0.42%
प्रोटीन	1-1.2%

(नाविबो प्रयोगशाला में सुनित आंकड़े)

लैक्टोस मुक्त है और लैक्टोस असहिष्णु लोग दूध के बदले में नारियल दूध का इस्तेमाल कर सकते हैं।

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था ने फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस के प्रसंस्करण हेतु प्रौद्योगिकी विकसित की है। फ्लेवर्ड दूध के प्रसंस्करण हेतु 9-10 महीने आयु का ताज़ा कच्चा नारियल उपयुक्त है। कम आयु के ताज़ा फलों से निकाला जाने वाला दूध गाढ़ा और कम वसायुक्त होता है। नारियल का ताज़ा पानी भी निकाले गए ज्यूस में मिलाया जाता है ताकि इसे पौष्टिक घटकों से समृद्ध बनाया जा सके। पीने के लिए तैयार उत्पाद के रूप में स्वीकृति मिलने के लिए निश्चित स्तर तक इसका गाढ़ापन बनाया रखा जाता है। एक नारियल से औसतन 800-1000 मिली लीटर नारियल ज्यूस बनाया जा सकता है।

नारियल दूध-पौष्टिक पहलुएं

फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस में निहित वसा मुख्यतः मध्यम शृंखला वसा अम्लों के रूप में है, जिनका 50 प्रतिशत लॉरिक अम्ल है। शरीर में लॉरिक अम्ल अत्यंत लाभकारी मोनोलॉरिन के रूप में परिवर्तित होता है जिसकी वायरस रोधी और बैक्टीरिया रोधी विशेषताओं के कारण कई तरह के रोगजनक जीवों का नाश होता है। इसलिए अब यह स्वीकार किया गया है कि शरीर को इन्फेक्शनों और वायरसों से सुरक्षित रखने में नारियल ज्यूस की खपत सहायक है। दूध में निहित वसा संतृप्त वसा अम्ल के मध्यम

नारियल ज्यूस-चमत्कारी पेय

नारियल दूध की मलाई जैसी बनावट और हल्की कुदरती मिठास से अक्सर इसे चमत्कारी पेय माना गया है क्योंकि



नारियल दूध में निहित पोषकतत्व शरीर का प्रतिरक्षी तंत्र मज्जबूत बनाता है और रोग के प्रकोप को रोकता है। नारियल दूध, नारियल तेल और नारियल पानी विश्व का सर्वाधिक स्वास्थ्यदायक आहार है।

वास्तव में नारियल दूध क्या है और इसे कैसे बनाया जाता है? नारियल दूध वास्तव में “दूध” नहीं है (दूध के बारे में हमारी जो सामान्य कल्पना है उसके अनुसार)। यह परिपक्व नारियल के अंदर नारियल गरी में संचित कुदरती पेय है। जब आप ताज़ा नारियल को फोड़ते हैं, दूध समान सफेद चीज़ जो रिसता है वह कुदरती नारियल पानी है, जब इसमें नारियल का गूदा मिश्रित करके छाना जाता है गाढ़ा नारियल दूध प्राप्त होता है।

दोनों में अंतर क्या है? जैसे जैसे नारियल परिपक्व होता है उसके अंदर निहित अधिकांश पानी की जगह नारियल गूदा बनने लगता है। इसलिए परिपक्व नारियल से ज्यादा नारियल दूध प्राप्त होता है जबकि कम आयु के (तकरीबन पाँच से सात महीने) नारियल से अधिक मात्रा में नारियल पानी प्राप्त होता है।

नारियल पानी में उच्च मात्रा में शर्करा और कुछ खास इलेक्ट्रॉलाइट निहित होते हैं जबकि नारियल दूध स्वास्थ्यदायक संतृप्त वसा अम्लों और कैलोरियों से भरपूर होता है।

पौष्टिकतत्व प्रदान करने के साथ साथ इसका स्वाद भी लाजवाब है। नारियल दूध में लॉरिक अम्ल निहित होता है जो शरीर के लिए फायदेमंद वसा है। यह मध्यम शृंखला वसा अम्ल है जिसका आसानी से अवशोषण होता है और शरीर द्वारा ऊर्जा के लिए इसका उपयोग किया जाता है। नारियल में निहित वसा अम्ल मुख्यतः संतृप्त वसा अम्ल है, जिसकी खपत से न कोलेस्ट्रॉल स्तर बढ़ता है और न ही दिल को नुकसान पहुंचता है। वास्तव में नारियल दूध कोलेस्ट्रॉल स्तर कम करने, रक्तदाब बेहतर बनाने और दिल का दौरा पड़ने या स्ट्रॉक लगना रोकने में सहायक होता है।

पूर्ण वसा युक्त नारियल दूध में सभी कुदरती वसा अम्ल निहित होते हैं जबकि हल्के नारियल दूध से कुछ वसा निकालकर पतला, कम कैलोरी वाला दूध बनाया जाता है। चूँकि नारियल दूध डेरी, लैक्टोस, सोय, नट्स या अनाज से मुक्त होता है, इसलिए डेरी और नट्स या अनाज आधारित दूध के एलर्जी वाले लोगों, वेगन और पौधा आधारित आहार खाने वालों के लिए यह काफी अच्छा विकल्प है।

स्रोत: Dr.Axe.com

श्रृंखला ट्राइग्लिसेराइड है जो कई प्रकार की खाद्य सामग्रियों में उपलब्ध नहीं होता है। मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल का जिगर में जलदी चयापचय होकर ऊर्जा के रूप में परिवर्तन होता है। अन्य संतुष्ट वसा अम्लों से भिन्न मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल का उपयोग शरीर द्वारा तुरंत किया जाता है और वसा के रूप में इसका भंडारण बहुत कम ही होता है।

फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस विटामिन ई और विटामिन सी जैसे प्रतिऑक्सीकारकों का स्रोत है जो मानव शरीर की फ्री रैडिकल गतिविधियाँ कम करने में सहायता करता है। यह विटामिन ए, के

और डी भी छोटी मात्रा में प्रदान करता है। नारियल ज्यूस की सूक्ष्मजीव रोधी, वायरस रोधी, बैक्टीरिया रोधी और फॉफूरोधी विशेषताएं शरीर के प्रतिरक्षी तंत्र को बढ़ावा देती हैं। नारियल ज्यूस सोडियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम, फोसफरस, आयरन, कोपर और कैल्शियम जैसे खनिजों का भी समृद्ध स्रोत है। फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस में एसिड फोसफेट्स, कैटलेस, डिहाइड्रोजनेस, ड्यटेस, पेरोकिसेडेस, आरएनए-पोलिमरेस आदि जैसे कुदरती रूप से मौजूद जैवसक्रिय एनज़ाइम निहित हैं। ये एनज़ाइम पाचन और चयापचयी क्रिया में मदद करता है।

फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस संपूर्ण और पौष्टिक पेय है। इसे फंक्शनल आहार का दर्जा दिया जा सकता है क्योंकि यह पौष्टिक संघटन के साथ साथ अन्य स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करता है। नारियल दूध के उत्पादन में नारियल का प्रभावी उपयोग होता है, इसलिए नारियल ज्यूस नारियल किसानों को उम्मीद की किरणें दिखा रहा है। एक नारियल से जो ज्यूस मिल जाता है उसकी मात्रा अधिक होने के कारण इस उत्पाद के वाणिज्यीकरण की संभावनाएं भी अधिक हैं।

ग्लोबल अग्री कनेक्ट 2015

नारियल विकास बोर्ड ने नई दिल्ली के होटल ले मेरिडियन में 2 से 3 नवंबर 2015 तक संपन्न चौथे ग्लोबल अग्री कनेक्ट में भाग लिया। नेशनल स्किल फाउंडेशन ऑफ इंडिया ने कार्यक्रम का आयोजन देश के अपेक्षतया अकुशल कार्यबल को कुशल बनाने और उनके लिए रोजगार के अवसर खोलने के लक्ष्य से किया था।

कार्यक्रम और प्रदर्शनी का उद्घाटन कृषि लागत एवं मूल्य आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अशोक गुलाठी ने किया। कार्यक्रम के साथ एक संगोष्ठी भी आयोजित की गई। ग्लोबल अग्री कनेक्ट 2015 ने विविध लाभभोगियों को एक मंच में लाकर कृषि क्षेत्र की नई प्रौद्योगिकियों और नई खोजों पर चर्चा करने का अवसर प्रदान किया। 21 वीं सदी के भारतीय कृषि क्षेत्र में नई खोज विषयक एक पुस्तक का भी विमोचन हुआ। केन्द्रीय सरकार के एवं उत्तर भारत के विविध राज्य सरकारी संगठनों के 15 प्रदर्शकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

नाविबो ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर इस बदलती जीवनशैली के लिए उपयुक्त नए, सुविधाजनक और समय की बचत करने वाले विविध मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों के



बोर्ड के स्टाल का दृश्य

स्वास्थ्य पहलुओं के बारे में जागरूकता पैदा की। बोर्ड के स्टाल में नारियल और इसके उत्पादों की खूबियाँ दर्शाने वाले सूचनात्मक पोस्टर लगाए गए। बोर्ड के स्टाल में नारियल और इसके विविध मूल्यवर्धित उत्पादों की लंबी श्रेणी लगाई गई। बोर्ड के अधिकारियों ने नारियल और नारियल उत्पादों की उपयोगिता और इसके गुणकारी प्रभावों के बारे में आगंतुकों को अवगत कराया। विविध विनिर्माताओं/डीलरों के ज़रिए बोर्ड के स्टाल में पैकेटबंद डाब पानी, नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल, नारियल चिप्स और नारियल तेल आधारित प्रसाधन एवं सौन्दर्यवर्धक सामग्रियों की बिक्री भी की गई जिसके लिए बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली।

बेहतर आमदनी के लिए नारियल चिप्स

ज्योति के नायर*, अश्विनी अब्रहाम**

*फुड प्रोसेसिंग इंजीनियर, **कनसल्टेंट सी डी बी, कोची



ताड़वृक्षों के बीच नारियल पेड़ की अलग पहचान है। यह विश्व के सबसे उपयोगी पेड़ है। हाल ही के एक अध्ययन के अनुसार कल्पवृक्ष के तकरीबन 365 उपयोग होते हैं। इनमें से अधिकतर खाद्य प्रयोजन हैं। कल्पवृक्ष के उपयोगों के बारे में फिलिप्पीन्स में कई कहावतें प्रचलित हैं; उनमें से एक ऐसा है कि “अगर आप तारे गिन सकते हैं तो कल्पवृक्ष के सारे उपयोग भी गिन सकेंगे।”

कल्पवृक्ष के चमत्कारी फल नारियल मानवजाति को आहार और पेय दोनों प्रदान करता है। रुचिकर, पौष्टिक एवं रेशों से समृद्ध नारियल की गरी सर्वोत्तम आहार है। शरीर को स्वास्थ्य एवं त्वचा को सौंदर्य प्रदान करने के साथ साथ पाचनतंत्र की तंदुरुस्ती के लिए भी नारियल की गरी फायदेमंद है। संपूर्ण आहार के रूप में ज्ञात नारियल में निहित सारे गुण नारियल चिप्स में भी निहित हैं।



नारियल चिप्स

दूसरे चिप्स की तरह नारियल चिप्स भी स्नैक के रूप में तुरंत उपयोग करने के लिए बनाया गया खाद्य पदार्थ है। नारियल की गरी को बारीक से काटकर चीनी की चाशनी में डुबोकर रखने के बाद बाहर निकालकर नमी दूर करके नारियल चिप्स बनाए जाते हैं। नारियल चिप्स की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

1. तुरंत खाए जानेवाला स्नैक
2. तेल में तल नहीं लिया जाता है
3. प्रिसर्वेटीव मिलाया नहीं जाता है
4. नारियल गरी का खास स्वाद एवं पौष्टिकता नष्ट नहीं हो जाते हैं।

पौष्टिक संघटन

संघटक	20 ग्राम में
वसा	9.42 ग्रा.
लारिक अम्ल	4.82 ग्रा.
कैलिशियम	2.10 मि. ग्रा.
रेशे	1.93 ग्रा.
आयरन	1.30 मि. ग्रा.
कोलेस्ट्राल	शून्य

आठ से दस महीने के अच्छी तरह पके नारियल से चिप्स बनाया जाता है। एक किलो ग्राम नारियल का दाम 20 रुपए आकलित किया गया है। एक किलो ग्राम चिप्स बनाने के लिए 4.2 कि.ग्रा. छिलका रहित नारियल की आवश्यकता होती है। संयंत्र एक शिप्ट में 100 कि.ग्रा. चिप्स बनाने की संस्करण क्षमता रखता है।

छिलका निकालना: नारियल का छिलका निकाला जाता है।

खोपड़ी निकालना: खोपड़ी निकालते समय ध्यान दें कि गरी टूट न जाय।

गरी का छिलका निकालना: गरी के बाहरी भूरे रंग का छिलका यांत्रिक रूप से या हाथ से निकाल सकता है। ध्यान दें कि छिलके के साथ गरी भी न नष्ट हो जाए।

प्रसंस्करण विधि फ्लो चार्ट



ब्लैन्चिंग: छिलका निकालने के बाद नारियल गरी को उबले पानी में 0.05 प्रतिशत पोटेशियम मेटा बाइसल्फेट मिलाकर डुबो कर रखें।

ड्रेनिंग: वाइब्रेटरी स्क्रीनर मशीन की सहायता से ड्रेनिंग किया जाता है। ब्लैंच की गई गरी के अधिक जल को इस तरीके से दूर किया जाता है।

बारीकी से काटना: गरी को स्लाइसर/पीलर की सहायता से बारीकी से काट लिया जाता है।

ओस्मोटिक निर्जलीकरण: गरी के टुकड़े 50 डिग्री ब्रिक्स के चीनी के घोल में एक घंटे डुबो कर रखते हैं। चीनी के घोल में थोड़ा सा नमक भी मिलाना चाहिए। चीनी के घोल को अच्छी तरह चला देना चाहिए।

ड्रेनिंग: चिप्स को नमी सोखनेवाले कागज पर फैलाकर अधिक नमी निकालना चाहिए।

ड्राइंग: नमी निकालने के बाद नारियल चिप्स को 70-80 डिग्री सेंटीग्रेड पर 4 से 5 घंटे तक सुखाना चाहिए। हरेक घंटे के बीच चिप्स को चला दें ताकि पैन पर चिपक न जाए। तापक्रम 90 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ाकर चिप्स को अच्छी तरह कुरकुरा बना दें। अच्छी तरह कुरकुरा होने पर चिप्स का रंग स्वर्णिम भूरा हो जाएगा।

ठंडा करना: सुखाए गए चिप्स को समान्य तापक्रम में ठंडा होने दें।

पैकिंग: नारियल चिप्स ठंडा होकर कुरकुरापन नष्ट हो जाने की संभावना होने के कारण उसे एलडीपीई फिल्म से लैमिनेट किए एल्यूमिनियम फोइल से या मेटलाइस्ड पोली फिल्म से पैक करने पर छह महीने तक रंग और स्वाद में किसी कमी के बिना सुरक्षित रखा जा सकता है। चिप्स के पैकों में नाइट्रोजन भरने से चिप्स अधिक समय तक ठीक ठाक रहेगा और टूट भी नहीं जाएगा।

20 ग्राम चिप्स के उत्पादन का व्यय-आय विवरण

मद	रुपए
प्रचालन व्यय	7.81
प्रशासनिक व्यय	0.53
विपणन और वितरण व्यय	3.25
उत्पाद की कुल लागत	11.58
विक्रय मूल्य	13
शुद्ध लाभ	1.42

इकाई लगाने के लिए अपेक्षित पूँजी निवेश

क्र. सं.	मद	रुपए (रु.लाखों में)
1.	भूमि (10 सेंट)	पट्टे पर
2.	मकान (1000 वर्ग फीट, प्रति वर्ग फीट 1000 रु.)	10
3.	अन्य निर्माण कार्य (सड़कें, चारदीवारी, पानी की टंकी)	2
4.	यंत्र सामग्रियाँ और उपस्कर	9.40
5.	विद्युतीकरण	1
6.	प्रारंभिक व प्रचालन पूर्व व्यय	0.75
7.	कार्यशील पूँजी मार्जिन	2.60
	कुल	25.75

विभिन्न प्रकार के एसन्स और मसाले मिलाकर विभिन्न जायकों में चिप्स बना सकते हैं।

उपोत्पादः मुख्य उपोत्पाद छिलका, खोपड़ी और नारियल का पानी हैं।

उत्पाद की प्राप्ति: 420 कि.ग्रा. (1000) नारियल से 100 कि.ग्रा. चिप्स मिल जाएगा।

नारियल चिप्स इकाई लगाने हेतु योजना का प्रारूप

संयंत्र और यंत्र सामग्रियाँ

क्र. सं.	मद	संख्या	मूल्य दर (लाख रु.में)	रकम (लाख रु.में)
1.	डि हस्कर	2	0.7	1.40
2.	डि शेलिंग	2	0.6	1.20
3.	पेइरिंग इकाई	1	0.55	0.55
4.	ब्लैंचिंग वेसल	1	0.5	0.50
5.	स्लाइसर	1	0.5	0.50
6.	मिक्सिंग वेसल	1	0.75	0.75
7.	होट एयर ओवन	1	3	3.00
8.	पैकिंग उपकरण	1	1.5	1.50
कुल				9.40

प्राथमिक कार्य

- इकाई की क्षमता - एक शिफ्ट में 100 कि.ग्रा. चिप्स
- छिलका निकाले नारियल का क्रय मूल्य - प्रति कि.ग्रा. 20 रुपए
- चिप्स का विक्रय मूल्य - प्रति 20 ग्रा.पाउच को 13 रुपए
- एक कि.ग्रा. चिप्स बनाने के लिए अपेक्षित छिलका निकाले नारियल - 4.2 कि.ग्रा.

योजना की झलक

क्र. सं.	मद	क्षमता के 80 प्रतिशत का उपयोग करने पर
1.	विक्रय आय	156 लाख रु.
2.	दीर्घकालीन ऋण	6.18 लाख रु.
3.	बिक्री से कर को छोड़कर शुद्ध आय	6.76 %
4.	ऋण वापसी का अनुपात (डीएससीआर)	3.20
5.	ऋण वापसी की अवधि	3 साल 11महीने
6.	वार्षिक आय दर (आईआरआर)	22 %
7.	ब्रेक इवन पोइंट (बिक्री)	48.28 %

नारियल चिप्स के उत्पादक

क्र.सं.	पता	संपर्क सूचनाएं
1.	चिनूस प्रोडक्ट्स, मुट्टितटी पी.ओ, तृश्शूर	दूरभाष : 0480 -2755931
2.	कोटुंगल्लूर कोकोनट प्रोड्यूसर कंपनी, सच्चिदानन्दन, सुपुत्र कृष्णनकुट्टी, काट्टिल हाउस, पेरिंजनम पी.ओ, पिन 680686	मोबाइल : 9645799279 , ई-मेल : kocoprod@gmail.com
3.	फलाडा एग्रो रिसर्च फाउंटेशन, सर्वे सं.92/5, सेगहल्ली क्रोस रोड, मगधी रोड, कन्नल्ली, बेंगलूरु - 560091	दूरभाष : 080 2853 6762
4.	शोभा इंजीनियरिंग कंपनी, डी पी 20/ए, पेरिंगन्डूर पी ओ, अत्ताणी, तृश्शूर - 680581	ई-मेल : suryashobha 10@gmail.com दूरभाष : 0487 -2208153, 2200675 , मोबाइल : 09447668543, 09809404000



खुम्बी, नारियल की सर्वोत्तम मिश्र फसल

एस. सी. साहू, के. बी. महापत्रा और
एच. पी. महेश्वरप्पा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-ताड़ों पर अग्रिम भारतीय
समन्वित अनुसंधान कार्यक्रम,
ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुबनेश्वर,
ओडिशा

भारतीय कृषि क्षेत्र, सर्वदा बढ़ती आबादी के लिए पोषण सुरक्षा प्रदान करने की चुनौतियों का सामना कर रहा है। भविष्य में कृषि भूमि की कमी, जलवायु परिवर्तन, पानी का अभाव और अपेक्षाकृत सस्ते दरों पर गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थों की आवश्यकता आदि अहम मुद्दे बनने वाले हैं। अतः यह अनिवार्य हो गया है कि इन चुनौतियों का सामना करने और लोगों को पोषण सुरक्षा प्रदान करने के लिए हमारी कृषि गतिविधियों में बागवानी जैसे क्षेत्रों को भी शामिल किया जाए। खुम्बी की खेती गुणवत्तापूर्ण आहार, स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय सुस्थिरता जैसी समस्याओं का समाधान करने में

मदद करता है। भाग्यवश, शाकाहार की तरफ वैश्विक रुझान और फंक्शनल आहार के रूप में खुम्बी की पहचान के कारण संभवतः हात के कुछ सालों में खुम्बी की अहमियत बढ़ने लगी है। खुम्बी की खेती की कार्बन भंडार के रूप में कृषि अपशिष्टों को अच्छी गुणवत्ता के प्रोटीन में बदलने की गुंजाइश भी है, अन्यथा ये खेतों में बेकार पड़े रहते हैं। इस बेजोड़ बागवानी उद्यम में ज़मीन पर ज्यादा दबाव डाले बिना ही आहार की कमी की चुनौती का सामना करने की पूरी गुंजाइश है।

नारियल बागानों में अंतराफसल के रूप में खुम्बी

नारियल (कोकोस न्यूसिफेरा एल.) पेड़ प्रमुख दीर्घकालीन फसल है जो 70 साल से भी अधिक समय तक जीवित रहता है। इसकी खेती अधिकतर एकल फसल के रूप में की जाती है जिसके फलस्वरूप फार्म की कुल उत्पादकता इसकी



वास्तविक क्षमता से बहुत कम होती है। यही नहीं, भाव में लगातार हो रही घट-बढ़ और उच्च उत्पादन लागत एकल फसल के रूप में नारियल की खेती सुरिथर और किफायती नहीं बनाती है। नारियल बागानों में पेड़ों के बीच की जगह की संभावनाओं का लाभ उठाकर विविध प्रकार की अंतराफसलों की खेती करके प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम आय कमाने का भरपूर अवसर उपलब्ध है। नारियल बागानों में अंतराफसलों के रूप में खेती करने के लिए औषधीय एवं संगंध फसलों सहित दीर्घकालीन, द्विवर्षीय और मौसमीय फसलें सबसे उचित हैं। उपलब्ध भूमि, सूक्ष्म जलवायु

और श्रम के प्रभावी उपयोग के ज़रिए नारियल किसानों की आय बढ़ाने के लिए अन्य फसलों की खेती सहित विभिन्न कृषि रीतियाँ अपनाना अनिवार्य हो गया है।

नारियल बागानों में खुम्बी की खेती की गुंजाइश

ओडिशा में नारियल की खेती 54,291 हेक्टर क्षेत्र में की जा रही है और वार्षिक उत्पादन 3805 लाख नारियल (2012-13) है। राज्य में नारियल की उत्पादकता धीरे धीरे बढ़कर प्रति हेक्टर 7500 फल (2012-13) पहुंच गयी है। ओडिशा के किसानों के बीच नारियल बागानों में

अन्य अंतराफसलों से भिन्न खुम्बी की खेती तेज़ी से बढ़ रही है। खुम्बी की विविध किस्मों में किसानों की पसंद पुआल खुम्बी (स्ट्रॉ मशरूम) है। पुआल खुम्बी के उत्पादन के लिए अपेक्षतया उच्च तापमान की ज़रूरत होती है जिस बजह से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में खेती के लिए यह अत्यंत उचित किस्म है। इसके अतिरिक्त, खुम्बी गेर पास्च्युरीकृत परत पर बढ़ती है। इसके लिए कम खर्चीली खेती प्रणालियों की आवश्यकता होती है। गर्मी और बारिश के मौसम में तटीय क्षेत्रों की गरम और बाष्पीले वातावरण में नारियल बागानों की छाया में अंतराफसल के रूप में मुख्यतः इसकी



खेती होती है। ओडिशा में वाणिज्यिक तौर पर साल में आठ महीने पुआल खुम्बी की खेती हो रही है। ओडिशा में प्रति वर्ष 30.5 लाख टन पुआल का उत्पादन होता है और इसका अधिकतम हिस्सा कुदरती तौर पर सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है या वर्ही पर जलाया जाता है। पुआल खुम्बी की खेती में पूँजी निवेश बहुत कम लगने के कारण बाहरी जगह पर इसकी खेती काफी लोकप्रिय होती जा रही है क्योंकि सालभर सस्ते दाम में पुआल उपलब्ध होता रहता है। राज्य में पुआल खुम्बी के उत्पादन के 60 प्रतिशत से भी अधिक इस पद्धति का योगदान है। राज्य के तटीय प्रान्तों की कृषि आर्थिकी में पुआल खुम्बी आर्थिक और पोषणिक दृष्टि से मुख्य भूमिका निभा रही है। पुरी जिले में ब्रह्मगिरि के सियारा गाँव के श्री त्रिनाथ प्रधान 2.0 हेक्टर क्षेत्र के नारियल बागान में पुआल खुम्बी की खेती कर रहा है।

नारियल बागों में पुआल खुम्बी की खेती

नारियल बागानों की सूक्ष्म जलवायु पुआल खुम्बी की सफल खेती के लिए काफी अनुकूल पाया गया है। यहाँ का तापमान और आर्द्धता क्रमशः 25-38⁰से. और 70-96 प्रतिशत के बीच होता है जो पुआल खुम्बी की खेती के लिए एकदम उचित है। यही नहीं जाड़ा भी सुहावना होता है और इसलिए फरवरी से नवंबर महीने के बीच लाभदायक तरीके से इसकी खेती की जा सकती है। पुआल खुम्बी कम अवधि (15

दिन) में उगाई जाने वाली फसल होने के कारण नारियल बाग में 10 महीने के अंतराल में 12-15 बार फसल लगायी जा सकती है।

अच्छी गुणवत्ता के धान पुआल के गट्ठरों को इकट्ठा करके दोनों सिरे काटकर 45 सें.मी. लंबाई के बनाए जाते हैं और छ: घंटे के लिए 2% कैलशियम कार्बोनेट घोल में भिगोए जाते हैं। गट्ठर निकालकर परत की नमी 65% बरकरार रखते हुए अतिरिक्त पानी निकाला जाता है और 1.5'x 1.5'x 1.5' (लंबी x चौड़ी x ऊँची) की क्यारियाँ तैयार की जाती हैं। परत के सूखे भार के 3 प्रतिशत के रूप में प्रत्येक बीज और जैव संयोज्य की अपेक्षाएं मानकीकृत की गयी हैं। 1:1:2 अनुपात में बीजाई और जैव संपूरण के लिए क्यारियाँ तीन परतों में तैयार की जाती हैं। क्यारियों के सबसे ऊपर पुआल की पतली परत बिछाकर पॉलिथीन शीट से ढका जाता है। फुई की उपशाखा निकलने और सस्य भाग विकसित होने के लिए अनुकूलतम तापमान (25-38⁰ से.) बनाए रखने में यह सहायक होता है। सिरा निकलने के बाद पॉलिथीन शीट हटाया जाता है, आवश्यकतानुसार पानी दिया जाता है। 14-15 दिनों में पहले विकसित खुम्बियों से फसल कटाई की जाती है और उसके बाद एक बार फिर पॉलिथीन कवर से ढक दिया जाता है। दूसरी बार विकसित खुम्बियों से दूसरी फसल कटाई 21-22 दिनों में की जाती है। इसप्रकार तैयार की गई एक क्यारी से 15 प्रतिशत

जैविक क्षमता के साथ तकरीबन एक किलोग्राम उपज प्राप्त होती है।

ढाँगरी (ऑइस्टर) खुम्बी की खेती

प्ल्यूरोट्स प्रजाति की ढाँगरी खुम्बी जाड़े के महीनों में याने नवंबर से फरवरी तक नारियल बागों में उगायी जा सकती है। ढाँगरी खुम्बी की खेती के लिए उचित तापमान 20-30⁰से. और आर्द्धता 80-85 प्रतिशत है जो नारियल बागों में उपलब्ध होता है। पोलिथीन बैग, नाइलोन नेट, बास्केट, शेल्फ, ट्रे आदि कई प्रकार के कंटेनरों का उपयोग करके सबसे अधिक सैलूलोज़िवाले फार्म अपशिष्टों से ढाँगरी खुम्बी की खेती की जा सकती है। इसका बीज बहुत जल्दी बढ़ता है और खुम्बी की पहली फसल लगभग तीन हफ्तों में ली जा सकती है। राज्य में प्रमुख रूप से ग्रे ऑइस्टर मशरूम (प्ल्यूरोट्स सजोर-काजु), सफेद ऑइस्टर (पी.फ्लोरिडा), पिंक ऑइस्टर मशरूम (पी.इयस) और नीला ऑइस्टर मशरूम (हाइप्सिज़ाइगस अल्मेरियस) की खेती की जाती है। पिंक ऑइस्टर के आकर्षक रंग और अच्छी स्वाद एवं महक के कारण लघु उद्योग, अर्ध शहरी और शहरी इकाइयों के बीच में इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

पुआल का गट्ठर 1.5-2.0 इंच आकार में काटकर इसके कड़ापन के अनुसार साफ और ठंडे पानी में 12-16 घंटे तक भिगोया जाता है। काटे गए टुकड़े को भाप में एक घंटे तक रोगाणुमुक्त

किया जाता है और परत में 65 प्रतिशत नमी बरकरार रखते हुए अतिरिक्त पानी सुखाने के लिए बिछाया जाता है। बोतल से बीज निकाल कर चार भागों में बाँटा जाता है, समानतया उबाला गया गेहूँ भी चार भागों में बाँटा जाता है। पुआल के टुकड़े को बैग में 6 इंच मोटाई में कसकर भरा जाता है। खुम्बी के अंकुर आसानी से निकलने के लिए बीज और उबले गेहूँ को (दोनों का एक एक भाग) बाहरी सतह पर डाला जाता है और पोलिथीन बैग का ऊपरी भाग बाँधा जाता है। गैस के आवागमन के लिए बैग के चारों ओर साफ कील से 10-20 छेद डाला जाता है। माइसिलिया की वृद्धि के लिए बैग को 15 दिनों तक अंधेरे में इंक्युबेट किया जाता है। इसके बाद माइसिलिया मैट को पोलिथीन बैग से हटाकर रैकों में टाँका जाता है। दूसरे दिन से बैगों को पानी दिया जाता है ताकि परत की नमी बनाई रखी जा सके। बीजाई के 20-25 दिनों के बाद छोटे अंकुर निकलने लगते हैं और 3-4 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। 7-10 दिनों के अंतराल में 3-4 बार खुम्बी की कटाई की जाती है। एक बैग से कुल 1.5 कि.ग्रा.-2 कि.ग्रा. उत्पाद प्राप्त होता है। इसकी जैव क्षमता 100 प्रतिशत होती है। ढाँगरी खुम्बी की अत्यधिक उच्च (100 प्रतिशत) जैविक क्षमता होती है और इसकी निधानी आयु पुआल खुम्बी से अधिक होती है। इसकी

उत्पादन लागत कम है, पर फसलन चक्र (45 दिवस) थोड़ा लंबा है। यही नहीं फसलोत्तर प्रसंस्करण के लिए भी यह उपयुक्त है, तथापि राज्य में इसकी मांग कम है।

नारियल बागों में खुम्बी की खेती की अर्थिकी

खुम्बी की खेती लाभदायी उद्यम है और पुआल खुम्बी के $1.5' \times 1.5' \times 1.5'$ आकार की एक क्यारी पालने के लिए तकरीबन 50 रुपए खर्च होता है और यदि प्रति क्यारी कम से कम 800 ग्राम खुम्बी की उपज प्राप्त होने पर भी प्रति क्यारी से कुल 14 रुपए का मुनाफा मिलता है (यदि प्रति किलोग्राम 80 रुपए के न्यूनतम भाव पर बेचे तो)। मात्र नारियल की खेती किए जाने वाले एक हेक्टर क्षेत्र में 50 प्रतिशत भूमि अंतरास्स्थन के लिए उपलब्ध होती है। यहाँ पर पुआल खुम्बी की तकरीबन 5000 क्यारियाँ आसानी से पाली जा सकती हैं। इससे एक महीने में एक फसल चक्र से 70,000 रुपए का कुल लाभ प्राप्त होता है। यदि मार्च से अक्तूबर तक कम से कम छः फसल उगा लें तो कुल मुनाफा 3,50,000 रुपए हो जाता है। इसी प्रकार से, नवंबर से फरवरी के दौरान ढाँगरी खुम्बी की कम से कम दो फसल उगाने से कम से कम 1000 ग्राम उपज प्राप्त होने पर भी प्रति बैग 30 रुपए के खर्च के साथ प्रति किलोग्राम 40 रुपए की बिक्री दर पर 12000

ढाँगरी खुम्बी बैगों से 1,20,000 रुपए का कुल मुनाफा कमाया जा सकता है।

सियारा गाँव का किसान श्री त्रिनाथ प्रधान जो 2.0 हेक्टर नारियल बागों में साल में तीन बार पुआल खुम्बी उगा रहा है, पाँच हजार पुआल खुम्बी क्यारियों से वार्षिक तौर पर 4.5 लाख रुपए की अतिरिक्त कमाई प्राप्त कर रहा है। भुवनेश्वर में कार्यरत एआईसीआरपी ऑन मशरूम एंड पाम्स नारियल बागों में खुम्बी उगाने के लिए तकनीकी जानकारी प्रदान करके किसानों को समर्थन दे रहा है।

खुम्बी स्वास्थ्यपूर्ण आहार और संभावनापूर्ण न्यूट्रास्यूटिकल है। ओडिशा में प्रचुर मात्रा में कृषीय अपशिष्ट, श्रमशक्ति और उचित जलवायु उपलब्ध होने के कारण खुम्बी की खेती की काफी अधिक गुंजाइश हैं। राज्य के तटीय जिलों के नारियल बागानों में खेती की गुंजाइश बढ़ाकर खुम्बी का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। देशी और निर्यात बाजार में गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की बढ़ती मांग है। आगे यह भी महत्वपूर्ण है कि खेती में उपयोग करने के बाद बचे खुम्बी परतों का खाद या केंचुआ खाद बनाने के लिए वाणिज्यिक तौर पर उपयोग किया जाए तो अतिरिक्त आय कमाने के साथ साथ बागों में कृषि अपशिष्टों का समुचित पुनर्चक्रण भी संभव हो जाएगा।

चीन के हाइनान द्वीप से नारियल का नज़ारा

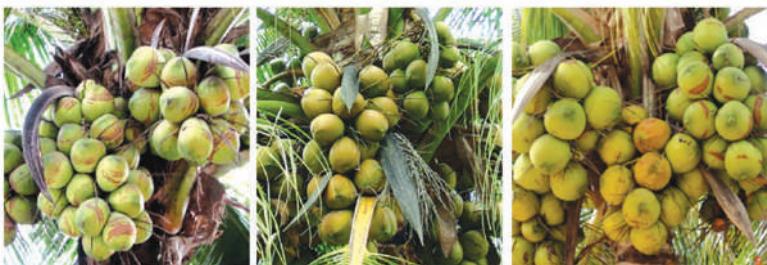
प्रमोद पी.कुरियन व डी.एस.रश्मि (सहायक निदेशक), अरुण पॉल (तकनीकी अधिकारी), नाविबो



अत्यंत जोश और उत्साह के साथ हम (प्रमोद पी.कुरियन, सहायक निदेशक, रश्मि डी.एस., सहायक निदेशक, अरुण पॉल, तकनीकी अधिकारी) चाइनीज़ अकादमी ऑफ ट्रॉपिकल अग्रिकल्चरल साइंसेस (CATAS) द्वारा “दक्षिण पैसिफिक द्वीपीय देशों के लिए उष्णकटिबंधीय फसल रोपण प्रौद्योगिकी -2015” पर आयोजित 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 14 अक्टूबर 2015

को चीन को रवाना हुए थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रायोजन पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के वाणिज्य मंत्रालय ने किया था। चूंकि प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने की अनुमति आखिरी पल में प्राप्त हुई थी, हमारे पास तैयारी के लिए बिलकुल भी वक्त नहीं था। फिर भी हमने काफी उत्सुकता से चीन में नारियल की खेती के बारे में जानकारियाँ इकट्ठी कीं। बात सुनकर हमारे कई सहकर्मी और दोस्त हमसे यही सवाल कर रहे थे

कि चीन में नारियल? अंत में काफी उत्सुकता के साथ आधी रात को हम हाइनान द्वीप पहुंचे। वहाँ से आगे की सफर में हमने सड़क के दोनों तरफ का नज़ारा विस्मयभरी नज़रों से देखा। हाइनान एक ऐसा द्वीप था जहाँ नारियल पेड़, आम के पेड़, केला और रबड़ के पेड़ उगाए जाते हैं। केला, कसावा और रबड़ के बड़े बड़े बाग वहाँ नज़र आ रहे थे। वहाँ की आबोहवा भी केरल के समान थी सिवाय यह कि सबेरे वहाँ



चीन की नारियल अनुसंधान संस्था द्वारा विकसित उच्च पैदावारवाली नारियल किस्में काफी ठंड होता है। कभी कभी दिन के समय सूरज की कड़ी धूप भी बर्दाशत नहीं होती थी।

चीन में हम ने जितने भी दिन बिताए, उन दिनों में चीन और चीन के लोगों के बारे में हमारा जो नज़रिया था वह बदल गया। वहाँ जीवन के हर मोड़ पर हुई प्रौद्योगिकीय तरक्की देखकर हैरान रहे हम। अच्छी तरह अनुरक्षित सड़कें, नारियल पेड़ों और फूलों के बगीचों से सुंदर सजे सार्वजनिक स्थान और पगड़ियाँ विशेषतया सराहने योग्य हैं। हमें इस बात की भी हैरानी हो रही थी कि लोग कितने सख्ती से ट्रैफिक नियमों का अनुपालन कर रहे हैं। सार्वजनिक परिवहन हेतु वहाँ पर बस सुविधा उपलब्ध है जिसका पूरा का पूरा संचालन मात्र ड्राइवर करता है। ड्राइवर के पास रखे बॉक्स में बस का किराया डाला जाता है। वाणिज्यिक स्थानों में मुस्कराहट भरे चेहरे के साथ बिक्री कार्यकारी हमारा स्वागत करते हैं। हम निस्संदेह यह कह सकते हैं कि बुनियादी सुविधाओं के विकास में चीन काफी आगे निकल चुका है। चीन में भारतवासी “इंडस” नाम से जाना जाता है। चूँकि चीन के आम लोग अंग्रेजी में माहिर नहीं हैं, अनुवादक के बिना बाहर घूमना मुश्किल पड़ रहा था।

हमारे साथ प्रशिक्षण के लिए थाईलैंड, नाइजीरिया, समोआ, टोंगा और श्रीलंका से भी प्रशिक्षणार्थी आए थे। 19 प्रशिक्षणार्थियों की टीम कृषि से जुड़े विविध क्षेत्रों से थी। प्रशिक्षण के अधिकांश सत्र कोकनट रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीआरआई), चाइनीज अकादमी ऑफ ट्रॉपिकल साइंसेस में संपन्न हुए थे। उनका अनुसंधान मुख्यतः उष्णकटिबंधीय तिलहन फसलों और नारियल, तेल ताड़, कैरेलिया तेल ताड़, खजूर, सुपारी और मूँगफली सहित ताड़ वर्ग पौधों पर केंद्रित था। पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के कृषि मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कोकनट रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीआरआई) कार्य कर रहा है। हमने यह भी देखा कि सीआरआई जननद्रव्य स्रोतों के नूतन उपयोगीकरण, उच्च पैदावार देने वाली किस्मों के लिए खेती प्रौद्योगिकीयाँ

विकसित करने, मुख्य कीटों और रोगों के प्रकोप को रोकने और नियंत्रित करने के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने, उत्पाद प्रसंस्करण का समग्र उपयोगीकरण, जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान और अन्य बुनियादी एवं प्रायोगिक बुनियादी अनुसंधान पर ज़ोर दे रहा है। पूरे देश में व्याप्त चाइनीज अकादमी ऑफ ट्रॉपिकल अग्रिकल्चरल साइंसेस के अंतर्गत 14 प्रायोगिक अनुभाग हैं जिनमें 3000 कर्मचारी कार्यरत हैं।

जाड़े का मौसम काफी तीव्र होने के कारण द्वीप के कई जगहों के अधिकांश नारियल पेड़ शीतकालीन क्षति का शिकार हुए हैं। यहाँ तक कि सीआरआई प्रांगण में स्थित ताड़ भी इससे भिन्न नहीं थे। उन ताड़ों को भी पर्याप्त रूप में खाद या पानी नहीं मिल रहे थे। हमारा विचार यह है कि वहाँ पर नारियल मुख्य रूप से सजावटी फसल के रूप में पाला जा रहा है। पेड़ दार पथ बनाए रखने के लिए 7 से 8 साल के पेड़ों को उखाड़कर वहाँ पर नए पौधे लगाए जाते हैं। इन ताड़ों को लकड़ी के पट्टे का सहारा दिया जाता है। हमें बताया गया कि प्रचंड



नाविबों के अधिकारीगण वाणिज्य मंत्रालय, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के पदाधिकारियों के साथ

तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान मिट्टी के संरक्षण के लिए इसप्रकार का रोपण सहायता करता है।

भले ही नारियल के अधीन क्षेत्र और उत्पादन में चीन काफी पीछे है तो भी सीआरआई नारियल क्षेत्र में अनुसंधान के लिए विशेष ध्यान दे रहा है। बीजफलों के प्रापण का तरीका भी हमारे से भिन्न है। वहाँ दो तरह की नर्सरीयाँ हैं, मुख्य नर्सरी में बीजफलों का अंकुरण किया जाता है और दूसरी नर्सरी किसानों को बीजपौधे वितरित करने के लिए बनाई रखी जाती है। मुख्य नर्सरी में सूरज की रोशनी नियंत्रित करने के लिए छाएदार जाल लगाया गया है। चौरस क्यारी में रेत और सड़े हुए नारियल रेशे भरे जाते हैं जो तिरछी सतह पर रखा जाता है और ब्लॉक से अलग किया जाता है। रोपण से पहले बीज नारियल की आँख में छोटा सा काट डाला जाता है। 15 दिनों में एक बार अंकुरित बीजपौध मुख्य नर्सरी से दूसरी नर्सरी में अंतरित किया जाता है। जब पौध 10-11 महीने का हो जाता है दूसरी नर्सरी से किसानों को बीजपौध वितरित किया जाता है। इस विधि से यह सुनिश्चित किया जा सकता

है कि मात्र गुणवत्तापूर्ण बीजपौध ही किसानों तक पहुँचता है। नारियल विकास बोर्ड के अधीन कार्यरत प्रबीउ फार्म इस विधि का प्रयोग कर सकते हैं।

33210 वर्ग किलोमीटर व्याप्त हाइनान द्वीप में नारियल पेड़ काफी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। किंतु जाड़े में होने वाली क्षति और समुचित प्रबंधन



काँच के ऐन्डेंट में रखा लाल ताड़ घुन की कमी की वजह से वे उत्पादकता में काफी पीछे हैं। मावा नाम की किस्म एक हद तक जाड़े की क्षति को झेलती है। चीन में नारियल की खेती के मुख्य खतरे हैं ब्रॉन्टिस्पा लॉन्जिसिमा, लाल ताड़ घुन, गैंडा भूंग जैसे कीट और तना स्ववरण, कलिका विगलन, फल सड़न, पत्ता सड़न आदि जैसे रोग।

सीआरआई में जाड़े की क्षति सहनशील किस्मों को विकसित करने

पर अनुसंधान चलाया जा रहा है। हाइनान प्रान्त में नारियल पत्ता भूंग (ब्रॉन्टिस्पा लॉन्जिसिमा) का प्रकोप बार बार होता रहता है। हमें नारियल पत्ता भूंग से लड़ने में मददगार लाभकारी कीट टेट्रास्टिचस ब्रॉन्टिस्पे और एसकोडस हिप्पिनेरम के प्रजनन और बाग में इसका विमोचन देखने का मौका मिला। लाल ताड़ घुन के खिलाफ फिरोमोन जालों का भी प्रयोग किया जाता है। अन्य एकीकृत प्रबंधन प्रणालियाँ भारत में प्रयुक्त विधियों के समान ही है। खुशकिस्मती से नारियल पत्ता भूंग हमारे नारियल क्षेत्र के मुख्य खतरों में शामिल नहीं है। यह भूंग नारियल की उत्पादकता अत्यधिक कम होने का कारक बन सकता है। यह भूंग और इसके लार्व नारियल पत्तों के मुलायम ऊतक खा जाते हैं जिससे पत्ते मुर्झाने लगते हैं। इसके फलस्वरूप नारियल की उत्पादकता में कमी आती है। नारियल पत्ता भूंग को हमारे देश में प्रवेश करने से रोकने के लिए आवश्यक उपाय अपनाने की ज़रूरत है।

मन में रुचि उत्पन्न करने वाला दूसरा विषय नारियल से बनी दस्तकारियाँ थीं। चीन के बाज़ारों में ये प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यहाँ तक कि नारियल पर



चीन के सुपरमार्केटों में नारियल उत्पाद

आक्रमण करने वाले कीट भी दस्तकारियों के रूप में बाज़ार में उपलब्ध थे। फिरोमोन जालों से पकड़े जाने वाले कीटों को काँच के लोलक में डालकर बाज़ार में बेचे जाते हैं, यह देखकर हैरान रहे हम।

भले ही चीन नारियल के अधीन क्षेत्र के हिसाब से पीछे रह गया है, तो भी नारियल की खपत और मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों के निर्माण में किसी से कम नहीं है। नारियल दूध, विभिन्न प्रकार के नारियल पाउडर, नारियल भरे स्नैक्स, कोको और चाय मिश्रित नारियल दूध पाउडर, महकदार नारियल दूध पाउडर, नारियल टॉफी आदि हाइनान के सूपर मार्केटों में भरा पड़ा है। हमें हाइनान आइलैंड नामक नारियल दूध पाउडर उत्पादन इकाई का दौरा करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ नारियल दूध को नारियल ज्यूस कहा जाता है। विविध फल रस और नारियल पानी मिश्रित नारियल ज्यूस का जायका लेने का भी हमें मौका मिला। आम, अन्नास और पपीता का रस मिश्रित नारियल दूध के लिए विदेशी बाज़ारों में बहुत बड़ी मांग है। नाटा डि कोको मिश्रित नारियल दूध के लिए भी उपभोक्ताओं के बीच बड़ी मांग है। हालांकि नारियल के अधीन खेती के क्षेत्र यहाँ पर कम है, फिर भी इस द्वीप में तकरीबन 200 छोटी नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ हैं। इन इकाइयों के लिए आवश्यक नारियल मलेशिया और वियतनाम से आयातित किए जाते हैं।

हमें स्पाइस एंड बिवरेज इंस्टिळ्यूट, ट्रॉपिकल क्रॉप्स जनटिक रिसोर्स सेंटर, ट्रॉपिकल बेंजिटेबल रिसर्च सेंटर,

बोटैनिकल गार्डन एंड कसावा रिसर्च स्टेशन जैसे चाइनीज अकादमी ऑफ ट्रॉपिकल अग्रिकल्चरल साइंसेस के अधीन कार्यरत अनुसंधान केंद्रों का दौरा करने और वहाँ की खेती विधियाँ जानने का मौका भी प्राप्त हुआ था। इन संस्थानों के अधीन विकसित अवसंरचनात्मक सुविधाएं गज़ब की थीं। सभी अनुसंधान केंद्रों का अपना अलग उत्पाद विकास केन्द्र हैं, जहाँ से उत्कृष्ट गुणवत्ता के मूल्यवर्धित उत्पाद विकसित होते हैं। अनुसंधान केंद्रों के अंदर ही बिक्री केंद्र भी मौजूद हैं जहाँ से इन उत्पादों की बिक्री की जाती है।

प्रशिक्षण सत्र का हिस्सा स्वरूप हम ने कोको, काली मिर्च, वैनिला, गुलाब, एन्थूरियम, आर्किड आदि की उत्पादन प्रौद्योगिकियों के बारे में अपनी जानकारियाँ भी ताज़ा की। खेती विधियों में आधुनिक तकनीकों का अनुसरण करने के कारण कृषि क्षेत्र में हो रहे विकास काफी विस्मयभरी था। ग्रीन हाउसों में टमाटर, तरबूजे आदि की खेती की जाती है जिसका पूरा नियंत्रण कंप्यूटर द्वारा किया जाता है। चूँकि इन फसलों की खेती बहुत बड़े क्षेत्र में की जा रही है, विसिटरों को छोटे ट्रैम में इन केंद्रों का सैर कराया जाता है। इसका पैदल चक्कर काटना असंभव था।

चाहे फसल कोई भी हो, वे बड़े पैमाने पर इसकी खेती के लिए उपयुक्त स्थान खोज निकालते हैं और इसके निकट ही एक प्रसंस्करण इकाई भी स्थापित करते हैं। इससे इन उत्पादों के लिए अच्छा बाज़ार और बेहतर दाम सुनिश्चित होती है।

डॉ. शकील अहमद भाप्रसे ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया



डॉ. शकील अहमद भाप्रसे ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वे 1995 बैच के असम के डर के अधिकारी हैं।

चीन की अन्य फसलों की तुलना में नारियल को प्रमुख वाणिज्यिक फसल के रूप में नहीं माना गया है। देश में उत्पादित नारियल का उपयोग मुख्यतः घरेलू प्रयोजनों के लिए होता है और प्रसंस्करण इकाइयों के लिए आवश्यक नारियल दूसरे देशों से आयातित किए जाते हैं। सीआरआई ने पूरे देश में नारियल खेती फैलाने के लिए आवश्यक उपाय अपनाए हैं। शायद इसी बजह से ही वे भारत के साथ सहकारिता बनाना चाहते हैं क्योंकि भारत नारियल की खेती, उत्पादन और मूल्यवर्धन में इस देश से बहुत आगे हैं।

एफओसीटी प्रशिक्षण प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा में-एक झलक

बिलीच दान बाड़ा

प्रभारी सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा

नारियल विकास बोर्ड के वेगिवाड़ा स्थित प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म की स्थापना सन् 1998 के अगस्त माह में हुई थी। फार्म का कुल क्षेत्र 71.80 हेक्टर है। फार्म का मुख्य उद्देश्य है गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्रियों के उत्पादन के अलावा सूचनाओं का संग्रह और राज्य की जनता के हित के लिए नारियल खेती और प्रक्रमण की उन्नत तकनीकी के प्रदर्शन के द्वारा उनका विस्तार करना। यह फार्म इलुरु शहर से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वेगिवाड़ा गाँव से लगभग साढ़े तीन किलोमीटर के अंदर है। आवश्यक सुविधाओं के अभाव के बावजूद नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाड़ा ने पिछले साल फ्रेंड्स ऑफ कोकोनट ट्री प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया।

उद्देश्य

इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य था नारियल फल तोड़ने, डाब तोड़ने, शिखर की सफाई करने, कीट-रोगों के लिए दवा छिड़कने, नीरा उत्पादन एवं नारियल संकरण कार्य के लिए कुशल मज़दूर तैयार करना। इन सब कामों के लिए पेड़ पर चढ़ना ज़रूरी होता है। अभी इस तरह के मज़दूरों का अभाव है। इस कमी को पूरा करने के लिए 80 स्थानीय बेरोजगार युवा-युवतियों को शामिल करके 6 दिनों का प्रशिक्षण शुरू किया गया। वेगिवाड़ा की स्थानीय सरपंच श्रीमती नीता पुंजी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

ताड़ारोही प्रशिक्षण

प्रशिक्षण की अवधि छः दिन की थी। एक बैच में प्रायः 20 युवा-युवतियाँ

होते हैं। नारियल पेड़ पर चढ़ने के पहले उन्हें कसरत करना पड़ता है। सबसे पहले यह सिखाया जाता है कि मशीन को पेड़ पर कैसे बाँधा जाता है। इसके तार को पेड़ के नीचे क्रोसाकार घुमाकर रखा जाता है और दोनों ओर हुक में फँसाया जाता है। फिर स्कू को लगाते हैं। जब दोनों मशीन पेड़ पर बंध जाए तो पहले बाएं पैर को दिए गए पेडल में फँसाकर खड़े हो जाते हैं। जब पेड़ पर बाएं मशीन टिक जाए तो दाएं हैंडल को हाथ से ऊपर किया जाता है। बारी बारी से दाएं और बाएं हैंडल को हाथ से और पैडल को पैर से ऊपर की ओर किया जाता है। नीचे उतरने के लिए भी यही प्रक्रिया दोहराई जाती है। हाथ और पैर दोनों की सहायता से मशीन को धकेलना पड़ता है। ज़मीन पर उतरने के पहले स्कू को ढीला किया जाता है।



नारियल पेड़ पर चढ़ने का प्रशिक्षण पा रही महिला प्रशिक्षणार्थी



प्रशिक्षण के दौरान कसरत करते प्रशिक्षणार्थी



विशेषज्ञ सैद्धांतिक कक्षा चलाती हुई



प्रबोड फार्म, वेगिवाड़ा के प्रभारी सहायक निदेशक श्री बिलोच दान बारा प्रशिक्षण के बारे में जानकारी देते हुए

सैद्धांतिक प्रशिक्षण

उन्हें नारियल खेती, बैंकिंग, बचत एवं सुरक्षा, शारीरिक क्षमता के विकास का व्यावहारिक और सैद्धांतिक शिक्षण भी दिया गया। सैद्धांतिक प्रशिक्षण में नारियल खेती की उन्नत तकनीकी के

आकर इस ट्रेनिंग का रिकॉर्डिंग किया एवं प्रशिक्षण के बारे में साक्षात्कार भी लिया। स्थानीय पत्रिकाओं और चैनलों में इसका वर्णन एवं प्रसारण भी किया गया। महिलाओं का योगदान इस प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण था।

प्रशिक्षणार्थियों को मुफ्त प्रशिक्षण, मुफ्त खाना, मुफ्त ताड़ारोहण यंत्र, एक साल के लिए मुफ्त केरा सुरक्षा इंश्योरेंस और प्रमाण-पत्र दिया गया।



प्रशिक्षणार्थी प्रमाणपत्र और नारियल पेड़ पर छढ़ने की मशीन प्राप्त करते हुए

बारे में जानकारी दी गई। व्यावहारिक प्रशिक्षण में नारियल में संकरण के लिए उपयुक्त फूल का चुनाव, नर फूल काटना, मादा फूल में पराग कणों का छिड़काव, नारियल बागान में किए जाने वाले कार्यों का प्रदर्शन आदि शामिल हैं। उन्हें सकारात्मक सोच के विषय भी बताया गया। टी वी मीडिया के लोगों ने



सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा किए प्रशिक्षणार्थी

कोकोनट ओलिम्पिक

प्रशिक्षण के अंत में पुरुष एवं महिला दोनों का कोकोनट ओलिम्पिक हुआ। उन्हें मशीन बाँधना था, नारियल की चोटी छूकर ज़मीन पर आना था, पुनः मशीन खोलकर निश्चित जगह पर रखना था। स्टोप वाच की सहायता से समय रिकार्ड किया गया। समारोह में सभी

रोज़गार के अवसर

प्रशिक्षण के बाद वे अपनी जीविका खुद चला सकते हैं। प्रति पेड़ 20 रुपए मिलने पर भी दिन भर में काफी कमाया जा सकता है। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल आदि राज्यों में नारियल के बागान बहुत हैं जिसमें सूखे नारियल पत्तों, फूलों आदि को निकालकर शिखर की सफाई, फल तुड़ाई, संकरण आदि काम होते हैं।

गैंडा भृंग कीट का प्रबंधन

जोसफ राजकुमार ए., चंद्रिका मोहन और कृष्णकुमार वी.

आईसीएआर-सीपीसीआरआई, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम, कृष्णपुरम-690 533, केरल, इंडिया

नारियल एक बहुउपयोगी फसल है जो देश के 1.2 करोड़ से भी अधिक लोगों को जीविका सुरक्षा प्रदान करता है। पुराने और अनुत्पादक ताड़ों की बहुलता के साथ साथ खेतों में वैज्ञानिक प्रबंधन प्रणालियाँ नहीं अपनाने और खराब कृषि प्रणालियों से नारियल की उत्पादकता में कमी आई है। इस समस्या को सुलझाने के लिए अनुत्पादक और गंभीर रूप से रोगग्रस्त ताड़ों को काट निकालकर उच्च पैदावार देने वाले और कीट रोधी किस्मों से बागों का पुनरुज्जीवन किया जा रहा है। हालांकि आज के दौर में नारियल के मूल्यवर्धन पर ज़ोर दिया जा रहा है, फिर भी इसका बेहतर फायदा मात्र तभी उठा सकता है जब तक कि अच्छी उपज के साथ ताड़ का स्वास्थ्य बरकरार रहता है। नारियल बागों को सफलतापूर्वक लगाने और अनुरक्षण हेतु मुख्य उपाय ताड़ का स्वास्थ्य प्रबंधन है। कुछ मामलों में, मुख्य खेतों में बड़ी संख्या में नारियल बीजपौधों के विशेषतया बौने या संकर बीजपौधों का रोपण करने वाले किसान बीजपौधों को लगाने में गंभीर समस्याओं का सामना करते हुए असफल रहे हैं। कई बागों में नारियल बीजपौधों की बाढ़ में असफलता की दर 40-45 प्रतिशत रिपोर्ट की गई है। यह इस बात का सूचक है कि समस्याओं को समझने और इससे निपटने के लिए



गैंडा भृंग शिखर के अंदर प्रवेश करते हुए



गैंडा भृंग प्रकोपित नारियल पौध



निवारणात्मक उपाय निकालने हेतु गहरे अंतरावलोकन की ज़रूरत है। आईसीएआर-सीपीसीआरआई में आयोजित अध्ययनों से पता चला है कि नारियल बीजपौधों के गर्दनी क्षेत्र से गैंडा भृंग (ओरिक्टस रिनोसेरस लिन.) का घुसना और बढ़ते कोंपल को खा जाना इस नुकसान का मुख्य कारण है। इसके प्रकोप के प्रमुख कारण हैं: नारियल बागों के आसपास अवशिष्ट पाटना,

जहाँ अंडा डालने के लिए भृंग आकर्षित होता है क्यों कि वयस्क भृंग सड़ी हुई जैव खाद पर अंडा देना पसंद करता है और बीजपौधों का रोपण सट कर या छाएदार परिस्थितियों में करना। नारियल बीजपौधों को कम रोशनी वाली जगहों और कम दूरी में रोपण करने से कीटों को आकर्षित करने वाले बाष्पशील पदार्थ प्रसारित होता है जो कीटों को बीजपौधों की ओर आकर्षित करता है।

अपशिष्ट पाटना

जैव अवशिष्ट सहित ठोस कूड़े-कचरे के निपटारे पर ध्यान देना ज़रूरी है क्यों कि यदि बाग में स्वच्छता नहीं बनाए रखे तो वयस्क मादा भृंग अंडा डालने के लिए आकर्षित होता है। किसानों को इसलिए सलाह दी जाती है कि जैव अपशिष्ट और ठोस कूड़ा-कचरा खेत में संचित होने न दें क्यों कि यह भृंगों को बाग की ओर आकर्षित करता है। नारियल पत्तों से बीजपौधों को पलेवा नहीं लगाना चाहिए क्योंकि सड़ने वाले पत्ते भृंगों को भोजन हेतु बीजपौधों की ओर आकर्षित करता है।

रोशनी और जगह की कमी

नारियल के पुनरुज्जीवन कार्यक्रम में कम ध्यान प्राप्त एक प्रमुख समस्या है 7×7 मीटर से कम दूरी में नया रोपण करने से अधिक संख्या में बीजपौधों की मौजूदगी। इसप्रकार कम दूरी पर पौध लगाने से उत्पन्न बाष्पशील संकेत भृंगों को भोजन के लिए आकर्षित करता है। पर्याप्त मात्रा में रोशनी न मिलने पर



कीट प्रकोप से गिरे शिखर

इसकी तलाश में बढ़ता तर्कु पत्ता विकृत हो जाता है और फलस्वरूप पीलापन का शिकार हो जाता है। बढ़ते ताड़ के लिए पर्याप्त मात्रा में रोशनी नहीं मिलने का मतलब है प्रकाशसंश्लेषण क्षमता में कमी जिसके फलस्वरूप बीजपौध कमज़ोर हो जाते हैं। प्रायः निकटतम दूरी पर रोपण करने से बागों में सूक्ष्मजलवायु बना रहता है जो गैंडा भृंग के प्रकोप और अन्य रोगप्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। अतः बीजपौधों के रोपण के समय समुचित दूरी (लंबे और संकर पौधों के लिए 7.5×7.5 मीटर; बौने पौधों के लिए 7×7 मीटर) बनाए रखने पर ध्यान देना चाहिए।

गैंडा भृंग को छोटे ताड़ों के बढ़ते तर्कु पत्ते पर या फलदायी ताड़ों के पुष्पक्रमों पर छेद डालकर खाने वाले मुख्य कीट के रूप में रिपोर्ट किया गया है जिसके फलस्वरूप पुष्पक्रम सूख जाता है। नारियल पौधों के गर्दनी क्षेत्र से

प्रवेश करके पौधों को नुकसान पहुँचाने के इस अनोखे तरीके से बीजपौध सूख जाते हैं, जो हाल में पुनरुज्जीवन कार्यक्रम से संबद्ध नारियल किसानों के सामने उठ रही गंभीर समस्या है। इन परिस्थितियों में, बढ़ता तर्कु पत्ता विकृत होकर हाथी के दाँत के आकार जैसा रोगलक्षण दर्शाता है। कई मामलों में, किसान ऐसे बीजपौधों/ छोटे ताड़ों को जड़ से उखाड़ देता है क्योंकि इसका बढ़वार विकृत हो जाता है या रुक जाता है। कभी कभी गैंडा भृंग से होने वाला नुकसान घातक बन जाता है और बीजपौध के बढ़वार पर इसका असर पड़ता है जिसके फलस्वरूप मुख्य खेत अच्छी तरह नहीं लगाया जाता है। एक ही बीजपौध पर बारबार भृंग का प्रकोप प्रायः ध्यान में आया है जिसका कारण यह है कि घाव भरते समय निर्गमित गंध से भृंग आकर्षित होता है। यह भी रिपोर्ट किया गया है कि खाने की प्रक्रिया के दौरान गैंडा भृंग द्वारा रोगकारक कीटाणुओं का भी प्रसार



भृंग बीजपौध के अन्दर



बढ़वार बिंगड़ा बीजपौध

होता है। रोगग्रस्त भाग का यदि समुचित उपचार नहीं करें तो यह बीजपौधों का बढ़वार बिंगड़े का दूसरा कारण बन सकता है।

उचित आकार का ($1 \times 1 \times 1$ मीटर) गड्ढा बनाना, सही रोपण विधि अपनाना, रोपण करते समय पुराने और खराब जड़ों को हटाना, पर्याप्त रोशनी और जगह देते हुए सामयिक संरक्षण पर ध्यान देना, खेतीगत प्रक्रियाएं जैसे पानी देना, पोषकतत्वों का प्रयोग आदि हर निर्णायक स्थिति में करने से बढ़वार



कीटनाशी सैशे

अच्छी बनती है। बढ़वार के पहले चरण के दौरान बीजपौधों को नारियल पत्तों से पर्याप्त छाया देना गर्मी के मौसम में कड़ी धूप से पौधों को बचाने के लिए उत्तम है।

कीट प्रकोप के लक्षण

वयस्क भृंग बीजपौधों के गर्दनी क्षेत्र से आक्रमण करता है जिसके फलस्वरूप पौधा मुझ्जा जाता है। छोटी आयु के ताड़ों के तर्कु पत्ते को नुकसान पहुंचाने के साथ साथ यह लाल ताड़ घुन के प्रवेश के लिए भी रास्ता खोलता है और पुष्टक्रम के मूलभाग में छेद डालने से पुष्टक्रम सूख जाता है। $1.5-2.0$ वर्ष आयु के नारियल बीजपौध गंभीर रूप से भृंग के आक्रमण का शिकार हो जाता है, खासतौर पर जून-सितंबर की अवधि के दौरान। बाहर छोड़े डिम्बमल या चबाए गए रेशे से इसके प्रकोप का पता चलता है। वयस्क भृंग सभी जगह पाए जाते हैं और सड़े हुए जैव अपशिष्टों पर अंडे डालते हैं। सूँड़ी और प्यूपे उसी अपशिष्ट में रहते हैं और गाद के गड्ढे से वयस्क भृंग बाहर आता है और भोजन के लिए नारियल पेड़/बीजपौधों की ओर उड़ जाता है।



मेटाराइंजियम अनिसोप्लिये से प्रकोपित सूँड़ी

प्रबंधन रणनीतियाँ

आईसीएआर-सीपीसीआरआई, केरल कृषि विश्वविद्यालय, नाविबो आदि की मान्यता प्राप्त नर्सरियों से ही बीजपौध प्राप्त करें। अधिकांश मामलों में कमज़ोर पौधों का रोपण करने से पौध अच्छी तरह बढ़ता नहीं है और इनमें कीटप्रकोप भी अधिक होता है। स्थापना के प्रारंभिक चरण के दौरान नारियल पत्तों से बीजपौधों का पलवेंा न करें और पौध की दोनों तरफ हल्दी के दो प्रकंद लगाने से कीट प्रकोप कम होता पाया गया है। बाष्पशील संकेतों के सीमित निर्गम के लिए पर्याप्त रोशनी के साथ समुचित दूरी पर (लंबे और संकर पौधों के लिए 7.5×7.5 मीटर; बौने पौधों के लिए 7×7 मीटर) पौधों का रोपण करके कीट प्रकोप नियंत्रित किया जा सकता है। अधिक संख्या में सटकर रोपण करने से कीट प्रकोप अधिक होता है। बीजपौधों के तर्कु पत्ते या गर्दनी क्षेत्र पर धाव है या नहीं इसका नियमित अनुवीक्षण करते रहें। गर्दनी क्षेत्र या किसी पर्ण कक्ष में चबाए गए रेशे पाए जाए तो भृंगों को हुक से निकालें। 100 ग्राम नीम खली /मरोट्रिट खली/करंजा खली तुल्य मात्रा में रेत के साथ बीजपौधों के सबसे



अधपके चावल में मे. अनिसोप्लिये

ऊपर के पर्ण कक्षों में भर दें। तीन साल बाद पर्ण कक्षों में भरने वाले मिश्रण की मात्रा बढ़ाकर 250 ग्राम करें। मानसून के दौरान सबसे ऊपर के दो पर्ण कक्षों में नेपथ्यलीन गोलियाँ रखना और क्लोरन्ट्रनिलिप्रोल (3ग्राम) या फिप्रोनिल (3 ग्राम) निहित छिद्रित सैशे रखना भी कीटों को मार भगाने के लिए प्रभावी पाया गया है। सूखे के दौरान सैशे रखने के बाद इसके ऊपर 100 मि.ली. पानी उडेलना अणु छुड़ाने के लिए उत्तम है। खाद के गड्ढों में क्लोरोडेन्ड्रॉन इनफोर्मेटम खरपतवार मिलाने से लार्वा-प्यूपा का बढ़ावार

अपसामान्य हो जाता है और होर्मोन के व्यवधान के कारण वयस्क भृंग का सामान्य विकास नहीं होता है। आईसीएआर-सीपीसीआर आई ने अवयस्क अवस्था में ही कीटों को मारने के लिए 5×1011 बीजाणु/मी³ की दर पर प्रजनन स्थानों में हरी मस्कार्डिन फूँद मेटाराइज़ियम एनिसोप्लिए का प्रयोग करने का किफायती और किसान अनुकूल तरीका विकसित किया है। वर्तमान में, खेतों में प्रयोग हेतु प्रति घन मीटर 100 ग्राम की दर पर जैव खाद या वर्मी कंपोस्ट के गड्ढों में अध पके चावल आधारित माध्यम में मेटाराइज़ियम

एनिसोप्लिए का प्रवर्धन किया जाता है। कृषक सहभागिता और महिला ग्रूप प्रणाली से यह प्रौद्योगिकी अपनाने से लंबी अवधि के लिए कीटों के जैविक नियंत्रण पर सामुदायिक तरीके से ज़बरदस्त असर पड़ा है।

नारियल पौधों के रोपण के प्रारंभिक अवस्था से ही इन प्रौद्योगिकियों को समग्र रूप से अपनाने से नारियल पौधों का बढ़वार अच्छा होगा और बीजपौधों का विकास भी बेहतर होगा। नारियल खेती में जैव खुशहाली लाने के लिए नारियल का समुचित देखभाल अत्यंत ज़रूरी है।

संसदीय राजभाषा समिति ने नारियल विकास बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों का निरीक्षण किया

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने 03 सितंबर 2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूरु में संपन्न बैठक में बोर्ड की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की समीक्षा की। डॉ.सत्यनारायण जटिया, संसद सदस्य (राज्य सभा) उप समिति के उपाध्यक्ष और डॉ.प्रसन्न कुमार पाटसाणी, संसद सदस्य (लोक सभा) संयोजक थे। समिति सदस्य श्री गोकाराजू गंगाराजू, श्री लक्ष्मी नारायण यादव और डॉ.सुनील बलीराम गायकवाड़ संसद सदस्य (लोकसभा) बैठक में उपस्थित थे। सुश्री अभिलाषा मिश्रा, हिन्दी अधिकारी और श्री निखिल अरोड़ा, वरिष्ठ अनुवादक, संसदीय राजभाषा समिति भी बैठक में उपस्थित थे।



राजभाषा निरीक्षण बैठक का दृश्य

डॉ.एस. के.मल्होत्रा, बागवानी आयुक्त, डॉ.रमेश आर्या, संयुक्त निदेशक (रा.भा.), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने बैठक में भाग लिया। बोर्ड की तरफ से निदेशक डॉ.टी.आई.मात्युकुट्टी, उप निदेशक श्री हेमचंद्रा, सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती बीना.एस, तकनीकी

अधिकारी सुश्री सिमी थॉमस और आशुलिपिक श्री केशवमूर्ति उपस्थित थे। डॉ. टी.आई. मात्युकुट्टी ने राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियों पर समिति के प्रश्नों के उत्तर दिए। हिन्दी प्रकाशनों और राजभाषा के प्रभावशाली कार्यान्वयन के लिए बोर्ड द्वारा हासिल की गई पुरस्कारों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।



“कृषक उत्पादक संगठन और छत्तीसगढ़ में नारियल का टिकाऊ विकास” पर रायपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी संपत्र आगामी बजट में नारियल की खेती के लिए प्रावधान रखेंगे - छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री

“छत्तीसगढ़ के आगामी बजट में नारियल की खेती के लिए 1 करोड़ रुपए का प्रावधान रखेंगे और राज्य के जिन जिन जिलों में नारियल की खेती की जा सकती है उन्हीं जिलों में ज्यादा भूमि खेती करने के लिए उपलब्ध कराएंगे”, छत्तीसगढ़ के माननीय कृषि मंत्री श्री बृज मोहन अग्रवाल ने बताया। नारियल विकास बोर्ड, उद्यानिकी विभाग, छत्तीसगढ़ शासन और इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में रायपुर में अक्टूबर 2015 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी “कृषक उत्पादक संगठन और छत्तीसगढ़ में नारियल खेती का

टिकाऊ विकास” का उद्घाटन कर रहे थे कृषि मंत्री। उन्होंने बताया कि हमारे देश में आदि-अनादिकाल से लोग नारियल की महत्ता को जानते हैं। छत्तीसगढ़ में नारियल का औसत उत्पादन देश के कई अन्य राज्यों से अधिक है। यहाँ नारियल की खेती को बागान के रूप में अपनाया जा सकता है। लेकिन इसके लिए लोगों के बीच जागरूकता पैदा करनी चाहिए। किसानों को नारियल की खेती करने में प्रशिक्षण देना अत्यंत आवश्यक है। किसानों को नारियल की खेती की ओर आकर्षित करना चाहिए।

उन्होंने फिर बताया कि नारियल की मांग कभी भी कम नहीं हो जाएगी। नारियल के पानी की मांग भी स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़ रही है। बस्तर संभाग के भीतरी इलाकों के स्कूल के विद्यार्थियों को नारियल की खेती करने में प्रशिक्षण देना आवश्यक है। उन्होंने आगे बताया कि अगर नारियल विकास बोर्ड योजना बनाएँगे तो आनेवाले 10 सालों में छत्तीसगढ़ को नारियल की खेती में आत्मनिर्भर बना देंगे। छत्तीसगढ़ की जनता से उन्होंने यह भी आह्वान किया कि भगवान को खुश करने के लिए और अपनी आर्थिक उन्नति के लिए



कोंडागाँव के माननीय विधायक श्री मोहन मरकाम अध्यक्षीय भाषण देते हुए नारियल की खेती करना आवश्यक है। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड से सर्वे कराकर क्षेत्रानुसार रिपोर्ट मांगी है ताकि बस्तर क्षेत्र में नारियल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्य योजना बनाई जा सके। उन्होंने यह भी घोषणा की कि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय परिसर में एक एकड़ में नारियल बाग लगाया जाएगा।

कोंडागांव के विधायक श्री मोहन मरकाम ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि बस्तर संभाग का जलवायु नारियल

की खेती के लिए उपयुक्त है इसलिए यहाँ नारियल के उत्पादन में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने आगे राज्य सरकार से अनुरोध किया कि बजट में बस्तर संभाग में नारियल खेती के विकास के लिए प्रावधान रखें।

संगोष्ठी में विशेष भाषण देते हुए रायपुर के आदरणीय महापौर श्री प्रमोद दुबे ने बताया कि रायपुर शहर में 76000 एकड़ से ज्यादा



जमीन पड़ी हुई है। दस एकड़ की जमीन पर नारियल की खेती की शुरुआत हो सकती है और इसके नगर निगम को आमदनी भी हो सकती है।

संगोष्ठी में विशेष भाषण देते हुए डॉ.एस के. पाटील, कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय ने बताया कि



छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में ज्यादा ठंड नहीं पड़ता है और वातावरण में नमी बनी रहती है, इसलिए छत्तीसगढ़ में नारियल की खेती की बड़ी संभावना रहती है। उन्होंने यह भी सूचित किया कि विश्वविद्यालय ने केरा बस्तर नामक नारियल की किस्म विकसित की और इसका उपयोग महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के हिस्सों में भी किया जा रहा है। प्रति वृक्ष सौ से भी ज्यादा नारियल इससे मिल रहे हैं। उन्होंने साथ ही बताया कि विश्वविद्यालय ने एक नई किस्म भी



सभा का दृश्य

ईजाद की है और इसमें 200 से 300 के लगभग नारियल प्रति पेड़ प्राप्त किए जा सकेंगे। प्रायोगिक तौर पर यह सफल हो चुका है और कुछ वर्षों के इंतज़ार के बाद किसानों को उपलब्ध कराए जा सकेंगे।

संगोष्ठी में विषय प्रवेश करते हुए श्री सुगत घोष, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड ने

बताया कि छत्तीसगढ़ में अभी 1500 हेक्टर में नारियल की

खेती की जा रही है। परंतु खेती की संभावनाएं यहाँ ज्यादा है। इसलिए खेतीगत भूमि बढ़ायी जानी चाहिए। उन्होंने कृषक उत्पादक संगठन गठित करने पर भी ज़ोर दिया और बताया कि कृषक उत्पादक संगठन गठित करने से नारियल किसानों के लिए खेती का खर्च कम हो जाएगा और अपने उत्पाद के लिए ज्यादा दाम भी मिल जाएगा, क्योंकि खेती करने के लिए अपेक्षित सामग्री किसान एकसाथ



खरीद कर सकते हैं और उत्पाद इकट्ठा करके एक साथ बेच भी सकते हैं। नारियल का मूल्यवर्धन भी कृषक उत्पादक संगठनों के जरिए आसानी से हो सकता है और इसके लिए वित्तीय संस्थाओं से सहायता प्राप्त करना भी आसान हो जाएगा। नारियल पेड़ पर चढ़ने में और नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण पा लेने से रोज़गार के अवसर भी बढ़ जाएंगे।

बोर्ड की हिन्दी पुस्तिका “छत्तीसगढ़ में नारियल की खेती” का विमोचन कृषि मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल के करकमलों से संपन्न हुआ। संगोष्ठी में बोर्ड के निदेशक डॉ जी.आर सिंह ने सभा का स्वागत किया और सहायक निदेशक श्री आर.एस सेंगर ने धन्यवाद प्रकट किया।



उद्घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र संपन्न हुआ। तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञों ने नारियल उद्योग के विविध पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए। बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष तकनीकी सत्र के अध्यक्ष रहे। पहले तकनीकी सत्र में डॉ. जी आर सिंह, निदेशक, नाविबो, बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली ने नारियल विकास बोर्ड की योजनाओं पर लेख प्रस्तुत किए। बोर्ड द्वारा सीधे और संबंधित राज्य सरकारों के साथ कार्यान्वित की जा रही योजनाओं के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया।

डॉ. रवि प्रकाश, रजिस्ट्रार, पीपीवी एवं एफआरए, नई दिल्ली ने नारियल की विविध किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण विषय पर प्रस्तुति की। डॉ.सलाम, वैज्ञानिक, ताड़ों पर अधिकल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, झंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय ने बस्तर में नारियल की खेती पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री एन.एस.कुशवाहा, सहायक संचालक, उद्यानिकी विभाग,



छत्तीसगढ़ में नारियल खेती विषयक पुस्तिका का विमोचन

डॉ. सुगत घोष, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो सेवानिवृत्त हुए

डॉ. सुगत घोष, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड 31 अक्टूबर 2015 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। वे इस पद पर दिसंबर 2012 से कार्यरत थे।

डॉ. सुगत घोष ने ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से पादप रोगविज्ञान में स्नातकोत्तर एवं पीएचडी उपाधि हासिल की। डॉ घोष ने 1979 में टी बोर्ड में अपना करियर शुरू किया था। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड में 1986 में उप निदेशक के पद पर



कार्यभार ग्रहण किया और उसके बाद निदेशक की हैसियत से बोर्ड के विविध कार्यालयों में कार्य किया। उन्होंने फरवरी

2014 एवं जुलाई 2014 में माइक्रोनेश्या एवं श्रीलंका में एशियन एंड पर्सिफिक कोकोनट कम्प्यूनिटी (एपीसीसी) द्वारा आयोजित कोकोटेक सत्रों में बोर्ड का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने बोर्ड का प्रतिनिधित्व मार्च 2015 के दौरान थाइलैंड में संपन्न नारियल तेल पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी किया। वे एपीसीसी के तकनीकी वर्किंग ग्रूप के अध्यक्ष थे। उन्होंने बोर्ड के विभिन्न योजनाओं के निर्माण और देश में उसके कार्यान्वयन में अत्यधिक समर्थन दिया था।

छत्तीसगढ़ शासन ने नारियल खेती की गुंजाइश पर आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे तकनीकी सत्र में श्री एस.एस.चोयल, सहायक निदेशक, नाविबो, कोची ने भारत में नारियल प्रसंस्करण उद्योग और छत्तीसगढ़ में इसकी संभावनाएं-नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन नारियल के मूल्यवर्धन के लिए सहायता विषय पर प्रस्तुति की। उन्होंने नारियल से बनते मूल्यवर्धित उत्पादों का संक्षिप्त परिचय देने के साथ इसके उत्पादन की इकाइयाँ स्थापित करने के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत बोर्ड द्वारा दी जा रही

वित्तीय सहायताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

श्री आर. एस. सेंगर, सहायक निदेशक, नाविबो, प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव ने नारियल क्षेत्र में कृषक उत्पादक संगठन पर आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने त्रिस्तरीय कृषक उत्पादक संगठनों के गठन, इसकी अहमियत, कृषक उत्पादक संगठनों के ज़रिए भविष्य की गतिविधियाँ आदि पर चर्चा की।

श्री बिलीच दान बाड़ा, सहायक निदेशक, नाविबो, प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा ने नारियल की बढ़िया रोपण सामग्रियाँ और नारियल बागों के लिए उचित अंतरा

फसलें विषय पर प्रस्तुति की। तकनीकी सत्र के समापन के बाद संपन्न परिचर्चा एवं विचार-विमर्श में बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष ने किसानों के सवालों का जवाब दिया। छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और असम से तकरीबन 300 से अधिक किसानों ने संगोष्ठी में भाग लिया। उद्यानिकी विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर और नारियल विकास बोर्ड के पदधारी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सायंकाल 5.00 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ।



अरबी की उन्नत खेती

अरबी की सब्जी को आम आदमी से लेकर पंच सितारा होटलों तक पसंद किया जाता है। अरबी के कंद काबॉहाइड्रेट व पोषक तत्वों से भरपूर एवं अति स्वादिष्ट सब्जी के रूप में जानी जाती है। अरबी के पत्तों में लोहा तथा कैल्शियम बहुतायत मात्रा में मिलता है। इनके पत्तों को भी स्वादिष्ट साग व पकोड़े आदि बनाने के काम में लिया जाता है। किसान वैज्ञानिक तकनीक से अरबी की खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

अरबी दो तरह की होती है। एक किस्म को अरबी तथा दूसरे को बण्डा कहते हैं। इसकी खेती पूरे भारत में की जाती है। धुर्इया या अरबी में चिड़चिड़ाहट पायी जाती है और यह पकाने के बाद खत्म हो जाती है।

जलवायु और भूमि

अरबी नम स्थानों पर अधिक उगाई जाती है लेकिन शीतोष्ण एवं सम-शीतोष्ण जलवायु इसकी खेती के लिए अच्छी मानी जाती है। यह उत्तर में पहाड़ी एवं मैदानी दोनों ही क्षेत्रों में उगाई जा सकती है जहाँ पानी का भराव नहीं होता है। अरबी की खेती उपजाऊ बलुई दोमट भूमि में अच्छी होती है तथा भारी मिट्टी में भी इसकी खेती की जा सकती है। लेकिन जल निकास का अच्छा प्रबंध होना चाहिए। जिस भूमि का पी.एच.5.5 से 7 के बीच में होता है वहाँ पर भी इसकी खेती की जाती है।

अरबी की उन्नतशील प्रजातियाँ

अरबी की बहुत सी प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिसमें सतमुखी, श्रीरश्मी तथा

श्री पल्लवी प्रजातियाँ उन्नतशील हैं। इसके साथ ही सफेद गोरैया, काका काचू, पंचमुखी, एन.डी.सी. 2, एन.डी.सी. 3, सहर्षमुखी, कदमा, मुक्ताकाशी, नदिया लोकल, अहिना लोकल, तेलिया इसके साथ ही सी. 9, सी. 135, सी. 149, सी. 266, एस 3, एस 11, पंजाब, गोरैया बिहार, फैजाबादी, बंसी, लधरा प्रजातियाँ भी अच्छी पाई गई हैं।

खेत की तैयारी

खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से की जानी चाहिए। बाद में तीन चार जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करके खेत को भुरभुरा करके समतल बना लेना चाहिए। आखिरी जुताई में सड़े गोबर की खाद 100 से 150 किंवद्वि प्रति हेक्टर के हिसाब से मिला देना चाहिए।

बुवाई का समय एवं तरीका

बुवाई के लिए मध्यम आकार के कंदों को चुनना चाहिए। प्रति हेक्टर के लिए 7.5 से 9.5 किंवटल का बीज लगाता है।

उत्तर भारत में अरबी की दो बुवाई की जाती है। गर्मी में मार्च से अप्रैल तक कंदों की बुवाई या रोपाई की जाती है। खरीफ या बरसात में तथा पहाड़ों में जून से जुलाई तक कंदों की बुवाई या रोपाई की जाती है। इसकी बुवाई लाइनों में करनी चाहिए। लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर एवं 6 से 7 सेंटीमीटर गहराई पर कंदों की बुवाई या रोपाई करनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग

खाद एवं उर्वरक में 80 कि.ग्राम नन्त्रजन, 60 कि.ग्राम फोसफोरस एवं

60 कि. ग्राम पोटैश तथा साथ में 100 से 150 किंवटल सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करता है। खेत की तैयारी के समय आधी मात्रा नन्त्रजन तथा पूरी मात्रा फोसफोरस एवं आधी मात्रा पोटैश देना चाहिए। इसके बाद आधी मात्रा नन्त्रजन और पोटैश दो बार खड़ी फसल में देना चाहिए। पहली बार 7 से 10 अंकुर निकलने पर तथा दूसरी बार इसके एक माह बाद खाद देनी चाहिए। प्रत्येक बार खाद देने के बाद मिट्टी चढ़ाना अति आवश्यक है।

सिंचाई

बुवाई के एक दिन बाद ही 3.3 लीटर पेंडामेथलिन का स्पे 700 से 800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टर की दर से कर देना चाहिए। इसके एक दिन बाद ही पलेवा लगाना चाहिए। पलेवा लगाने से खरपतवारों का नियंत्रण भी होता है। पलेवा हटाने के बाद

आवश्यकतानुसार एक या दो निराई-गुड़ाई करते हुए पौधों पर मिट्टी चढ़ानी चाहिए। इसमें कंद अच्छे बनते हैं जिससे पैदावार अच्छी होती है।

रोग एवं नियंत्रण

अरबी में लीफ ब्लाइट या पीथियम (pythium) गलन बीमारी लगती है। लीफ ब्लाइट के नियंत्रण हेतु डाइथेन एम 45 का 8 से 10 ग्राम

प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। इसके साथ ही रोगरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए। पीथियम के नियंत्रण हेतु किसी फफूँद नाशक से भूमि शोधन करना चाहिए तथा रोगरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए।

कीट एवं नियंत्रण

अरबी में लीफ हापर तथा लीफ ईंटर कीट लगते हैं। लीफ हापर के नियंत्रण हेतु एक प्रतिशत बी.एच.सी. डस्ट का छिड़काव करना चाहिए। लीफ ईंटर के नियंत्रण हेतु लेड अर्सिनेट का छिड़काव करना चाहिए।

फसल की खुदाई

अरबी की जड़ों की खुदाई का समय जड़ों के आकार, जाति और जलवायु पर निर्भर करता है। जब फसल की पत्तियां पौली होकर ज़मीन पर गिरने लगे उस समय खुदाई करनी चाहिए। यह स्थिति लगभग 120 से 150 दिनों के बाद आती है।

उपज

फसल की उपज प्रजातियों के आधार पर होती है। लेकिन सामान्य रूप से 160 से 200 किंवटल प्रति हेक्टर उपज प्राप्त होती है।

भंडारण

अरबी की गाँठों को ऐसे कमरे में रखना चाहिए जहाँ गर्मी न हो। गाँठों को कमरे में फैला दें। गाँठों को कुछ दिनों के अंतराल में पलटाते रहना चाहिए। सड़ी हुई गाँठों को निकालते रहें। इस प्रक्रिया से मिट्टी भी झड़ जाती है। आवश्यकतानुसार बाज़ार में बिक्री के लिए भी निकालते रहें। कहीं कहीं अरबी को सुखाने के बाद स्वच्छ बोरों में भरकर भंडार गृह में रखा जाता है।

साभार: kisanhelp.in

वर्जिन नारियल तेल

**बाइ बैक व्यवस्था के साथ
नवीनतम प्रौद्योगिकी से निर्मित
आयातित मशीनरी**

संपर्क करें:

एस.जगन मोहन राव
9841024816,

एन.एस.मणि - 944991341

ई-मेल: jmexports123@gmail.com

नारियल बागों में मासिक कार्य

जनवरी से मार्च तक

अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह जनवरी

ताड़ों की सिंचाई करें। सिंचाई की आवृत्ति और पानी की मात्रा मृदा की किस्म और सिंचाई की विधि आदि पर निर्भर है।

फरवरी

अलाभदायी और जीर्ण पेड़ों को काट दें और बागों से कचरा निकाल दें। बाग की निराई करके साफ रखें। नर्सरी को सिंचित करें। ताड़ों की सिंचाई जारी रखें। नियमित रूप से फल प्राप्त होने वाले और वार्षिक पैदावार सौ फल से कम न होने वाले चयनित मातृताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें।

मार्च

नर्सरी की सिंचाई जारी रखें। मातृ वृक्षों से बीजफल इकट्ठा करना शुरू करें। बुआई के पहले करीब एक महीने तक बीजफल रेत में सुरक्षित रखें। खरपतवार निकालकर और अनावश्यक पेड़ों को काट निकाल कर नई रोपाई के लिए ज़मीन की तैयारी करें।

कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया है तो पत्तों के निचले तल पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरोस से छिड़काव करें। जब तक पीड़क की संख्या कम नहीं हो जाती तब तक पीड़क की अवस्था के अनुरूप 15 दिन के अंतराल में उपयुक्त परजीव्याभाँ को छोड़ दें। यदि रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया है तो मित्रकीटों को

तीन हफ्ते के बाद ही छोड़ देना चाहिए, नहीं तो वे मर जाएंगे। इसका निवारणोपाय

अज्ञाडिरेक्टिन प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर छिड़काव करें या 7.5



कृष्णशीर्ष इल्ली

अपनाने के पहले सबसे बाहर के गंभीर रूप से प्रकोप वाले और सूखे पत्तों को काटकर जलाना चाहिए।

ऑँड्रप्रदेश

जनवरी

ताड़ों के शिखर को साफ करें। पत्ता भक्षक इल्ली से पीड़ित पत्तों को काटकर जला दें। गैनोडेर्मा मुझ्झा रोग का पता लगाएं और पौधे के थालों को कैलिक्सिन 5 प्रतिशत या 1 ग्राम ऑरियोफंगिन + 1 ग्राम कोपर सल्फेट 5 लीटर पानी में घोलकर तैयार किए गए ऑरियोफंगिनसोल से शराबोर कर दें। वही उपचार 15 दिन बाद भी करें। रोगग्रस्त ताड़ को उसके चारों तरफ गहरा गड़दा खोदकर अलग कर दें। रोगग्रस्त ताड़ों के सबसे निकट स्थित स्वस्थ ताड़ों का भी उपरोक्त घोल से इसी प्रकार से उपचार करें ताकि रोग फैलने से रोक सकें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो नीम तेल-लहसुन-साबुन का घोल 2 प्रतिशत या

मि.लीटर की दर पर तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ के ज़रिए दें। बारिश के समय हल्के तौर से जुताई करें। ताड़ों को सींचना शुरू कर दें।

फरवरी

बागों को सिंचित करें। यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो गंभीर रूप से रोगग्रस्त 2-3 बाह्य पत्तों को काटकर जला दें। शेष पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। यदि कीटों का प्रकोप अधिक हो तो 15 दिन के अंतराल में छिड़काव फिर से करें। रासायनिक पदार्थों के छिड़काव के तीन हफ्ते बाद कीटों की अवस्था के अनुसार ताड़ों पर विशेष परजीवियों को छोड़ दें। डिभक अवस्था के लिए गोनियोज़स नेफान्टिडिस, प्यूपा पूर्व अवस्था के लिए इलास्मस नेफान्टिडिस और प्यूपा अवस्था के लिए ज़ीन्थोपिम्ला पंक्टाटा (इक्न्यूमोनिड) को छोड़ दें। परजीवियों को प्राप्त करने के लिए निकटतम परजीवी प्रजनन प्रयोगशाला से संपर्क करें।

मार्च

पेड़ों के शिखरों पर भृंग अंकुश द्वारा गेंडा भृंग की तलाश करें और भृंगों को मार डालें। पेड़ के भीतरी तीन पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें। खाद के गड्ढों में 0.01 प्रतिशत कार्बोरिल का छिड़काव करें। सिंचाई जारी रखें। चुनिंदा बागों से चुने हुए मातृ वृक्षों से बीजफल इकट्ठा करें।

यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो मित्रकीटों को छोड़ दें। अगर पेड़ों पर शल्क कीटों का प्रकोप पाया जाता है तो 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें।

असम

जनवरी

सिंचाई जारी रखें। ताड़ के चारों तरफ निराई गुडाई कर दें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करते रहें और इसे छायेदार शुष्क जगह पर भंडारण करें। नारियल बागों में तालाब की गाद डालें। पौदों के प्रतिरोपण के लिए 8मी. x 8मी. के अंतराल में 1 मी x 1 मी x 1मी आकार के चौकोर गड्ढे खोदें।

फरवरी

बागों की सिंचाई करें। चयनित मातृताड़ों से फल इकट्ठा करना जारी रखें और नारियल पानी का सूख जाना रोकने के लिए उपयुक्त भंडारण तरीका अपनाएं। पौदों के प्रतिरोपण के लिए 8मी. x 8मी. के अंतराल में 1मी x 1मी x 1मी आकार के चौकोर गड्ढे खोदें। गड्ढों के 40 सें.मी. तक भाग खाली

छोड़ते हुए ऊपरी मृदा, 500 ग्राम रोक फोसफेट, 50 किं.ग्रा. सूखा गोबर/कम्पोस्ट खाद आदि के मिश्रण से 60 सें.मी. ऊँचाई तक भरें। दीमकों के आक्रमण से बचने के लिए 100 ग्राम 10 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस का प्रयोग करें। कलिका विगलन, तना स्ववण या गेंडाभृंग और लाल ताड़ धुन जैसे पीड़कों के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ों के शिखर को साफ करें और यदि पहले नहीं किया गया हो तो रोगरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। यदि तना स्ववण पाया जाए तो तने के रोगग्रस्त ऊतकों को निकाल दें और घाव पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा तब गरम कोलतार लगाएं। रोगग्रस्त ताड़ों को हर तीन महीने बाद जड़ों के ज़रिए प्रति ताड़ 5 मि.ली. कैलिक्सिन 100 मि.ली.पानी में दें। उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ 5 किं.ग्रा. नीम खली प्रति वर्ष प्रति ताड़ दें। बारिश के मौसम में उचित जलनिकासी की ओर गर्मियों के दौरान सिंचाई की व्यवस्था करें।

मार्च

गैनोडेर्मा रोग से ग्रस्त पेड़ों के नीचे से 2 मीटर की दूरी पर एक मीटर गहरी और 30 सें.मी. चौड़ी खाई खोदकर उसे दूसरे पेड़ों से अलग करें। बागों से अधिक आयुवाले अनुत्पादक पेड़ों को काटकर निकालें। यदि गड्ढे जनवरी या फरवरी में नहीं खोदे गए हैं तो इस महीने खोदें और पौद रोपने के लिए गड्ढे के 60 सें.मी. तक ऊपरी मृदा + रेत + गोबर वाले गड्ढा मिश्रण से भरें। एकाध बारिश के बाद पेड़ों के चारों ओर की मृदा अच्छी तरह जोत लें। बीजफल रोपने हेतु नर्सरी क्यारियाँ बनाना शुरू करें।

बिहार/झारखण्ड/छत्तीसगढ़

जनवरी

ताड़ों के शिखरों को साफ करें। सिंचाई जारी रखें। यदि पानी की कमी हो तो ब्लाइटोक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर पर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर शिखर तथा गुच्छों पर छिड़काव करें ताकि ठंड के कारण होने वाले रोग-संक्रमण से पेड़ों को बचाया जा सके।

बिहार/झारखण्ड

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। ठंड से पड़ने वाले रोगसंक्रमण से बचने के लिए शिखरों और गुच्छों पर ब्लाइटोक्स 5ग्रा./लीटर पानी की दर पर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर छिड़काव करें। निम्नवर्ती क्षेत्रों में थाले में प्रति वर्षक ताड़ 500 ग्राम यूरिया, 1000 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 1000 ग्राम म्यूराइट ऑफ पौटेश डालकर उसे ऊपरी मिट्टी से ढक दें। बीजपौधों का सतही रोपण ऐसे क्षेत्रों में किया जा सकता है जहाँ पर भौम जल स्तर ऊँचा हो। नए रोपित बीजपौधों को छाया उपलब्ध कराने के लिए बीज पौधे से 2 मीटर की दूरी पर केले के पौधे लगाएं।

मार्च

ताड़ों की सिंचाई करें। रोगकीटों और रोगों के प्रकोप को रोकने के लिए पौधा संरक्षण रासायनिक पदार्थों का प्रयोग करें। सिंचाई चैनलों की मरम्मत करें। भूमि तैयार करें और दोनों पाश्वों से 8 मीटर अंतरण देते हुए 1मी. x 1मी. x 1मी. आकार के गड्ढे खोदें। निम्नवर्ती क्षेत्रों के बीजपौधों का पुनरोपण/प्रतिरोपण करें। यदि जल स्तर ऊंचा है तो सतही रोपण किया जा सकता है। दीमक के प्रकोप की विशेषकर छोटे पेड़ों पर, तलाश करें। दीमक के प्रबंधन के लिए मृदा में पर्याप्त नमी बनाए रखना पूर्वापेक्षित है। नर्सरी को 0.05 प्रतिशत क्लोरोपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के अंतर से भिगो दें। गैड़ा भूंग/ लाल ताड़ धुन को भगा देने के लिए पेड़ के भीतरी तीन पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें।

छत्तीसगढ़**फरवरी**

बागों को सिंचित करें। नारियल ताड़ों को उर्वरकों की तीसरी मात्रा दें। रोगकीटों से बचने के लिए पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। थालों में पलेवा करें और बागों में निराई गुड़ाई करें।

मार्च

बागों के ताड़ों, नर्सरियों और अंतरा फसलों की सिंचाई करें। पेड़ों में रोग-कीटों की जाँच करें और पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। भूमि की जुताई करें और थालों में पलेवा करें। गर्मियों में उगने वाली सब्जियों और

अन्य अंतराफसलों की रोपाई करें। नारियल ताड़ों में केंचुआ खाद का प्रयोग करें।

कर्नाटक**जनवरी**

ताड़ों को नियमित रूप से सिंचित करें। द्रप्स प्रणाली के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 60-70 लीटर पानी दिया जाए। सिंचित अवस्था में उपयुक्त अंतराफसलें उगाएं। यदि पर्ण चित्ती रोग पाया जाता है तो पत्तों पर एक प्रतिशत बोडों मिश्रण से छिड़काव करें। यदि ताड़ पत्ता भक्षी इल्लियों से पीड़ित हैं तो गंभीर रूप से रोगग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें। पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत मैलाथियॉन या 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरोव्हास से छिड़काव करें। बाग में उपयुक्त अवस्था के परजीवियों को छोड़ें। रोगपीड़ित क्षेत्रों में रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया हो तो 15 दिन बाद ही परजीवियों को छोड़ दें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा दें। बारानी स्थिति में भूमि की जुताई करें और खरपतवारों को निकाल दें।

फरवरी

बागों की सिंचाई करें। द्रप्स सिंचाई के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 60-65 लीटर पानी दें। गैड़ा भूंग के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ के शिखरों को साफ करें और सबसे ऊपर के 3 पर्णकक्षों को सेविडॉल 8 जी (25ग्राम) + बारीक रेत (200 ग्राम/ताड़) से या प्रति पर्ण कक्ष 10.5 ग्राम नैफ्थलीन गोलियाँ (प्रति शिखर 3-4 गोलियाँ) बारीक रेत से ढककर 45 दिनों के अंतराल में भरें। खाद के गड्ढों और अन्य संभाव्य प्रजनन स्थानों को 0.1 प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें जो कि हर तीन महीने में दोहराना चाहिए। पर्ण चित्ती रोग से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोडों मिश्रण से छिड़काव करें। पत्ता भक्षी इल्लियों के प्रकोप से बचने के लिए एकीकृत नियंत्रण उपाय अपनाया जाए। रोगसंक्रमण पाए जाने के तुरंत बाद और बाद में 3 बार पन्द्रह दिनों के अंतराल में मित्रकीटों को छोड़ देना चाहिए। यदि रोगप्रकोप अधिक हो तो गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त निचले पत्तों को काटकर जला दें और शेष पत्तों के निचले भाग पर क्विनालफोस 0.05 प्रतिशत से छिड़काव करें। पीड़कनाशियों के छिड़काव या जड़ों द्वारा पिलाने के तुरंत बाद फसल नहीं काटनी चाहिए। उपचारित ताड़ों से फसल काटने के लिए 45 दिनों की सुरक्षित अवधि बनायी रखनी चाहिए। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किया गया घोल से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ छींटों को पड़ने



द्रप्स सिंचाई

दें। लाल ताड़ धुन के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए बाग की साफ-सफाई ज़रूरी है। पूर्ण रूप से रोगग्रस्त और जीर्ण पेड़ों को काटकर जला दें। यदि पीड़क का प्रकोप पाया जाता है तो प्रति ताड़ कार्बरिल (50 प्रतिशत) का 1 प्रतिशत घोल 1 लीटर इंजेक्ट करें। पीड़कनाशी का घोल कीप के ज़रिए इंजेक्ट करें। इंजेक्ट करने के बाद रोगग्रस्त तने के सभी छेद बंद करें। प्रति हेक्टर एक फेरोमोन फंडे से धुनों को पकड़ा जा सकता है।

मार्च

बागों की सिंचाई करें। द्रप्स सिंचाई से प्रति दिन प्रति ताड़ 70-80 लीटर पानी दें। सिंचित अवस्था में उपयुक्त अंतराफसलों की रोपाई करें। गेंडा भूंग के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ के शिखरों को साफ करें और ऊपर के तीन पर्ण कक्षों को 250 ग्राम नीम खली और महीन रेत (250 ग्रा./ताड़) के मिश्रण से भर दें। 45 दिनों के अंतराल में पर्ण कक्ष दो नैफ्थलीन गोलियों और उसके ऊपर महीन रेत से भर दें। हर तीन महीने में एक बार खाद के गड्ढों और गेंडा भूंग के संभावित प्रजनन स्थानों में 0.1

प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें। हर तीन महीने में एक बार इसे दोहराएं। पर्णचित्तियों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप को रोकने के लिए एकीकृत नियंत्रणोपाय अपनाएं। रोगकीटों का प्रकोप पाए जाने पर उपयुक्त अवस्था के मित्रकीटों को तुरंत छोड़ दें और बाद में दो हफ्ते के अंतराल से तीन बार यह दोहराएं। लंबे पेड़ों और फलोद्यानों के लिए जैविक और रासायनिक प्रणालियों का मिला-जुला प्रयोग अनुशंसित है।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरैक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीम तेल मिश्रण का छिड़काव करें। इसकी छीटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों में पड़ने चाहिए। मृदा की पौष्टिक अवस्था सुधारने के लिए ताड़ों के थालों में धाइन्चा जैसी हरी खाद फसलें उगाएं और 45 दिनों में इसे मिट्टी में गाड़ दें। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 25 कि.ग्रा. की दर पर जैव खाद डाल दें। 5 कि. ग्राम नीम की खली प्रति पेड़ प्रति वर्ष डाल दें।

केरल/लक्ष्मीप

जनवरी

छोटी पौदों और वयस्क ताड़ों को सिंचित करें। ताड़ों के शिखरों को साफ करें। बाग के सभी अधिक आयु वाले अनुत्पादक ताड़ों को काट कर निकाल दें। नियंत्रणोपाय के रूप में या तो बोर्डो मिश्रण या बाज़ार में उपलब्ध कोई दूसरा तांबा युक्त फूँदनाशी का छिड़काव जारी रखें। यदि पत्ता भक्षक इल्लियों का प्रकोप पाया जाता तो रोगग्रस्त पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत बिनालफेस से छिड़काव करें। बीजफल इकट्ठा करने के लिए मातृताड़ों का चयन करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो ताड़ के शिखर को साफ करें और नीम तेल-लहसुन-साबुन का घोल 2 प्रतिशत या अज़ाडिरैक्टिन 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से तैयार किए गए मिश्रण का छिड़काव करें या 7.5 मि.ली. अज़ाडिरैक्टिन तुल्य मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। वयस्क ताड़ों के थालों में 200-250 लीटर पानी से चार दिन में एक बार सिंचित करें। द्रप्स सिंचाई के ज़रिए 60-65 लीटर पानी दिया जाए। यदि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है तो छोटे पौधों के लिए छाया प्रदान करना, पलेवा करना और पिचर सिंचाई जैसे नमी संरक्षण उपाय अपनाएं जाएं। सभी पुराने शूकीछद, अनुपर्ण आदि जो आसानी से हाथ से खींचकर निकाल सकते हैं, निकाल कर शिखर को साफ करें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप अधिक है तो एकीकृत नियंत्रण उपाय

अपनाएं। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ मिश्रण की छींटें पड़ने दें। बीजफलों को एकत्र करना शुरू करें। सिंचित बागों में उर्वरकों की अनुशर्सित मात्रा का एक चौथाई भाग डाल दें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें। चुनिंदा मातृवृक्षों से बीजफल इकट्ठा करना जारी रखें और उन्हें ठंडे सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें। अगर बरुथी (mite) का प्रकोप



एरियोफाइड बरुथी

पाया जाता है तो नीम तेल मिश्रण 0.1 प्रतिशत एज्ञाडिरैक्टिन (नीमाज़ॉल) 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। इसकी छींटें दूसरे से पाँचवें गुच्छों में पड़नी चाहिए।

कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया है तो पत्तों के निचले तल पर 0.05 प्रतिशत किवनालफोस से छिड़काव करें। जब तक पीड़िक की संख्या कम नहीं हो जाती तब तक पीड़िक की अवस्था के अनुरूप 15 दिन के अंतराल में उपयुक्त परजीव्याख्यों को छोड़ दें। यदि रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया है तो मित्रकीटों को तीन हफ्ते के बाद ही छोड़ देना चाहिए नहीं तो वे मर जाएंगे। इसका

निवारणोपाय अपनाने के पहले सबसे बाहर के गंभीर रूप से प्रकोप वाले और सूखे पत्तों को काटकर जलाना चाहिए।

महाराष्ट्र/गोवा/गुजरात

जनवरी

मृत और सड़ी हुई चीज़ों को हटाकर ताड़ों के शिखर साफ करें। यदि फफूँदी रोग पाया जाता है तो पेड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। सभी रोगग्रस्त पत्ते काटकर निकाल दें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप अधिक हो तो, पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत किवनालफोस का छिड़काव करें। छिड़काव के 15 दिन बाद ही परजीवियों को छोड़ दें।

फरवरी

एनाबेरोगा रोग से ग्रस्त पेड़ों को काटकर नष्ट कर दें। रोगग्रस्त ताड़ों के चारों ओर खाई खोदकर ताड़ों को अलग कर दें। 5 कि.ग्राम. नीम खली प्रति ताड़ दें। यालों को 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण वाले 40 लीटर घोल से शराबोर कर दें। वयस्क ताड़ों पर तना स्ववण रोग की जाँच करें। रोगग्रस्त ताड़ों का उपचार करें। तने से रोगग्रस्त ऊतकों को निकालने के बाद 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा गरम कोलतार लगाएं। रोगग्रस्त ताड़ों को उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. नीम खली डालें। बागों की सिंचाई जारी रखें। नए रोपण के लिए 7.5 मीटर के अंतरण में गड्ढे खोदें। यदि प्रस्तुत भूमि चढ़ाई वाली हो तो कोंटूर बांध या पुश्तों का तरीका अपनाएं।

मार्च

बाग की निराई-गुड़ाई करें। खरपतवार एवं झाड़ियाँ आदि निकालकर जला दें। रोग कीटों के प्रकोप की जाँच करें और उनकी रोकथाम के लिए उचित उपाय अपनाएं। सिंचाई जारी रखें। बीजफलों को इकट्ठा करना शुरू करें।

ओडिशा

जनवरी

यदि पत्ता भक्षक इल्लियों का प्रकोप हो तो ताड़ के शिखरों को साफ करें। गंभीर रूप से रोगग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें। उसके बाद ताड़ के पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत किवनालफोस से छिड़काव करें। यदि छिड़काव किया गया हो तो रोगग्रस्त क्षेत्रों में परजीवियों को 15 दिन बाद ही छोड़ दें।

फरवरी

झाड़ियों और खरपतवार को निकाल दें। खेत तैयार करें और कंद मूल वाली फसलें जैसे अदरक, हल्दी आदि लगाएं। नारियल पेड़ों को उर्वरकों की दूसरी मात्रा दें। बागों को सिंचित करें। कयर गूदा/छिलका आदि से नारियल थालों पर पलेवा करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण का छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ मिश्रण की छींटें पड़ने दें। शिखरों को साफ करें और अन्य अनुरक्षण उपाय करते रहें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप पाया

जाता है तो रोगग्रस्त पत्तों के निचले हिस्से पर 0.05 प्रतिशत विवालफोस से छिड़काव करें। ऐसी जगहों पर जहाँ ठंड ज्यादा पड़ती है कलिका विगलन जैसे रोगों से बचने का उपाय अपनाया जाए। ऐसे मामलों में शिखरों पर ब्लाइटॉक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर पर या 2 ग्राम डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी की दर पर छिड़काव करें।

मार्च

ताड़ों की सिंचाई करें। बागों से खरपतवार निकाल दें। नमी संरक्षण के लिए सूखे नारियल पत्तों और कवर गूदे से पलवें करें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करके ठंडे और सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर तैयार किए गए 0.1 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीम तेल मिश्रण से छिड़काव करें। इस मिश्रण की छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों में पड़नी चाहिए।

नेफेन्टिस सेरिनोपा (कृष्ण शीर्ष इल्ली) से प्रकोपित पेड़ों पर 0.05 प्रतिशत विवालफोस का छिड़काव करें। अगर प्रकोप गंभीर हो तो छिड़काव 15 दिन के बाद दोहरायें। छिड़काव के पहले प्रकोपित पत्तों को काट कर जला दें ताकि आगे का प्रकोप रोका जा सके। छिड़काव के 15 दिन बाद प्रकोपित पेड़ों पर परजीव्याभों को बारी बारी से छोड़ दें। जिन पेड़ों पर परजीव्याभों को छोड़ गए हैं उन पर पीड़कनाशियों का छिड़काव न करें क्योंकि इससे ये भी मारे जाएंगे। सिंचित बागों में उर्वरकों का एक चौथाई भाग डालें।

तमिलनाडु / पुतुच्चेरी

जनवरी

ताड़ के शिखर को साफ करें। यदि जनवरी के प्रारंभ में बारिश नहीं हुई तो नियमित ग्रीष्मकालीन सिंचाई शुरू करें। तना स्वरण रोगग्रस्त ताड़ों के रोगग्रस्त ऊतकों को निकालकर कोलतार या बोर्डो लेप लगाकर उपचारित करें। तंजावूर मुर्जा से ग्रस्त ताड़ों के थालों से 2 मीटर की दूरी पर 1 मीटर गहरी और 50 सें.मी चौड़ी खाई खोदकर ताड़ों को अलग रखें। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्राम नीम खली डालें। थालों को प्रति ताड़ एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण के 40 लीटर से शराबोर करें। एक साल के लिए हर तिमाही में 100 मि.ली. कैलिक्सिन 5 प्रतिशत जड़ों द्वारा दें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदिलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या अज्ञाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

फरवरी

गर्मियों में मृदा के प्रकार के अनुरूप 4 से 7 दिनों में एक बार सिंचाई जारी

रखें। सिंचित स्थिति में उर्वरकों की अनुशासित मात्रा का एक चौथाई भाग यानी 250 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डालें। ताड़ों के शिखरों पर



गेंडा भूंग

गेंडाभूंग का पता लगाएं और भूंग अंकुश से भूंगों को मारें। ताड़ के सबसे ऊपर के 4 पर्णकक्षों में सेविडॉल 8 जी (25 ग्राम) और महीन रेत (200 ग्राम) का मिश्रण भरें। पर्णकक्षों में 12 ग्राम नैफ्थलिन गोलियाँ (लगभग 3 गोलियाँ) और उसके ऊपर महीन रेत 45 दिन के अंतराल में भरना भी बेहतर है। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ इस मिश्रण की छींटें पड़ने दें।

मार्च

यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर तैयार किया गया 0.1 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीमतेल मिश्रण से छिड़काव करें। इस मिश्रण की छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों पर पड़नी चाहिए। बुतामों और रोगग्रस्त फलों के परिदिल-पुंजों पर खास तौर से छिड़काव करना चाहिए। जब छिड़काव करना

मुश्किल हो जाता है तो जड़ों द्वारा दवा दें। इसके पहले सभी परिपक्व फलों को तोड़ लें और जड़ों द्वारा पिलाने और रासायनिक प्रयोग के 45 दिनों के बाद फलों की आगली तुड़ाई करनी चाहिए। 7.5 मि.ली. अज्ञाडिरेक्टिन 50% का 7.5 मि.ली. पानी में घोलकर जड़ों द्वारा देना चाहिए। सिंचाई जारी रखें। सूँड़ियों पर नियंत्रण पाने के लिए जैव खाद गड़दों और गैंडा भृंग के अन्य संभाव्य प्रजनन स्थानों को 0.01 प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें। चुनिंदा मातृ वृक्षों से बीजफलों को इकट्ठा करते रहें और ठंडे सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें।

त्रिपुरा

जनवरी

3-4 दिनों के अंतराल में ताड़ों को सिंचित करें। प्रत्येक ताड़ के थालों में पत्तों से पलेवा करें ताकि मृदा की नमी नष्ट होने से बचाया जा सके। थालों में पलेवा करने से पहले, दीमकों के प्रकोप से बचने के लिए 0.05 प्रतिशत क्लोरोपाइरिफोस से शराबोर कर दें। नए पौधों को तेज़ धूप से बचाने के लिए दक्षिण पश्चिम दिशा में भागिक रूप से छाया प्रदान कर दें। कलिका विगलन या पत्ता सड़न रोग से ताड़ों को बचाने के लिए एक प्रतिशत बोर्ड मिश्रण या कोई भी ताँबे के फैफूँदनाशक का छिड़काव करें।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। ताड़ों को खासतौर से छोटे ताड़ों को दीमक के आक्रमण से बचाएं। 0.05 प्रतिशत क्लोरोपाइरिफोस से 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार नर्सरी को शराबोर करना भी अनुशंसित है। महीने के दौरान पुराने और सूखे पत्तों से पलेवा करना चाहिए। यदि जनवरी में रोगों और कीटों से बचने के लिए

आवश्यक रोगनिरोधी उपाय नहीं अपनाया है तो वह अभी करें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें और सिंचाई का अंतराल प्राप्त वर्षा की मात्रा के आधार पर निश्चित करें। नियमित सिंचाई से फलदार पेड़ों के उत्पादन में सुधार आ जाएगा।

पश्चिम बंगाल

जनवरी

नारियल के फलों की तुड़ाई जारी रखें। बाग तथा नर्सरी की छोटी पौदों को सिंचित करना शुरू कर दें और छाया प्रदान कर दें। बीजफलों को एकत्रित करने के लिए मातृताड़ों का चयन करें।

फरवरी

बागों और नर्सरी की सिंचाई करें और नई रोपित छोटी पौदों के लिए छाया प्रदान करें। बोने के लिए बीजफलों को एकत्रित करें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें। मृदा की नमी संरक्षण क्षमता के अनुसार हफ्ते में दो बार थालों में 200 लीटर पानी दें। यदि द्रप्स सिंचाई अपनाई हो तो प्रति दिन प्रति ताड़ 70 से 80 लीटर पानी दें। नए रोपित बीजपौधों को अच्छी तरह से छाया प्रदान करें। नमी संरक्षण के लिए नारियल छिलका, हरे पत्ते, सूखे नारियल पत्ते आदि की 3 से 4 परतों से या 6 इंच की मोटाई में थालों में क्यर गूदे से पलेवा करें।

परिपक्व फलों की तुड़ाई करें। नियमित रूप से फलदायी और कम से कम वार्षिक पैदावार 100 फल से न कम वाले चुनिंदा मातृ ताड़ों से बीज फल इकट्ठा करें। इकट्ठे किए गए फलों



कलिका विगलन रोग से प्रकोपित नारियल पेड़

का छाया में भंडारण करें। गैंडा भृंग के आक्रमण (नए तर्कु पत्तों में त्रिकोणीय आकार की कटाई) की जाँच करें। भृंग अंकुश से भृंगों को निकाल दें। ताड़ों के शिखरों को साफ करें और ताड़ के सबसे ऊपर के पर्णकक्षों को 45 दिनों के अंतराल में सेविडोल 8 जी (25 ग्राम) + महीन रेत (200 ग्राम/ताड़) के मिश्रण से भर दें। खाद के गड़दों को हर तीन महीने में एक बार 0.1 प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें। यदि कलिका विगलन रोग पाया जाए तो सभी रोगग्रस्त ऊतकों को हटा दें। घाव को बोर्ड मिश्रण या ब्लाइटॉक्स पेस्ट से उपचारित करें। शिखर पर प्रति लीटर पानी में 5 ग्राम की दर पर ब्लाइटॉक्स का या प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर डाइथेन एम 45 का छिड़काव करें। एरियोफाइड बरुथी के प्रकोप को रोकने के लिए प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.1 प्रतिशत अज्ञाडिरेक्टिन / नीमाजॉल का छिड़काव करें। छिड़काव ऊपर के पाँच गुच्छों पर करना चाहिए। 7.5 मि.ली. पानी में 7.5 मि.ली. नीमाजॉल (5 %) का घोल बनाकर बारी-बारी से जड़ों द्वारा दें। बीच की जगहों को जोतकर खरपतवार निकाल दें। अंतरा-फसल के रूप में ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ और गेंदे जैसे फूलों की कृषि करें।

पत्ताभक्षी इल्ली के नियंत्रण के लिए जैव एजंट विकसित किए गए

नारियल विकास बोर्ड के सहयोग और बागवानी अनुसंधान केंद्र, अंबाजीपेटा की तकनीकी सहायता के साथ नोवील नारियल उत्पादक कंपनी, आँध्र प्रदेश ने पत्ताभक्षी इल्ली के नियंत्रण के लिए जैव एजेंटों को विमुक्त किया। अल्लावरम मंडल में पत्ताभक्षी इल्ली का प्रकोप 2015 सितंबर में रिपोर्ट किया गया। जैव एजेंटों के विमोचन के लिए नाविबो ने 15.58 लाख रुपए मंजूर किया था। इस संबंध में 8 अक्टूबर 2015 को अल्लावरम में आयोजित बैठक में दो सौ से अधिक किसानों ने भाग लिया। बैठक में वैज्ञानिकों ने पत्ता भक्षी इल्ली के प्रकोप रोकने के लिए प्रबंधन रीतियों के बारे में संक्षिप्त रूप में बताया। इस बैठक में बागवानी अनुसंधान केंद्र के

अध्यक्ष डॉ. जी रामानंद म, डॉ एनपीवी चलपतिराव, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा पूर्व गोदावरि के एडीएच श्री श्रीनिवासुलु, नोवील सीपीएस के अध्यक्ष डॉ डी आर राजु तथा

सीपीएस/ सीपीएफ के कार्यकारी सदस्यों ने भाग लिया।

सामूहिक आधार पर पौधा संरक्षण गतिविधियाँ करने के भाग स्वरूप प्रत्येक सीपीएस द्वारा अलग टीम गठित की है तथा एलओडीपी योजना के अधीन जैव एजेंटों को बागों में छोड़ा गया। इसका उद्घाटन श्री जी रामानंदम, बागवानी



बाग में जैव एजेंटों की विमुक्ति

अनुसंधान केंद्र, अंबाजीपेटा ने किया। प्रकोपित बागों में कीट प्रकोप के विभिन्न स्तर पाए गए तथा इसके अनुसार लार्व (गोणियोज़स व ब्रेकन) तथा प्यूपीय अवस्था (ब्राकिमेरिया) परजीवियों को छोड़ा गया। कार्यक्रम के तीसरे और चौथे चरणों में बागवानी अनुसंधान केंद्र, अंबाजीपेटा जैव एजेंटों को बागों में छोड़ेंगे।

मंड्या नारियल बीजपौधों के लिए आए 10000 किसान भीड़ नियंत्रण के लिए पुलीस को बुलाना पड़ा



प्रबीउ फार्म, मंड्या में नारियल पौधे बुक करने के लिए जमी भीड़

नाविबो, प्रबीउ फार्म, मंड्या में 15 अक्टूबर, 2015 को बीजपौधे बुक करने के लिए लगभग 10000 किसानों की भीड़ लगी। किसान सवेरे से फार्म के बाहर बीजपौधे बुक करने के लिए प्रतीक्षा

अत्यधिक माँग के कारण बोर्ड को किसानों को प्रति टोकन 25 बीजपौधों की दर पर टोकन वितरित करना पड़ा। किसानों को 1600 टोकन वितरित किए गए और बीजपौधों का वितरण शुरू किया हुआ है।

नाविबो ने भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2015 में भाग लिया

नारियल विकास बोर्ड ने प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 14 से 27 नवंबर 2015 तक संपन्न भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2015 में भाग लिया।

माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने 24 नवंबर 2015 को मेले का दौरा किया। उन्होंने नाविबो स्टाल में नीरा का जाका लिया और नाविबो कियोस्क का दौरा किया तथा विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों के बारे में पूछताछ की।

बोर्ड को आईआईटीएफ में नीरा और विभिन्न मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों को उत्तर भारत में पेश करने के लिए मंच प्राप्त हुआ। विभिन्न नारियल उत्पादक



माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह नाविबो स्टाल में

कंपनियों, सूर्यशोभा, यौगिक फुड्स तथा केराटेक के पैकटबंद नारियल पानी, नारियल दूध पाउडर, नारियल दूध, नारियल चिप्स, डेसिकेटड नारियल पाउडर, वर्जिन

नारियल तेल आदि बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए गए थे। मेले का विषय मेक इन इंडिया था। लगभग 25 लाख लोगों ने मेले का दौरा किया।

अग्रिफेस्ट

COCONUT DEVELOPMENT BOARD A.I.

साथ नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य लाभों पर सूचनात्मक पोस्टर भी प्रदर्शित किए। सर्वश्री की 2 ग्रीन ने एमएसएमई भारत सरकार, बागवानी मिशन तथा उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से मेले का आयोजन किया।

रस और नेथरलैंड्स की अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों ने कृषि, बागवानी, डेरी तथा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रों के लिए आधुनिक सूक्ष्म पोषणतत्व, जैव रसायन आदि प्रदर्शित किए। नारियल विकास बोर्ड के अलावा, केंद्रीय उष्णकटिबंधीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय पेट्रोलियम अनुसंधान संघ, प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास, एसबीआई, पशुपालन, मात्स्यकी विभाग आदि ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया। किसान, कृषि विश्वविद्यालयों के छात्र, व्यापारीगण आदि लगभग 50000 आगंतुकों ने मेले का दौरा किया।



अग्रिफेस्ट में नाविबो स्टाल

नारियल विकास बोर्ड ने 6 से 12 अक्टूबर 2015 तक लखनऊ के कोल्डिन कॉलेज ग्राउंड में संपन्न कृषि, आहार, डेरी एवं कुकुटपालन पर चौथी अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया। डॉ. रजनीश गुप्ता भाप्रसे, प्रधान सचिव, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार ने 10 अक्टूबर 2015 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

नेथरलैंड्स एंबसी के कृषि काउन्सिलर श्री वूटर वेरे, कृषि उप काउन्सिलर श्री अनंद कृष्णन, प्रशासन एवं विकास निदेशक डॉ. राजेश बाबू वार्षने तथा डॉ. ए. पी. सिंह, निदेशक, रोग नियंत्रण एवं फार्मस, पशुपालन विभाग भी इस अवसर पर उपस्थित थे। नारियल विकास बोर्ड ने नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों के साथ

नाविबो ने नए नारियल उत्पादों का लोकार्पण किया

नारियल विकास बोर्ड ने 23 दिसंबर 2015 को मधुमेह हितकर नारियल कुक्कीस, फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस तथा नारियल चंक्स जैसे नवीन नारियल उत्पादों का लोकार्पण किया।

इन उत्पादों को नाविबो इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नलॉजी ने विकसित किया गया है जो नारियल विकास बोर्ड के अधीन कार्यरत अनुसंधान केंद्र है जिसका उद्देश्य खास गतिविधियों के ज़रिए नारियल के क्षेत्र में नूतनोत्पाद विकसित करना है।

बोर्ड ने नारियल और रागि, जई, मकई और गेंहु के आटे जैसे विभिन्न मिश्रणों के साथ तैयार किए गए नारियल बिस्कुट का लोकार्पण किया है। इसका उद्देश्य है स्वस्थ, पौष्टिक तथा ग्लूटन मुक्त बिस्कुट बनाना जो मधुमेह रागी भी खा सकते हैं। इन नए उत्पादों में गन्ने के शक्कर के स्थान पर नीरा शक्कर मिलाया जाता है इसलिए इनका ग्लाइसीमिक



श्री राजीव पी.जोर्ज, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड नवीन नारियल उत्पादों का लोकार्पण करते हुए

इंडेक्स कम है जो मधुमेह हितकर है।

ग्लूटन मुक्त आहारक्रम में कोलेस्ट्रॉल स्तर सुधरना, पाचन स्वास्थ्य संवर्धन तथा ऊर्जा स्तरों में बढ़ाव आदि बहुत सारे स्वास्थ्य लाभ हैं।

शक्कर मिलाकर निर्जलीकृत नारियल चंक्स खाने के लिए तैयार रूप में है। यह बनाने की तकनीकी जानकारी नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था में उपलब्ध है।

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था द्वारा विकसित नया उत्पाद फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस बड़े पैमाने पर पिस्ता, चोकलेट, कोफी, रोस तथा आम फ्लेवरों में तैयार किए गए हैं।

पोल्लाची कोकोनट प्रोड्यूसर कंपनी को फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस के वाणिज्यिक विकास की परियोजना सौंपी गई है। नारियल विकास बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री राजीव पी जॉर्ज ने उत्पादों का लोकार्पण किया।

5 वाँ ग्लोबल इकोनोमिक समिट 2015

नारियल विकास बोर्ड ने वाणिज्य एवं उद्योग तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग के साथ वर्ल्ड ट्रेड सेंटर द्वारा 19 से 21 नवंबर 2015 तक आयोजित 5 वाँ ग्लोबल समिट में भाग लिया।

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर असोसियेशन, न्यूयोर्क के अध्यक्ष श्री गाज़ी अबु नाल ने ग्लोबल समिट का उद्घाटन किया। भारत के अलावा तीस देशों के कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र, सरकारी कर्मचारी टेक्नोक्राट, कृषि विशेषज्ञ, किसान संगठन आदि मेले में भाग लिए।



बोर्ड के स्टाल का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड ने पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, डेसिकेटड नारियल पाउडर, वर्जिन नारियल तेल आदि विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद प्रदर्शित किए। बोर्ड के स्टाल में सर्वश्री केराटेक, केरल तथा सर्वश्री आदिवासी फुड प्रोडक्ट्स, सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र के प्रदर्शन काउंटर थे।

मेरी दिल्ली उत्सव-2015

नारियल विकास बोर्ड ने सर्वश्री एनएनएस मीडिया ग्रूप, दिल्ली द्वारा 31 अक्टूबर से 2 नवंबर 2015 तक नई दिल्ली में पीतमपुरा के दिल्ली हाट में आयोजित नवं भाग मेरी दिल्ली उत्सव 2015 में भाग लिया। मेले का उद्घाटन श्रीमती अर्पिता बंसल, निदेशक, मुस्कान के के मेमोरियल ने किया। श्री शिवचरण गोयल, माननीय विधायक, मोती नगर, श्री जगदीश मुखी, भूतपूर्व विधायक एवं एनएनएस मीडिया के पदधारी सहित अन्य कई गणमान्य व्यक्ति उद्घाटन समारोह में उपस्थिति रहे।

मेले के साथ लगी प्रदर्शनी में बोर्ड ने अपने स्टाल में विविध ब्रैंडों के नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटेड नारियल पाउडर, नारियल दूध/दूध पाउडर/दूध क्रीम, नारियल अचार, जैम,

पैकेटबंद डाब पानी, सक्रियत कार्बन, खोपड़ी कोयला, दस्तकारियाँ और अन्य नारियल आधारित खाद्य पदार्थ एवं पेय, औद्योगिक और घरेलू उपयोगी चीज़ें प्रदर्शित किए। स्टाल में नारियल



दर्शक बोर्ड के स्टाल में उत्पादों के दैनिक उपयोगों के बारे में लोगों को अवगत कराया जा सके।

के बहुमुखी उपयोग और नारियल एवं नारियल उत्पादों की खूबियों को दर्शाने वाले पोस्टर भी लगाए गए और नारियल आधारित विविध मूल्यवर्धित उत्पादों पर निकाले गए प्रकाशन भी आगंतुकों को वितरित किए गए ताकि इन उत्पादों के स्वास्थ्यपरक और पौष्टिक मूल्यों के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके और नई दिल्ली जैसे मेट्रो शहरों के लोगों की बदलती जीवन शैली के अनुसार इन

बोर्ड के स्टाल में स्थानीय डीलर सर्वश्री एनजीओ प्रोडक्ट्स, नई दिल्ली के ज़रिए सर्वश्री केराटेक के मूल्यवर्धित उत्पादों की बिक्री भी हुई। तकरीबन 60000 लोग मेला देखने आए। नाविबो को सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। 2 नवंबर 2015 को रात 10.00 मेले का समापन हुआ।

कर्नाटक की नारियल उत्पादक कंपनियों की समीक्षा बैठक

कर्नाटक के चित्रदुर्ग में 19 नवंबर 2015 को नारियल उत्पादक कंपनियों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कल्पवृत्ता नारियल उत्पादक कंपनी के अध्यक्ष श्री रंगनाथ ने की तथा कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. टी आई मात्युकुट्टी निदेशक, नाविबो,

क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूर ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ मात्युकुट्टी ने नारियल उत्पादक कंपनियों एवं नारियल उत्पादक फेडरेशनों के अधिकतम सदस्यों की सहभागिता प्राप्त करने हेतु 75 दिनों का इक्विटी मोबिलाइसेशन अभियान शुरू करने के बारे में बताया। उन्होंने आगे सूचित किया कि नीरा

शीघ्र ही जारी करेंगे। अतः और अधिक मास्टर नीरा तकनीशियनों को प्रशिक्षित करना अत्यावश्यक है तथा उन्होंने प्रत्येक कंपनी को 20 प्रशिक्षणार्थियों को चुनने का अनुरोध भी किया।

श्री एस मंजुनाथ, क्षेत्रीय अधिकारी, कयर बोर्ड, बैंगलूर ने सहभागियों को संबोधित करते हुए कर्नाटक के सभी नारियल उत्पादक कंपनियों एवं नारियल उत्पादक फेडरेशनों के सदस्यों से कयर रेशा एवं कयर गूदे का उपयोग करने के लिए सहायता सुनिश्चित की। श्री



बैठक का दृश्य

शेषण्णा, नाबार्ड प्रतिनिधि ने नाबार्ड से किसान उत्पादक कंपनियों के लिए उपलब्ध विविध सहायताओं के बारे में बताया। श्री प्रसन्नकुमार, वरिष्ठ बागवानी सहायक निदेशक, होसादुर्गा ने राज्य बागवानी विभाग से नारियल केलिए

उपलब्ध विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। श्री हेमचंद्रा, उप निदेशक, नाविबो ने नारियल उत्पादक कंपनियों की प्रगति की समीक्षा की। सुश्री मृदुला के, तकनीकी अधिकारी तथा श्री रूपक, परियोजना प्रबंधक ने केरल की नारियल विभाग से नारियल केलिए

उपलब्ध विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। श्री हेमचंद्रा, उप निदेशक, नाविबो ने नारियल उत्पादक कंपनियों की प्रगति की समीक्षा की। सुश्री मृदुला के, तकनीकी अधिकारी तथा श्री रूपक, परियोजना प्रबंधक ने केरल की नारियल

उत्पादक कंपनियों की प्रगति के संबंध में बताया तथा सुश्री जगदीश प्रिया, खाद्य प्रसंस्करण इंजिनियर ने फ्लेवर्ड नारियल दूध के प्रसंस्करण और अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में बताया।

थाई प्रतिनिधिगण ने दक्षिण भारत का दौरा किया

थाईलैंड के सी पी ग्रूप के श्री खुनश्री तांगोइ के नेतृत्व में पाँच सदस्यों के थाई प्रतिनिधिगण ने नवंबर 2015 के तीसरे हफ्ते में तमिलनाडु एवं केरल के प्रमुख नारियल क्षेत्रों का दौरा किया। टीम ने

भी चर्चा की। श्री एम टी बालकृष्णन भाप्रसे (सेवानिवृत्त); अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक, इंकल ने केरल में नारियल प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने के अवसर एवं गुँजाइश प्रस्तुत की।

किसान उत्पादक संगठन, प्रगतिशील किसान, नारियल प्रक्रमणकर्ता, संभाव्य उद्यमियों, मशीन विनिर्माता तथा नाविबो के चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय के पदधारियों



बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी के जोस भाप्रसे थाई प्रतिनिधिगण के साथ चर्चा करते हुए

16 नवंबर 2015 को नारियल विकास बोर्ड मुख्यालय का दौरा किया तथा अध्यक्ष श्री टी के जोस भाप्रसे एवं अन्य वरिष्ठ पदधारियों के साथ चर्चा की। श्री टी के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष ने उनको भारत में नारियल खेती एवं उद्योग के संबंध में और यहाँ सीपी ग्रूप द्वारा भारतीय सहभागिता के साथ नारियल आधारित उद्योग स्थापित करने की गुँजाइश के बारे में संक्षिप्त रूप में बताया। टीम ने तिरुकोची, तिरूर, कुट्टाडी तथा पालक्काट नारियल उत्पादक कंपनियों के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारियों के साथ परिचर्चा की तथा उनकी गतिविधियों को नोट किया। उन्होंने एफआईसीसीआई, सीआईआई, केरल चेंबर ऑफ कोमर्स तथा इंकल जैसे विज्ञनस संवर्धन संगठनों के साथ



नारियल बाग में यंत्र के सहारे नारियल पेड़ पर चढ़ता थाई प्रतिनिधि

के साथ चर्चा की। टीम ने शक्ति डाब पानी पैकिंग इकाई तथा आसपास के नारियल बागों का दौरा किया। नारियल बागों में एफओसीसीटीओं ने पारंपरिक तरीके से और ताडारोहण यंत्र से नारियल पेड़ पर चढ़ने का निर्दर्शन किया।

कैरियोन पोकफंड थाईलैंड का सबसे बड़ी निजी कंपनी है परंतु कृषि क्षेत्र में अभी तक निवेश नहीं किया है। दोरे का उद्देश्य निजी नारियल उत्पादक इकाईयों की स्थापना की संभावनाएँ परखना या दक्षिण भारत की नारियल उत्पादक कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम शुरू करना है। नारियल थाई लैंड के 3,32,033 छोटे किसानों की महत्वपूर्ण नकदी फसल है जिसका देश के निर्यात आय में 0.11 योगदान है।

तमिलनाडु नारियल उत्पादक कंपनियों की चौथी समीक्षा बैठक संपन्न

तमिलनाडु नारियल उत्पादक कंपनियों की चौथी समीक्षा बैठक 19 नवंबर 2015 को उदुमलपेट में संपन्न हुई।

श्रीमती टी बालासुधाहरि, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई ने किसान उत्पादक संगठनों के गठन के लक्ष्य तथा सीपीएस, सीपीएफ, सीपीसी द्वारा पूँजी जमा करने की आवश्यकता के बारे में बताया। सभी नारियल उत्पादक कंपनियों को सूचित किया गया कि उनके अधीन कार्यरत फेडरेशनों के अधीन पर्याप्त नारियल पेड (80000 से एक लाख तक) होने पर ही उन्हें फेडरेशन के रूप में पंजीकृत किया जा सकता है। छ:



श्रीमती टी. बालासुधाहरि, उप निदेशक सीपीसी बैठक में सभा को संबोधित करती हुई

कंपनियों ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी को नियुक्त किया है।

सभी नारियल उत्पादक कंपनियों को नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए अनुरोध किया गया गया ताकि नीरा तकनीशियनों की कमी न हो जाए।

कुछ नारियल उत्पादक कंपनियों ने पारंपरिक पेषण यंत्र- चक्र से मिलावट रहित नारियल तेल बनाना, नारियल तेल संयंत्र तथा खुदरा बिक्री केंद्र की स्थापना, फ्लेवर्ड गुड, नारियल शक्कर एवं गुड बनाना, वर्जिन नारियल तेल उत्पादन एवं बायो टेक प्रयोगशाला की स्थापना जैसी भावी योजनाओं के बारे में बताया

नाविबो ने प्री रबि सम्मेलन 2015 में भाग लिया

नारियल विकास बोर्ड ने कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा खुर्द में 5 दिसंबर 2015 को आयोजित विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस एवं रबी पूर्व सम्मेलन में भाग लिया। डॉ प्रसन्नकुमार पटसाणी, साँसद, भुवनेश्वर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री शशिभूषण बेहरा, विधायक, जयदेव विधानमंडल, अन्य विशिष्ट व्यक्ति, वैज्ञानिक तथा विस्तारण कार्यकर्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। सम्मेलन के साथ आयोजित प्रदर्शनी में विभिन्न संस्थाओं की गतिविधियाँ, विभिन्न अभिकरणों के उत्पाद, जीवित नमूने, सम्प्यात्मक मृदाएँ, जैव उर्वरक, जैव संरोप, मिट्टी को पोषण समृद्ध बनाने की रीतियाँ, जैव खेती और अन्य संगत रीतियों का प्रदर्शन किया गया। श्री एन. साहु, जिलाधीश, खुर्दा, डॉ. पी जयशंकर, निदेशक,

भा.कृ.अ.प., सिफा आदि सम्मेलन में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में 700 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

बोर्ड ने नारियल ताड़ारोहण यंत्र, विभिन्न नारियल प्रजातियों के फल, वर्जिन नारियल तेल, वर्जिन नारियल कैप्सूल, डेसिकेटड नारियल, नारियल ज्यूस, नारियल जैम, स्क्वाश, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, दस्तकारियाँ आदि का प्रदर्शन किया। नारियल और नारियल उत्पाद, बोर्ड की योजनाएँ तथा कार्यक्रमों के संबंध में सूचनात्मक पोस्टर आदि प्रदर्शित किए गए। नाविबो में प्रदर्शित ताड़ारोहण यंत्र कई आंगतुकों को आकर्षित किया।

श्री ई अरावणी, उप निदेशक, नाविबो ने नाविबो योजनाएँ, नारियल खेती, नारियल

क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, ताड़ारोहण यंत्र की उपलब्धता, नारियल में मूल्य वर्धन आदि के बारे में सहभागियों को जानकारी दी।

‘भारतीय नारियल पत्रिका’ के वार्षिक चंदे का नवीनीकरण

यदि आप ने भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया है तो कृपया नवीनीकरण हेतु 40 रु. का मनीऑर्डर या अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड के नाम बना रेखांकित डिमांड ड्राफ्ट नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

अध्यक्ष,
नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन,
कोची - 682 011.

टीएमओसी की परियोजना अनुमोदन समिति की 46 वीं बैठक में 25.91 करोड़ रुपए की परियोजनाएँ मंजूर



श्री टी के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नाविबो बैठक को संबोधित करते हुए

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के जोस भाप्रसे की अध्यक्षता में कोची में संपन्न नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की परियोजना अनुमोदन समिति की 46 वीं बैठक में 4.51 करोड़ रुपए की सब्सिडी तथा 25.91 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ कुल 15 परियोजनाएँ मंजूर की गई।

बैठक में प्रतिदिन 4000 लीटर की क्षमता की एक नीरा प्रसंस्करण इकाई, प्रतिदिन 5000 नारियल प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त फ्लेवरेड नारियल ज्यूस इकाई, प्रतिदिन 50,000 नारियल प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त दो डेसिकेटड नारियल इकाइयाँ, प्रतिदिन 2,35,000 नारियल प्रसंस्करण क्षमतायुक्त तीन वर्जिन नारियल निर्माण इकाइयाँ, प्रतिदिन 3000 लीटर प्रसंस्करण क्षमतायुक्त एक नारियल पानी प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग इकाई, प्रतिदिन 10 मेट्रिक टन खोपड़ी कोयला प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त एक नारियल खोपड़ी कोयला विनिर्माण इकाई, प्रतिदिन 9 मेट्रिक टन सक्रियत कार्बन उत्पादन की क्षमतायुक्त दो सक्रियत कार्बन विनिर्माण इकाइयाँ, प्रतिदिन 20,000

नारियल प्रसंस्करण क्षमतायुक्त दो खोपरा ड्रायर इकाइयाँ तथा प्रति वर्ष 20 लाख नारियल प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त दो गोल खोपरा विनिर्माण इकाइयाँ मंजूर की गई।

केरल में प्रतिदिन 4000 लीटर नीरा के प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त एक नीरा प्रसंस्करण संयंत्र, प्रति दिन 5000 नारियल प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त एक वर्जिन नारियल तेल प्रसंस्करण इकाई और प्रति दिन 20,000 नारियल प्रसंस्करण की क्षमता वाली दो खोपरा ड्रायर को मंजूरी दी गई।

कर्नाटक में 50,000 नारियल प्रति दिन प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त नारियल पाउडर विनिर्माण इकाई और प्रति दिन 10 मेट्रिक टन खोपड़ी कोयला उत्पादन की क्षमतायुक्त एक नारियल खोपड़ी कोयला विनिर्माण इकाई के लिए मंजूरी दी गई।

तमिलनाडु में प्रतिदिन 5000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त एक नारियल पानी प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग इकाई, प्रतिदिन 2,30,000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त दो

वर्जिन नारियल तेल इकाइयाँ तथा प्रतिदिन 9 मेट्रिक टन सक्रियत कार्बन उत्पादन की क्षमतायुक्त दो सक्रियत कार्बन विनिर्माण इकाई मंजूर की गई। आँध्र प्रदेश में प्रति वर्ष 20 लाख नारियल प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त दो गोल खोपड़ा विनिर्माण इकाइयाँ मंजूर की गई।

डॉ. पी. विजयराज, वैज्ञानिक, सीएफटीआरआई, मैसूर, डॉ. उषामणि पी, एजीएम, नबार्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम, डॉ.अनिलकुमार आर, सहायक कृषि विपणन सलाहकार, डॉ.एमआई, कोची, श्री जी मैथ्यू, वरिष्ठ प्रबंधक, भारतीय ओवरसीस बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोची, श्री राजीव पी जॉर्ज, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो, कोची, डॉ. ए.के.नंदी, सचिव, नाविबो, कोची तथा श्री आर ज्ञानदेवन, उपनिदेशक, नाविबो, कोची बैठक में उपस्थित थे। विशेषज्ञ सदस्यों के रूप में डॉ.एम अरविंदाक्षन, भूतपूर्व अध्यक्ष नाविबो एवं डॉ.डी.एम वासुदेवन, प्राचार्य (सेवानिवृत्त) एआईएमएस, कोची बैठक में उपस्थित थे।

आँध्र प्रदेश की नारियल उत्पादक कंपनियों ने राज्य स्तरीय बैठक आयोजित की

आँध्र प्रदेश की नारियल उत्पादक कंपनियों की राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक 2 दिसंबर 2015 को आँध्र प्रदेश बागवानी आयुक्तालय के मिनि कोन्फ्रेन्स हॉल में संपन्न हुई। श्री चिरंजीव चौधरी आईएफएस, बागवानी आयुक्त ने बैठक की अध्यक्षता की। श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई, श्री आर जयनाथ, प्रभारी उप निदेशक, नाविबो, आँध्र प्रदेश, बागवानी विभाग के उप निदेशक, पंजीकृत तीन नारियल उत्पादक कंपनियों के अध्यक्ष एवं निदेशक मंडल के सदस्य और तीन आनेवाली कंपनियों के प्रतिनिधिगण ने बैठक में भाग लिए।

श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो ने तमिलनाडु में नारियल उत्पादक कंपनियों की गतिविधियों एवं प्रत्येक नारियल उत्पादक कंपनी की प्रगति की समीक्षा करने के लिए अपनाइ गई अनुवीक्षण प्रणाली पर बात की। नारियल

उत्पादक कंपनियों ने विज्ञनस प्लैन बनाए हैं तथा वर्जिन नारियल तेल, ब्रैंड तेल, फ्लेवर्ड गुड़, नारियल शक्कर आदि मूल्य वर्धित उत्पादों का विनिर्माण शुरू किया है। दो नारियल उत्पादक कंपनियों ने जैव खाद उत्पादन शुरू किया है। एक नारियल उत्पादक कंपनी ने मृदा परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित की है। इस अवसर पर नारियल उत्पादों की निर्यात संभावनाएँ विस्तार से बताया गया। वर्जिन नारियल तेल के निर्यात में पिछले वर्ष की तुलना में 500 प्रतिशत से अधिक वृद्धि दर्ज की गई। तमिलनाडु सरकार ने नीरा उतारने के लिए आबकारी अधिनियम का संशोधन कार्य शुरू किया है। उन नारियल उत्पादक कंपनियों को नीरा उतारने की मंजूरी देने का भी प्रस्ताव है जिन्होंने इक्विटी के रूप में दो करोड़ रुपए जुटाया है। उन्होंने निश्चित समय में लक्ष्य प्राप्ति के लिए कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

श्री आर.जयनाथ, प्रभारी उप निदेशक, नाविबो ने आँध्र प्रदेश में किसान उत्पादक समितियों की संभावनाओं तथा भावी कार्ययोजनाओं पर प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने नारियल उत्पादक समितियों की त्रिस्तरीय प्रणाली और नारियल क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों के बारे में विस्तृत विवरण दिया। वर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल, नारियल दूध/पाउडर, सिरका आदि के विनिर्माण के लिए एकीकृत प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना समय की माँग है। पूर्व गोदावरि जिले में मौजूदा क्षेत्र इकाइयों के लिए कच्चे माल की कमी है। सर्वश्री नोवील सीपीसी के अधिकार क्षेत्र में 15 क्षेत्र इकाइयाँ हैं। परिपक्व नारियल के रूप में /पूजा सामग्री के रूप में उपयोग हेतु या एकाध उद्यमियों या विक्रेताओं द्वारा गोल खोपरा विनिर्माण के लिए नारियल की आपूर्ति करने हेतु मौजूदा विपणन प्रणाली को बदलने की आवश्यकता है।



नारियल उत्पादक कंपनियों की समीक्षा बैठक-एक दृश्य

और किसान संगठनों को आँध्र प्रदेश के नारियल के एकत्रीकरण एवं विपणन का कार्य करना चाहिए। किसान उत्पादक संगठनों द्वारा पूर्व गोदावरि में गोल खोपरा विनिर्माण के लिए कम लागत में गोल खोपरा विनिर्माण अवसंरचनाओं की स्थापना दिसंबर-जनवरी के दौरान प्राप्त छोटे नारियल को उपयोग में लाने के लिए किसानों को सहायक होगा। इससे किसान तुड़ाई काल की चरम सीमा में भाव में जो गिरावट होती है उससे बच सकते हैं। सहभागियों को अन्य राज्यों के द्वारा अपनाई गई नारियल उत्पादक

कंपनियों की अनुवीक्षण प्रणाली के बारे में बताया गया। सभी नारियल उत्पादक कंपनियों को अपनी गतिविधियाँ फैक्ट शीट में रिपोर्ट करनी चाहिए।

सर्वश्री चिकाकोल सीपीसी तथा सर्वश्री नोवील सीपीसी द्वारा किसानों के ब्यौरे का डिजिटलीकरण शुरू किया गया है। सीपीएफ द्वारा नारियल नर्सरियों की स्थापना कार्य शीघ्र किया जाएगा। प्रत्येक किसान उत्पादक संगठन मातृवृक्ष पंजी का अनुरक्षण करेगी तथा प्रापण काल के दौरान अच्छी गुणवत्तायुक्त नारियलों से नर्सरियों स्थापित की जाएगी। इससे

बीजपौधों की कमी की समस्या का कुछ हद तक हल होगा। नारियल उत्पादक कंपनियों ने आँध्र प्रदेश सरकार से आबकारी अधिनियम के संशोधन के लिए अभिवेदन दिया है। उन्होंने बागवानी आयुक्त से अनुरोध किया कि प्रत्येक नारियल उत्पादक कंपनी के लिए लक्ष्य निर्धारित करें ताकि इस वित्तीय वर्ष के दौरान नारियल पेड़ बीमा योजना कार्यान्वित की जा सके।

सुश्री मरजाना बीगम के सी, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, हैदराबाद ने धन्यवाद समर्पण किया।

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय में प्रसंस्करित डाब पानी इन्क्युबेट किया गया

उद्यमी श्री ऐम एन वरदराजन द्वारा विकसित प्रसंस्करित डाब पानी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं तथा लघु पेय के शौकीन लोगों के लिए शीघ्र ही अच्छा विकल्प प्रदान करने वाला है।

तमिलनाडु विश्वविद्यालय के अग्रि बिज्ञनस निदेशालय के सहयोग के साथ उन्होंने डाब पानी को इस तरह प्रसंस्करित किया है कि सही तापमान में भंडारण करने से एक साल तक यह खराब नहीं होता है। उनके अनुसार नॉन थर्मल प्रसंस्करण तकनीक सूक्ष्मजीवाणुओं की सक्रियता कम करती है और साथ में नारियल पानी की कुदरती गुणों को बरकरार रखती है।

विश्वविद्यालय के कुलपति श्री के रामस्वामी ने कहा कि इस उत्पाद में कुछ भी नहीं मिलाया जाता है और इसलिए कुदरती है। श्री वरदराजन और उनकी

पत्नि श्रीमती सुजाता को ‘कोको फ्रेश’ को विकसित करने में डेढ़ साल से अधिक लगे। वर्ष 2014 के पहले छह महीने में मूल उत्पाद तैयार करके फिर 12 महीने उपभोक्ताओं एवं विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के सुझावों के अनुसार उत्पाद को बेहतर बनाया गया। श्री वरदराजन ने कहा कि



अधिक समय प्रसंस्करण के सही तरीके की खोज पर बिताया गया क्योंकि डाब पानी के कुदरती गुणों को बरकरार रखना था।

श्री आर मुरुगेशन, निदेशक, अग्रि बिसनस ने कहा कि सूक्ष्मजीवाणुओं का नाश करके अणुमुक्त परिस्थिति प्रदान करने में विश्वविद्यालय द्वारा समर्थन दिया गया क्योंकि उत्पाद लंबे समय तक खराब न होने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

श्री वरदराजन के अनुसार आदर्श संयंत्र में प्रतिदिन 5000 नारियल प्रसंस्करण की क्षमता होनी चाहिए। प्रति नारियल औसतन 250 मि.ली करके प्रतिदिन संयंत्र में 1250 लीटर डाब पानी का प्रसंस्करण किया जा सकता है। इससे 10 लोगों को सीधे और नारियल की आपूर्ति के लिए बागों में कार्य करने वाले 50 लोगों को परोक्ष रूप में रोजगार प्राप्त होगा।

नारियल मेला

नारियल विकास बोर्ड, प्रबीड़ फार्म, पालघर ने 29 नवंबर 2015 को पालघर के वसई विरार में नारियल मेले का आयोजन किया। माननीय लोकसभा सांसद एड्व. श्री चिंतामन वंगा ने माननीय विधायक श्री हितेंद्र ठाकुर, श्री विलास तारे, विपक्ष के भूतपूर्व मुख्य विप, विधान सभा, महाराष्ट्र श्री डोमनिक गोनसाल्वस, नाविबो निदेशक डॉ. टी.आई. मात्युकुट्टी एवं अन्य प्रतिनिधिगणों की समुपस्थिति में मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर नाविबो के पालघर स्थित प्रबीड़ फार्म में उत्पादित 5000 बीजपौधों का वितरण किया गया।

अपने उद्घाटन भाषण में माननीय सांसद श्री चिंतामन वंगा ने नाविबो के योग से वीवीसीएमसी के प्रयासों का फायदा उठाने के लिए कहा। श्री हितेंद्र ठाकुर ने बोर्ड से अनुरोध किया कि वीवीसीएमसी को उचित मार्गदर्शन दें। कार्यक्रम के भाग स्वरूप तकनीकी सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें



नारियल मेले में बोर्ड का स्टाल

नाविबो निदेशक डॉ. टी.आई. मात्युकुट्टी ने महाराष्ट्र में नारियल खेती तथा मूल्य वर्धन विशेषकर नीरा और नए वेगन दूध के रूप में उभरते नारियल दूध की संभावनाओं पर बात की। महाराष्ट्र के रत्नगिरि जिले के भाट्ये में स्थित बाला साहब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ के क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र के प्रभारी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आर जी खांडेकर ने नारियल खेती प्रौद्योगिकियों पर बात की। कार्यक्रम के साथ साथ एक प्रदर्शनी भी आयोजित

की गई थी जिसमें नाविबो, राज्य कृषि विभाग तथा विवा सेंटर फोर एड्वान्स रिसर्च एंड डेवलपमेन्ट, विरार ने अपने उत्पादों एवं सेवाओं का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में लगभग 1500 किसानों ने भाग लिया। बोर्ड ने महाराष्ट्र के नारियल किसानों एवं उपभोक्ताओं के हित में नारियल में मूल्य वर्धन की बड़ी संभावनाओं का निर्दर्शन किया। मेले का आयोजन वसाइ विरार सिटी मुनिसिपल कोर्पोरेशन, कृषि उत्पाद विपणन समिति, वसई तथा नारियल विकास बोर्ड, विरार, पालघर जिला, महाराष्ट्र के सहयोग से किया गया।

सेवानिवृत्ति



श्रीमती सी पी मणि अधिवर्षिता प्राप्ति पर 30 नवंबर 2015 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुई। उन्होंने बोर्ड में 27 वर्षों से अधिक कार्य किया था।



श्री के के जयप्रसाद, अधिवर्षिता प्राप्ति पर 30 नवंबर 2015 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। वे बोर्ड में सितंबर 1994 से कार्यरत थे।

नारियल के मूल्य वर्धन पर तीव्र चर्चा सत्र संपन्न

दिनांक 26 नवंबर 2015 को कंगयम में नारियल तेल पेषक और थोक आपूर्तिकर्ताओं के लिए नारियल में मूल्य वर्धन पर तीव्र परिचर्चा आयोजित की गई। नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के निदेशक श्री लुम्हार ओबेद ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने तिरुप्पुर जिले के कंगयम में नारियल खेती की संभावनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कंगयम में अनुसंधान संस्थान, शोधकर्ता, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी उपलब्ध हैं। कंगयम से अन्य जगहों को आना जाना आसान है और मौसम भी अच्छा है। उन्होंने नारियल तेल पेषक समूह को नारियल में मूल्य वर्धन करने के लिए आह्वान किया।

श्रीमती टी. बालसुधाहरि, उप निदेशक, नाविबो, चेन्नई ने नारियल में उत्पाद विविधीकरण और मूल्य वर्धन की आवश्यकता, विशेषतया वर्तमान परिस्थिति में जब नारियल और खोपरे के भाव में घटबढ़ रहता है ब्रैंड नारियल तेल के भाव स्थिर रहता है, के बारे में बात की। उन्होंने कंगयम के नारियल तेल पेषकों से भाव में स्थिरता लाने के लिए खुद पैकटबंद नारियल तेल उत्पादन शुरू करने के लिए अनुरोध किया जो रिटेल पैकों में मिलावट रहित ब्रैंड नारियल तेल बनाने के लिए थोक में नारियल तेल बेच रहे हैं ऐसा करने से उन्हें अपने उत्पादों का एमआरपी निर्धारित करने का हक मिलेगा। जिस उत्पाद का एमआरपी निर्धारित किया गया है उसके भाव में गिरावट नहीं आती है इसलिए मूल्यवर्धन और ब्रैंडिंग



श्रीमती टी. बालसुधाहरि, उप निदेशक, नाविबो, चेन्नई भाषण देती हुई

की आवश्यकता है। उन्होंने खोपरा/तेल आधारित उद्योग के बदले प्रसंस्करित आहार आधारित नारियल उद्योग की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने नारियल से अन्य मूल्य वर्धित उत्पाद जैसेकि वर्जिन नारियल तेल, पैकटबंद डाब पानी, नारियल दूध, नारियल क्रीम, फ्लेवर्ड नारियल दूध, स्प्रे ड्राइड नारियल दूध पाउडर, डेसिकेटड नारियल, नारियल खोपड़ी पाउडर, सक्रियत कार्बन, नीरा तथा नीरा आधारित उत्पादों के बारे में बात की। उन्होंने नारियल तेल पेषकों को बेहतर आय प्राप्ति के लिए अपने एसोसियेशन के छत्र तत्त्व विभिन्न ग्रूप बनाकर निर्धारित एमआरपी युक्त नारियल उत्पाद बनाने के लिए आह्वान किया। उन्होंने सूचित किया कि मूल्य वर्धित उत्पादों से संबंधित परियोजनाओं के लिए नाविबो की टीएमओसी योजना के अधीन 50 लाख रुपए तक 25 प्रतिशत बैंक इंडियन क्रेडिट लिंकड पूँजी निवेश सब्सिडी उपलब्ध है।

सुश्री जगदीश प्रिया, फुड टेक्नलोजिस्ट ने विभिन्न नारियल आधारित उत्पादों के निमार्ण के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया।

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था में प्रति व्यक्ति 2500 रुपए के शुल्क पर सिरका एवं लेमनेड, स्प्रे ड्राइड नारियल दूध पाउडर, डेसिकेटड पाउडर, फ्लेवर्ड नारियल दूध आदि बनाने का तकनीकी प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। श्री राम सुब्रह्मण्यन, ढीड़ी अग्री बिज़नस, इरोड ने नारियल पेषकों को इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए कहा और नारियल उद्योग की व्यवहार्यता सुधारने हेतु उनको सामना करना पड़ रही समस्याओं और सुझाव देने के लिए अनुरोध किया।

श्री गुणशेखरन, एडीए, कृषि विपणन ने सूचित किया कि कंगयम में 240 उत्पादों के लिए अग्रमार्क प्रमाणीकरण दिया जाता है। उन्होंने अग्रमार्क प्रमाणीकरण प्राप्त करने की सरल गतिविधियों के बारे में बताया। श्री वेंकटेश, टी एंड आई ग्लोबल लिमिटेड ने विभिन्न नारियल आधारित उत्पादों के उत्पादन के लिए उपलब्ध मशीनरियों के बारे में बताया। श्री मणिकेल, एओ, अग्री बिज़नस, कंगयम ने सभा का स्वागत किया और श्री परमशिवम, क्षेत्र अधिकारी, नाविबो, चेन्नई ने धन्यवाद समर्पित किया। कंगयम के लगभग 50 नारियल तेल पेषकों ने बेठक में भाग लिया।

बाज़ार समीक्षा

सितंबर 2015

मुख्यांश

- सितंबर 2015 के दौरान सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।
- सितंबर 2015 के दौरान नारियल तेल और खोपरा के अंतर्राष्ट्रीय भाव में थोड़ा सा घटाव का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में सितंबर 2015 के दौरान नारियल, खोपरा तथा नारियल तेल के भाव में हल्के घटाव का रुख रहा।

नारियल तेल

रिपोर्टधीन महीने के दौरान कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 12,200 रुपए पर खुला और 8 सितंबर को घटकर 12,100 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 800 रुपए के कुल घाटे पर 11,400 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष्टा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11,700 रुपए पर खुला और घटकर 14 सितंबर को 11,400 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल कुल 700 रुपए के घाटे के साथ 11,000 रुपए पर बंद हुआ। कोषिककोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 12,800 रुपए पर खुला और घटकर 9 सितंबर को 12,700 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर 800 रुपए के कुल घाटे पर 12000 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 11,842 रुपए था

और आलप्पुष्टा बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 11,395 रुपए तथा कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 12,392 रुपए था जो पिछले महीने से तीन से पाँच प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने से 24 से 26 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में खोपरे का मासिक औसतन भाव 7437 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 2 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 29 प्रतिशत था। आन्ध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 7112 रुपए था। अंबाजीपेटा का मासिक औसतन भाव पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत कम था।

पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 8,500 रुपए रहा। भाव घटकर 8 को 8,400 रुपए हुआ और उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 800 रुपए के कुल घाटे पर 7,700 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष्टा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति किंवटल 8,250 रुपए पर खुला और घटकर 8 तारीख को 8,205 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 600 रुपए के कुल घाटे पर 7650 रुपए पर बंद हुआ। कोषिककोट बाज़ार में आफिस पास खोपरे का भाव प्रति किंवटल 8100 रुपए पर खुलकर 3 को बढ़कर 8150 रुपए हुआ और फिर घटकर 8 तारीख को 8100 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 500 रुपए के कुल घाटे पर 7600 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोच्ची बाज़ार में प्रति किंवटल 8142 रुपए, आलप्पुष्टा बाज़ार में 8016 रुपए तथा कोषिककोट

बाज़ार में प्रति किंवटल 7850 रुपए रहा जो पिछले महीने से 4 से 5 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 23 से 27 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में खोपरे का मासिक औसतन भाव 7437 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 2 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 29 प्रतिशत था। आन्ध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 7112 रुपए था। अंबाजीपेटा का मासिक औसतन भाव पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत कम था।

खाद्य खोपरा

कोषिककोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 13863 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 26 प्रतिशत कम था।

गोल खोपरा

कोषिककोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 12352 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 28 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्पुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 12171 रुपए था। यह पिछले महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत

तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 29 प्रतिशत कम था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 10,775 रुपए था जो पिछले वर्ष इसी महीने से 7 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 37 प्रतिशत कम था।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाजार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 10,571 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत कम था।

नारियल

नेदुमंगड़ बाजार में छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 11375 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत कम था।

मुख्यांश

- अक्तूबर 2015 के दौरान देश के सभी प्रमुख बाजारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।
- अक्तूबर 2015 के दौरान नारियल तेल तथा खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाजारों में अक्तूबर 2015 के दौरान नारियल, खोपरा तथा नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोची बाजार में नारियल तेल का भाव प्रति

अरसिकेरे एपीएमसी बाजार में छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 10,990 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम था। महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम था।

बैंगलूरु एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 15000 रुपए था जो महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था। मैंगलूरु एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 15827 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम था।

डाब

मद्दूर एपीएमसी बाजार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल

10000 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम था।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव (सीआईएफ रोटरडैम) प्रति मेर्ट्रिक टन 984 यूएस \$ था जो पिछले महीने की अपेक्षा सात प्रतिशत और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 16 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेर्ट्रिक टन 685 यूएस \$ था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस में सितंबर 2015 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेर्ट्रिक टन 952 यूएस \$ और इंडोनेशिया में 1014 यूएस \$ था। सितंबर 2015 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल (आरबीडी) और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेर्ट्रिक टन क्रमशः 506 यूएस \$, 763 यूएस \$ और 716 यूएस \$ था।

अक्तूबर 2015

किंवटल 11,400 रुपए पर खुला और 9 तारीख को घटकर 11,300 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर 800 रुपए के घाटे पर 10,600 रुपए पर बंद हुआ। रिपोर्टाधीन महीने के दौरान आलपुष्टा बाजार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11000 रुपए पर खुला और घटकर 3 तारीख को 10900 रुपए हुआ और फिर घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 600 रुपए के घाटे पर 10,400 रुपए पर बंद हुआ। कोषिककोट बाजार में नारियल तेल का भाव जो प्रति किंवटल 11,800 रुपए पर

खुला था घटकर 5 तारीख को 11,600 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 900 रुपए के घाटे पर 10,900 रुपए पर बंद हुआ। कोची बाजार में मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 11,058 रुपए आलपुष्टा बाजार में प्रति किंवटल 10,600 रुपए था और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 11476 रुपए था जो पिछले महीने से 7 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 26 प्रतिशत से 29 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाजार में मासिक औसतन भाव प्रति

किंवटल 9705 रुपए था जो पिछले महीने से 5 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने से 32 प्रतिशत कम था।

पेषण खोपरा

कोच्ची बाजार में एफएक्यू खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 7700 रुपए रहा। भाव घटकर 8 को 7355 रुपए हुआ और उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 800 रुपए के कुल घाटे पर 6900 रुपए पर बंद हुआ। आलपुष्ठा बाजार में राशि खोपरे का भाव प्रति किंवटल 7650 रुपए पर खुला और घटकर 7 तारीख को 7600 रुपए हुआ और 13 तारीख तक उसी भाव पर स्थिर रहा। 14 को भाव फिर घटकर 7550 रुपए हुआ और उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 450 रुपए के कुल घाटे पर 7200 रुपए पर बंद हुआ। कोषिककोट बाजार में आफिस पास खोपरे का भाव प्रति किंवटल 7500 रुपए पर खुला और बढ़कर 7 तारीख को 7600 रुपए हुआ और 12 तारीख तक स्थिर रहा। 13 तारीख को भाव घटकर 7550 रुपए हुआ तथा उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 300 रुपए के कुल घाटे पर 7200 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोच्ची बाजार में प्रति किंवटल 7344 रुपए, आलपुष्ठा बाजार में 7396 रुपए तथा कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 7458 रुपए रहा जो पिछले महीने से 5 से 10 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 28 से 29 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाजार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव 7211 रुपए था जो पिछले महीने

की अपेक्षा 3 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 29 प्रतिशत कम था। अन्न प्रदेश के अंबाजीपेटा बाजार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 6815 रुपए था। अंबाजीपेटा का मासिक औसतन भाव पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत कम था।

खाद्य खोपरा

कोषिककोट बाजार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 14920 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 8 प्रतिशत अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 26 प्रतिशत कम था।

गोल खोपरा

कोषिककोट बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 13270 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के तिप्पुर एपीएमसी बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 12433 रुपए था। यह पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 25 प्रतिशत कम था। अरसिकरे बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 10187 रुपए था जो पिछले महीने से 5 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 30 प्रतिशत कम था।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाजार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 9408 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत कम था।

नारियल

नेहुमंगाड़ बाजार में छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 10593 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 31 प्रतिशत कम था।

अरसिकरे एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 9222 रुपए रिकार्ड किया गया था जो पिछले महीने की अपेक्षा 17 प्रतिशत और पछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 22 प्रतिशत कम था।

बैंगलूर एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार 16,074 रुपए था जो महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक था।

मैंगलूर एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 13889 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 17 प्रतिशत कम था।

डाब

मदूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10037 रुपए था जो पिछले महीने और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक था।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव

(सीआई एफ रोटरडैम) प्रति मेट्रिक टन 1096 यूएस \$ था जो पिछले महीने की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 712 यूएस \$ था जो पिछले महीने की तुलना में 4 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस में अक्टूबर 2015 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1044 यूएस \$ और इंडोनेशिया में 1070 यूएस \$ था। अक्टूबर 2015 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 575 यूएस \$, 878 यूएस \$ और 733 यूएस \$ था।

नवंबर 2015

मुख्यांश

- नवंबर 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में गिरावट का रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में नवंबर 2015 के दौरान नारियल तेल और खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में थोड़ा गिरावट का रुख रहा।

नवंबर 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में खोपरा और नारियल तेल के भाव में गिरावट का रुख रहा जबकि नारियल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 10,900 रुपए पर खुला जो 3 नवंबर को घटकर 10,500 रुपए हुआ और फिर घटाव का रुख दर्शाते हुए 12 नवंबर को 10,200 रुपए पर पहुँचा। नवंबर 14 को भाव बढ़कर 10,300 रुपए हुआ और लगभग वही रुख दर्शाते हुए प्रति किंवटल 400 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 10,500 रुपए पर बंद हुआ। आलपुष्ठा बाज़ार में नारियल

तेल का भाव प्रति किंवटल 10,400 रुपए पर खुलकर गिरावट का रुख दिखाकर 14 नवंबर को 9,700 रुपए पर पहुँचा। तत्पश्चात् भाव थोड़ा बढ़कर 9,800 रुपए हुआ और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 1,400 रुपए के कुल घाटे के साथ 9,000 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 10,900 रुपए पर खुला और 11 नवंबर को घट कर प्रति किंवटल 10,800 रुपए पहुँचा। तत्पश्चात् मिश्रित रुख दर्शाकर बिना कोई बदलाव के 10,900 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 10,452 रुपए, आलपुष्ठा बाज़ार में प्रति किंवटल 9,912 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति किंवटल 10,896 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से 5 से 6 प्रतिशत और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 28 से 30 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 8,921 रुपए था जो पिछले महीने से 8

प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 31 प्रतिशत कम था।

पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति किंवटल 7,200 रुपए पर खुलकर घटाव का रुख दिखाकर 12 को 6,650 रुपए पहुँचा। तत्पश्चात् 14 को मिश्रित रुख दिखाकर 6,750 रुपए पहुँचा और प्रति किंवटल 350 रुपए के कुल घाटे के साथ 6,850 रुपए पर बंद हुआ। आलपुष्ठा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति किंवटल 7,200 रुपए पर खुलकर समान रुख दर्शाते हुए प्रति किंवटल 250 रुपए के कुल घाटे के साथ 6,950 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे का भाव प्रति किंवटल 7,200 रुपए पर खुलकर मिश्रित रुख दिखाते हुए बिना कोई घट-बढ़ के 7,200 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 6,841 रुपए और आलपुष्ठा बाज़ार में प्रति किंवटल 6,954 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति

किंवटल 7,183 रुपए रहा जो पिछले महीने से क्रमशः 4 और 7 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के भाव से क्रमशः 28 और 31 प्रतिशत कम था।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 6,796 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 26 प्रतिशत कम था। आंध्रा प्रदेश के अंबाजीपेटा बाजार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 6,488 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 5 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के भाव से 26 प्रतिशत कम था।

खाद्य खोपरा

कोषिककोट बाजार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 13,754 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 8 प्रतिशत और पिछले साल के इसी महीने के भाव से 26 प्रतिशत कम था।

गोल खोपरा

कोषिककोट बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 11,874 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 28 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तित्पूर एपीएमसी बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 11,936 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत और पिछले वर्ष के इसी महीने की

अपेक्षा 16 प्रतिशत कम था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाजार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति किंवटल 10,428 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 29 प्रतिशत कम था।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाजार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 9,491 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत कम था।

नारियल

नेढुमंगाड़ बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 11,500 रुपए था जो पिछले महीने से 9 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 28 प्रतिशत कम था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 10,578 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 15 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम था।

बंगलुरु एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 16,500 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत अधिक

था। मैंगलूर एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 18,000 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 30 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

डाब

कर्नाटक के मद्दर एपीएमसी बाजार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हजार फल 10,040 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत कम था।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाजार में नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1,060 यूएस \$ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन यूएस 708 \$ था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस और इंडोनेशिया में नवंबर 2015 के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1,038 यूएस \$ था। नवंबर 2015 महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 549 यूएस \$, 778 यूएस \$ और 713 यूएस \$ था।

बाजार भाव

सितंबर 2015

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा			गोल खोपरा		सुखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)									
	कोची	आलप्पुड़ा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएसव्यू)	आलप्पुड़ा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषि वकोट	कोषि वकोट	तिप्पूर	बैंगलूरू	अरसिकरे	कोषि वकोट	नेडुमंगाड़	अरसिकरे	बैंगलूरू	मैलूर (प्रेड-1)	
06.09.15	12200	11700	12800	10727	8500	8250	8138	7660	7460	13625	12250	12920	14500	11194	10800	10750	11250	15000	16000	
13.09.15	12000	11700	12633	10300	8300	8220	7992	7417	7400	14000	12525	12600	14500	11119	10800	11500	11300	15000	16000	
20.09.15	11833	11350	12400	10189	8133	8025	7850	7408	7317	13975	12467	12285	13750	11054	10550	11500	10550	15000	15250	
27.09.15	11600	11300	12000	9989	7900	7950	7600	7317	6633	13900	12300	11467	13750	10183	10300	11500	10833	15000	16000	
30.09.15	11467	11000	12000	9878	7767	7650	7600	7400	6500	13617	12000	11242	13750	10019	10300	11500	10800	15000	16000	
आौसत	11820	11410	12367	10216	8120	8019	7836	7440	7062	13823	12308	12103	14050	10714	10550	11350	10947	15000	15850	

अक्टूबर 2015

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा			गोल खोपरा		सुखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)									
	कोची	आलप्पुड़ा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएसव्यू)	आलप्पुड़ा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषि वकोट	कोषि वकोट	तिप्पूर	बैंगलूरू	अरसिकरे	कोषि वकोट	नेडुमंगाड़	अरसिकरे	बैंगलूरू	मैलूर (प्रेड-1)	
04.10.15	11400	10950	11800	9967	7700	7650	7500	7217	6500	14100	12500	11533	-	10077	10300	11000	11000	15000	16000	
11.10.15	11367	10883	11600	9978	7609	7600	7567	7333	6583	15233	13333	11751	-	10077	10150	11500	11500	15833	15000	
18.10.15	11050	10617	11600	9711	7333	7458	7517	7225	6933	14633	13583	12560	-	10290	9933	11550	11250	16083	15000	
25.10.15	10825	10350	11420	9589	7150	7175	7450	7233	6900	15240	13350	13175	-	10186	9500	11500	12000	16417	15000	
31.10.15	10800	10350	11167	9411	7100	7192	7283	7050	7000	14900	13083	12967	14000	10251	9333	11500	11250	16500	17000	
आौसत	11058	10600	11476	9705	7344	7396	7458	7211	6815	14920	13270	12433	14000	10187	9408	10593	9222	16074	13889	

नवंबर 2015

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा			गोल खोपरा		सुखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)									
	कोची	आलप्पुड़ा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएसव्यू)	आलप्पुड़ा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषि वकोट	कोषि वकोट	तिप्पूर	बैंगलूरू	अरसिकरे	कोषि वकोट	नेडुमंगाड़	अरसिकरे	बैंगलूरू	मैलूर (प्रेड-1)	
08.11.15	10413	9866	10892	8916	6813	6836	7178	6788	6472	13752	11855	11983	14000	10444	9531	11500	10546	16500	18000	
15.11.15	10250	9800	10833	8733	6667	6725	7033	6667	6600	13650	11675	11917	14000	10279	9233	11500	10539	16500	18000	
22.11.15	10400	9717	10883	9045	6850	6767	7175	6792	6300	13483	11533	12067	14000	10587	9633	11500	10300	16500	18000	
28.11.15	10567	10000	10967	8978	6917	6975	7325	6917	6500	14092	12267	12000	14000	10532	9833	11500	10900	16500	18000	
30.11.15	10500	9900	10900	8900	6850	6950	7300	6800	6500	14800	13250	12100	14000	10219	9700	11500	10020	16500	18000	
आौसत	10452	9912	10896	8921	6841	6954	7183	6796	6488	13754	11874	11936	14000	10428	9491	11500	10578	16500	18000	

स्रोत

- कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2
- कोषिकोट : 'मातृभूमि'
- आलप्पुड़ा : 'मलयाला मनोरमा'
- अरसिकरे : ए पी एम सी, अरसिकरे
- कोषिकोट बाजार में 'ऑफीस पास' खोपरे का और आलप्पुड़ा बाजार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव
- सौ.न. : सोदा नहीं